युवा उत्सव 2019

जिलाधीश द्वारा पुरस्कृत

विभिन्न विधाओं में पुरस्कृत छात्र-छात्राएं

कु. आयुषी गुप्ता
एम.ए. राजनीति विज्ञान

कु. अर्मित खण्डेलवाल
बी.एस.सी. भाग-1

कु. सपना साहू
बी.एस.सी. भाग-3

पिण्टू यादव
बी.ए. भाग-2

जयेन्द्र साहू
बी.ए. भाग-2

देवेन्द्र कश्यप
बी.ए. भाग-3

सर्वश्रेष्ठ कैडेट (एन.सी.सी.)

विरेन्द्र कुमार खाण्डे
Sr. Under Officer
Reg. No. CG/SD/17/A/665190
एम.ए. हिन्दी साहित्य

राखी कौशिक
Jr. Under Officer
Reg. No. CG/SW/17/A/665196
बी.ए. भाग-3

सर्वश्रेष्ठ स्वयंसेवक (एन.एस.एस.)

कु. संध्या उईके
बी.एस.सी. भाग-3
(बायो समूह)

अभय गुप्ता
बी.काम. भाग-3
एन.एस.एस. कैंपस
एंबेस्डर के रूप में सर्वश्रेष्ठ
स्वयं सेवक

प्रकाशक
प्राचार्य, शास. जे.पी.वर्मा स्नातकोत्तर कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, बिलासपुर
Web : www.gjpvpgc.in e-mail : gpgacc.bsp@gmail.com

Printer : Shri Mahamaya, BSP 9893000946

महाविद्यालयीन पत्रिका 2019-20

समग्र

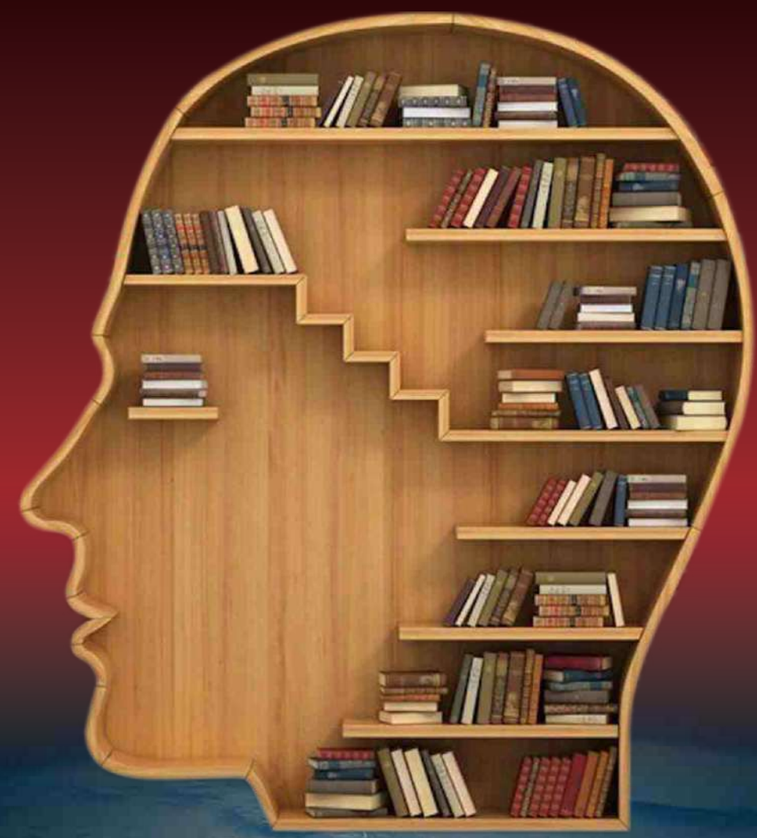

शासकीय जमुना प्रसाद वर्मा स्नातकोत्तर कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय

बिलासपुर (छ.ग.)

समग्र

महाविद्यालयीन पत्रिका 2019-20

★

:: **प्रकाशन प्रकोष्ठ** ::

डॉ. श्रीमती ज्योति रानी सिंह

प्राचार्य, संरक्षक एवं प्रधान संपादक

★

:: **प्रकाशन प्रबंधन** ::

डॉ. श्रीमती दीपशिखा शुक्ला

★

:: **संपादक** ::

डॉ. जयश्री शुक्ल

:: **सम्पादन सहयोग** ::

डॉ. श्रीमती जया अग्रवाल

डॉ. श्रीमती मंजुला पाण्डेय

डॉ. श्रीमती फेदोरा बरवा

डॉ. श्रीमती प्रियंका तिवारी

डॉ. श्रीमती रंजू गुप्ता

शासकीय जमुना प्रसाद वर्मा

स्नातकोत्तर कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय

बिलासपुर (छ.ग.)

नैक द्वारा प्रत्यायित 'A' ग्रेड

Web. : www.gjpvpgc.in

e-mail : gpgacc.bsp@gmail.com

Phone : 07752-228225

भूपेश बघेल
मुख्यमंत्री

Bhupesh Baghel
CHIEF MINISTER

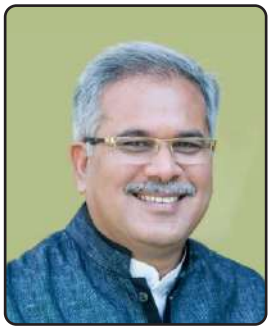

मंत्रालय, महानदी भवन
अटल नगर, रायपुर, 492002, छत्तीसगढ़
फोन: +91 (771) 2221000, 2221001
ई–मेल : cmcg@nic.in

Mantralaya, Mahanadi Bhawan,
Atal Nagar, Raipur, 492002, Chhattisgarh
Ph.: +91 (771) 2221000, 2221001
E-mail : cmcg@nic.in

Do.No. 1753 Date : 20/01/2020

शुभकामना संदेश

मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्न्ता हुई कि शासकीय जमुना प्रसाद वर्मा स्नातकोत्तर कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, बिलासपुर द्वारा महाविद्यालयीन वार्षिक पत्रिका 'समग्र' 2019-20 का प्रकाशन किया जा रहा है। छात्र-छत्राओं में अभिव्यक्ति का कौशल एवं व्यक्तित्व विकास के लिए इस प्रकार की पत्रिकाएं महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती हैं। पत्रिका के माध्यम से महाविद्यालय की शैक्षणिक गतिविधियों और विशेषताओं की जानकारियाँ भी लोगों तक पहुँचती हैं। नव वर्ष की किरण के साथ महाविद्यालय नयी ऊँचाइयों को प्राप्त करे।

इन्ही शुभकामनाओं के साथ 'समग्र' की सफलता के लिए मेरी ओर से हार्दिक शुभकानाएं..।

(भूपेश बघेल)
मुख्यमंत्री
छत्तीसगढ़ शासन

प्रति,

प्राचार्य, शासकीय जे.पी. वर्मा स्नातकोत्तर कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय,
बिलासपुर, जिला-बिलासपुर (छ.ग.)
मो.नं. 99811-38376

ताम्रध्वज साहू
मंत्री
लोक निर्माण, गृह, जेल, धार्मिक न्यास एवं धर्मस्व, पर्यटन
छत्तीसगढ़

निवास : सी – 3, सिविल लाईन, रायपुर (छ.ग.)
दूरभाष : 0771–2445153, फैक्स 2445561
मंत्रालय : एम–3/8, महानदी भवन
नवा रायपुर अटल नगर
दूरभाष : 0771– 2510226, फैक्स 2221226
दुर्ग नि. : मीनाक्षी नगर, बोरसी रोड, दुर्ग (छ.ग.)
दूरभाष : 0788–2340999

क्रमांक 8676/मंत्री/2019

रायपुर, दिनांक 22/01/2020

"शुभकामना –संदेश"

बड़े ही प्रसन्नता का विषय है कि शासकीय जमुना प्रसाद वर्मा स्नात्कोत्तर कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, बिलासपुर द्वारा महाविद्यालयीन पत्रिका "समग्र" 2019–2020 का प्रकाशन किया जा रहा है ।

आशा है पत्रिका अपने नाम के अनुरूप महाविद्यालय में अध्ययनरत विद्यार्थियों के व्यक्तित्व निर्माण में अपनी अहम भूमिका अदा करेगी।

पत्रिका "समग्र" की सफलता के लिए महाविद्यालय परिवार को मेरी ओर से हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं ।

भवदीय

21.01.20

(ताम्रध्वज साहू)

डॉ. ज्योति रानी सिंह,
प्राचार्य,
शासकीय जे.पी. वर्मा स्नातकोत्तर
कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, बिलासपुर (छ.ग.)

गुरू रूद्र कुमार
मंत्री
छत्तीसगढ़ शासन
लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी एवं ग्रामोद्योग विभाग

कार्यालय M-2/13,
मंत्रालय, महानदी भवन
नवा रायपुर अटल नगर,
रायपुर - 492002
दूरभाष : 0771-2510906
0771-2221106 (फै.)
निवास कार्या. : 0771-2420707
0771-2434455 (फै.)
ई-मेल : cgministerphegram@gmail.com
gururudraku@gmail.com

क्रमांक 38 / लो.स्वा.यां.ग्रामो.वि. / 2019

रायपुर, दिनांक : 14/01/2020

संदेश

अत्यंत हर्ष का विषय है कि शासकीय जमुना प्रसाद वर्मा स्नातकोत्तर कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, बिलासपुर द्वारा अपने उत्तरदायित्वों के निर्वहन में अध्ययन अध्यापन के साथ–साथ विद्यार्थियों की साहित्यिक सृजनात्मक अभिरूचि एवं क्षमता के विकास हेतु वार्षिक पत्रिका "समग्र" 2019–20 का प्रकाशन किया जा रहा है। पत्रिका के प्रकाशन से छात्र/छात्राओं की विचार शक्ति, ज्ञान और विवेक में समृद्धि होगी तथा बौद्धिक एवं व्यक्तित्व विकास स्वर्णिम आयाम को प्राप्त होगा।

मेरी ओर से पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिये हार्दिक शुभकामनाएँ ...

(गुरू रूद्र कुमार)

प्रति,
प्राचार्य
शास. जे.पी. वर्मा स्नातकोत्तर
कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय,
बिलासपुर (छ.ग.)

Prof. G.D. Sharma
Vice-Chancellor
ATAL BIHARI VAJPAYEE VISHWAVIDYALAYA
Bilaspur (C.G.) 495001
Former Vice-Chancellor, Nagaland University (Central) &
Former Pro-Vice-Chancellor, Assam University (Central)

प्रो. जी. डी. शर्मा
कुलपति
अटल बिहारी बाजपेयी विश्वविद्यालय
बिलासपुर (छ.ग.) 495001
पूर्व कुलपति, नागालैण्ड विश्वविद्यालय (केन्द्रीय) एवं
पूर्व सह-कुलपति असम विश्वविद्यालय (केन्द्रीय)

क्रमांक 2510/नि.स./2020 बिलासपुर, दिनांक 22/01/2020

संदेश

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि ''शासकीय जमुना प्रसाद वर्मा कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, बिलासपुर (छ.ग.) प्रतिवर्ष की भांति इस बार भी महाविद्यालयीन पत्रिका **''समग्र''** का प्रकाशन कर रहा है।

मैं, महाविद्यालय के छात्र–छात्राओं तथा अध्यापक–गण द्वारा किये जा रहे इस प्रयास की सराहना करता हूं । वार्षिक पत्रिका महाविद्यालय की उपलब्धियों का आईना होता है । यह विद्यार्थियों के चिंतन एवं सृजन क्षमताओं की अभिव्यक्ति का एक सशक्त माध्यम है । मुझे विश्वास है कि इस पत्रिका के माध्यम से छात्र–छात्रायें भविष्य में आने वाली कठिनाईयों को विवेकपूर्वक समझकर समाधान कर ज्ञान में वृद्धि कर प्रेरणादायी सिद्ध होगी।

महाविद्यालयीन वार्षिक पत्रिका **''समग्र''** के प्रकाशन के लिए मेरे और विश्वविद्यालय की तरफ से महाविद्यालय परिवार को हार्दिक शुभकामनाएँ ।

शुभकामनाओं सहित .....

G. D. Sharma

(प्रो.जी.डी.शर्मा)
कुलपति

Address : Gandhi Chowk, Bilaspur (Chhattisgarh) 495001,
Telifax + 91- 7752-220007 (O), +91-7752-260010, Mob. : +91-9406218401,
E-mail : gduttasharma@yahoo.co.in, vc@bilaspuruniversity.ac.in, Website : bilaspuruniversity.ac.in

शैलेष पाण्डेय
विधायक - बिलासपुर

कार्यालय :-
H.N.-E 2/4, विधायक कार्यालय, बिलासपुर (छ.ग.)
दूरभाष क्र.:- 07752-250001
मो.: 07898184986
ई-मेल: bilaspurmla@gmail.com

क्रमांक 121 / 2020

दिनांक 08.02.2020

शुभकामना संदेश

अत्यंत हर्ष का विषय है, कि शासकीय जे.पी.वर्मा कला एवं वाणिज्य स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बिलासपुर में प्रतिवर्षानुसार इस वर्ष भी वार्षिक पत्रिका ''समग्र'' का प्रकाशन किया जा रहा है, साथ ही इस पत्रिका की विषय-वस्तु भी अत्यंत महत्वपूर्ण है।

पत्रिका निश्चित ही छात्र-छात्राओं को अपनी भावनाओं को व्यक्त करने का सशक्त माध्यम रहेगा। विषय-वस्तु ''समग्र'' अंतर्गत सभी छात्र-छात्राएं अपनी भावनाओं और विचारों को शब्दों में व्यक्त कर सकेंगे।

पत्रिका के प्रकाशन के लिये प्राचार्य, महाविद्यालय परिवार एवं समस्त छात्र-छात्राओं को मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

(शैलेष पाण्डेय)

डॉ. संजय अलंग
(आई.ए.एस.)

कलेक्टर एवं जिला दण्डाधिकारी
बिलासपुर (छत्तीसगढ़)

दूरभाष : (07752) 223344 (कार्या.)
223222 (निवास)
फैक्स : (07752) 227060, 223532 (कार्या.)
वेब साईट : www.bilaspur.gov.in
ई-मेल : bilaspur.cg@nic.in

कार्यालय कलेक्टर, बिलासपुर (छ.ग.)

अर्द्धशासकीय पत्र क्रमांक .....

दिनांक 08/09/2019

संदेश

यह प्रसन्नता का विषय है कि शासकीय जमुना प्रसाद वर्मा स्नातकोत्तर कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, बिलासपुर महाविद्यालयीन पत्रिका ''**समग्र**'' का सत्र 2019-20 का प्रकाशन किया जा रहा है। निरन्ततर पत्रिकाओं का प्रकाशन विद्यार्थियों में लेखन एवं पठन-पाठन के प्रति रूचि को बढ़ाता है। यह पत्रिका महाविद्यालय के सांस्कृतिक, साहित्यक रूचियों को बढ़ावा देता है।

मैं कामना करता हूँ कि महाविद्यालय द्वारा जिस उद्देश्य के साथ पत्रिका का प्रकाशन किया जा रहा है उन उद्देश्यों को यह पत्रिका शत्-प्रतिशत फलीभूत करने में सफल हो।

इन्हीं शुभकामनाओं के साथ....

संजय अलंग

(डॉ. संजय अलंग)

डॉ. एस.आर. कमलेश
अपर संचालक

उच्च शिक्षा, क्षेत्रीय कार्यालय,
बिलासपुर (छ.ग.)
ई-मेल : adhigheredu.bs-cg@gov.in
अर्ध शास. पत्र क्र. /असंबि/2019
दिनांक .....

।। शुभकामना – संदेश ।।

मुझे बेहद प्रसन्नता है कि शासकीय जमुना प्रसाद वर्मा कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, बिलासपुर द्वारा महाविद्यालयीन वार्षिक पत्रिका **''समग्र''** का प्रकाशन करने जा रहा है।

महाविद्यालयीन पत्रिका महाविद्यालय के शैक्षणिक, सांस्कृतिक, क्रीड़ा, एन.सी.सी./एन.एस.एस. संबंधी क्रियाकलाप, सामाजिक कार्य एवं अन्य गतिविधियों को प्रदर्शित करने एवं उनमें निखार लाने का सशक्त एवं सर्वोत्कृष्ट माध्यम है, अतः मैं अपेक्षा करता हूँ कि अधिक से अधिक छात्र–छात्राओं के लेखों का इस पत्रिका में समावेश होगा। मुझे आशा ही नहीं वरन् पूर्ण विश्वास है कि **''समग्र''** के प्रकाशन से महाविद्यालयीन परिवार एवं अभिभावक भी लाभान्वित होंगे।

मैं महाविद्यालय परिवार को ''समग्र'' के सफल एवं उद्देश्यपूरक प्रकाशन के लिये हार्दिक शुभकामनाएं देता हूँ।

(डॉ. एस. आर. कमलेश)

प्राचार्य की कलम से ...

व्यक्ति को सामाजिक बनाने में शिक्षा की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। युवा ही राष्ट्र की सम्पदा है। विद्यार्थियों के वैचारिक ऊर्जा का प्रसारण निश्चित ही समाज के लिये अभिष्ट ही नहीं अपितु आवश्यक है। विचारों के इसी प्रवाह का नाम है ''समग्र''।

छात्र-छात्राओं की अभिव्यक्ति कौशल विकसित करने के लिये ऐसी पत्रिकाएं महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है। पत्रिका के माध्यम से महाविद्यालय की गतिविधियॉं, विकास और विशेषताओं की जानकारी भी लोगों तक पहुॅंचती है।

'समग्र' पत्रिका के माध्यम से महाविद्यालयीन विद्यार्थियों को अध्ययन के अतिरिक्त अपनी रचनात्मक प्रतिभा को निखारने का एक अच्छा अवसर प्राप्त हुआ है।

छात्र-छात्राओं के विचारोंभिव्यक्ति के विभिन्न रंगों से सजी, इस पत्रिका में जिनके लेख प्रकाशित है वे अपने परिजनों को पढ़ाएं ताकि उनके सुझावों से प्रेरणा लेकर विचार और सशक्त हो और वे अपनी बेहतर रचनाएं प्रस्तुत कर सकें। अंत में छात्र-छात्राओं की सृजनात्मकता, रचनात्मकता एवं बहुमुखी विकास के लिये हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं।

डॉ. ज्योति रानी सिंह
प्राचार्य

''समाहार''

प्रिय छात्रों,

मेरे लिये यह हर्ष एवं गर्व की बात है कि 'समग्र' का नया संस्करण आ गया है और मुझे ''समग्र'' हेतु यह लिखने का सौभाग्य का अधिकार मिला।

पत्रिका विद्यार्थियों को यह अवसर प्रदान करती है के अकादमिक दायरे के अलावा अन्य चीजों को भी देखें जैसे काव्य, रंगमंच, खेल व विविध ।

आज के भौतिकवादी समाज की सीमाओं में अपनी कल्पनाओं को स्वतंत्रता से प्रस्तुत कर पाना एक क्रांतिकारी कार्य है। छात्र अपनी अभिव्यक्ति के माध्यमों से अपना विचार रखते है। ये ऐसी रचनात्मक क्षमता है जो आगे आने के लिये वास्तविक जगत के संभावित विकल्पों व अवसरों का द्वार खोलती है।

पत्रिका में युवा लेखन व नेतृत्व ऐसे लोगों का है जो समाज को नेतृत्व देने वाले हैं, मात्र अनुसरणकर्ता नहीं। उनका एक विजन या दृष्टिकोण है, इस महाविद्यालय ने अनेक नेतृत्वकर्ता व समाज की अलग-अलग क्षेत्रों में अगुवाई करने वाले प्रदान किये है, जो हमारी एल्यूमनी बैठकों में हमें अपनी विरासत पर गर्व का मौका देते हैं।

लिखना या लेखन आपको पूर्णता प्रदान करता है यह आपकी वह स्वतंत्रता है जो आपका कल्पनाशील संसार रचती है। 'समग्र' एक साझा मंच है, जिसके पृष्ठों पर शिक्षक विरादरी व विद्यार्थी एक साथ साझा करते हुये अपने-अपने शब्द चित्र उकेरते हैं। यह बात इनके आपसी अंतर्संबंध को और गहरा बनाती है।

प्रत्येक सत्र छात्रों के लिये रोमांचक होता है, जिसमें उनके कौशल, अनुशासन भागीदारी का मूल्यांकन किया जाता है। इस दौरान विद्यार्थी अपने शब्दों, दावों और सक्रिय भागीदारी से आने वाली नई दुनिया का आकार रचते हैं। उनकी दृष्टि से देखना और उसका साक्षी बनना मेरा सौभाग्य है।

पत्रिका का अंक पूर्व छात्रों की एल्यूमनी मीट, सामाजिक सरोकार, एन.सी.सी., एन.एस.एस., ऑनलाईन शिक्षा व अन्य गतिविधियॉ की जीवंत झांकी प्रस्तुत करता है।

पत्रिका का पिछला कव्हर, प्रतियोगी विद्यार्थियों द्वारा बनाई व पुरस्कृत की गई पेंटिंग है। जिससे उनकी समाज के प्रति संवेदना स्पष्ट होती है।

मैं 'समग्र' के समस्त संपादक मंडल को बधाई देती हूँ। यह सामूहिक जिम्मेदारी है जिसमें सबने (मेरे सहित) अपना यथेष्ट दिया है। मैं सबके कठिन परिश्रम, सहयोग व प्रतिबद्धता की सराहना करती हूँ।

साभार, सादर !

डॉ. दीपशिखा शुक्ला
वरिष्ठ प्राध्यापक

अनुक्रमणिका

No.	Title	Authors /Compiler	Page No.
	विभागीय प्रतिवेदन		
1	हिन्दी विभाग	डॉ. जयश्री शुक्ल	01
2	अंग्रेजी विभाग	डॉ. सावित्री त्रिपाठी	04
3	राजनीति विभाग	डॉ. दीपशिखा शुक्ला	06
4	समाजशास्त्र विभाग	डॉ. कमल किशोर अग्रवाल	08
5	अर्थशास्त्र विभाग	डॉ. रंजना गुप्ता	10
6	इतिहास विभाग	डॉ. वीणा तिवारी	12
7	भूगोल विभाग	डॉ. एस.के. दुबे	14
8	वनस्पति शास्त्र विभाग	डॉ. उषा शिवहरे	16
9	प्राणी शास्त्र विभाग	डॉ. एल.पी. मिरी	18
10	भौतिक शास्त्र विभाग	डॉ. एस.एस. उपाध्याय	20
11	रसायन शास्त्र विभाग	डॉ. प्रियंका तिवारी	21
12	गणित विभाग	श्री ओम प्रकाश देवांगन	23
13	कम्प्यूटर साइंस एंड एप्लीकेशन	श्री कौशल बंजारे	24
14	वाणिज्य विभाग	डॉ. के.के. भंडारी	26
15	क्रीड़ा विभाग	-	28
16	ग्रंथालय	डॉ. सपना मुखर्जी	30
17	संस्कृत विभाग	कु. गिरिजा गुप्ता	31
18	स्वीप कार्यक्रम	श्री कौशल बंजारे	33
19	एन.सी.सी. प्रतिवेदन सत्र 2019-20	श्री कौशल बंजारे	34
20	वार्षिक प्रतिवेदन - राष्ट्रीय सेवा योजना सत्र 2019-20	डॉ.के.के. सिन्हा, डॉ. रंजु गुप्ता	36
	आलेख		
21	बिलासपुर का गौरव एस.बी.आर. महाविद्यालय	डॉ. एम.एल. स्वर्णकार	39
22	स्मृति के झरोखे से	गंगा प्रसाद बाजपेयी	41
23	महाविद्यालय अन्तर्निहित शक्तियों का विकास स्थल	डॉ. वीणा तिवारी	42
24	CHEMISTRY AND ENVIRONMENT	Dr. Priyanka Tiwari	43
25	उरांव लोकगीतों में रसों की अभिव्यक्ति	डॉ. फेदोरा बरवा	44
26	FORBIDDEN	Anmol Singha	46
27	भारतीय उपभोक्ता बाजार और हिन्दी	डॉ. रंजना गुप्ता	47
28	वैश्वीकरण और हिन्दी	डॉ. किरण एक्का	48
29	संस्कृत बनेगा नासा की भाषा	कु. गिरिजा गुप्ता	49
30	हिन्दी कम्प्यूटिंग का इतिहास एवं वर्तमान में डिजीटल दुनिया में	-	50
31	अनोखी संजीवनी	कु. अंजू	51
32	चलो बढ़ाए एक कदम	कु. शिवानी भोंसले	51
33	पेड़ ही वरदान	जितेश पटेल	51
34	मेरी सोमनाथ यात्रा	कु. निधि दुबे	52
35	जीवन पर मेरे विचार	कु. रोशनी सूर्यवंशी	53
36	परिंदे की ख्वाहिश	कु. तनु सोनटेके	54
37	एक वतनपरस्त इंसान	कु. मुस्कान खातून	54
38	Things we need to Understand	Manish Kukreja	55
39	दिव्य मन	रितेश उपाध्याय	56
40	मेरी सोच मेरा सपना	कु. श्रद्धा चंद्रवंशी	56
41	क्या कसूर था मेरा	किरण यादव	57
42	“Orange Day - He for She”	संजय रात्रे	57

43	बोल प्यार भरे	प्रेरणा देशमुख	57
44	सब कुछ बिकता है	पिंटू यादव	58
45	छोटी पर महत्वपूर्ण बातें	मनीष कुमार गुप्ता	58
46	हमर छत्तीसगढ़	कैलाश पटेल	59
47	रो रहा है देश मेरा	कु. सुरेखा रात्रे	59
48	श्री गुरुपादुकापंञ्चकम्	कु. पूजा कौशिक	60
49	रमता है सो राम	-	60
50	जी चाहता है	कु. रागिनी पटेल	61
51	सफर में धूप तो होगी	रुपेश कुमार वर्मा	61
52	जिन्दगी बेटियों की	कु. सपना साहू	61
53	सत्य श्लोकाः	कु. शारदा साहू	62
54	जीवन के रंगमंच	कु. आंचल कुर्रे	62
55	जय सेवा, जय जोहार	धरमलाल पोर्ते	63
56	वक्त	कु. ओमकुमारी सेन	63
57	छत्तीसगढ़ी गीत	सनत कुमार	64
58	विश्वबन्धुत्वम्	कु. निकिता सूर्यवंशी	64
59	मेरी माँ	संजय कुमार खाण्डे	65
60	विश्वभाषा संस्कृतम्	कु. कामिनी लिबर्टी	65
61	घर की दूरी बार्डर तक	आशीष कश्यप	66
62	मेरा बचपन	देश के लिए नौजवान	66
63	बचाओ-बचाओ	आकाश तम्बोली	67
64	घुट घुट कर जीना छोड़ दे	भूपेन्द्र सिंह कश्यप	67
65	दोस्ती	कु. विद्या कौशिक	67
66	मातृभूमि	कमलेश कुमार	68
67	मातृभाषा हिन्दी	गितेश कुमार निर्मलकर	68
68	अच्छा लगता है	रानू गंधर्व	69
69	ईसकुल के सुरता	अमन कुमार दिनकर	69
70	कितना व्यवहारिक है यह राष्ट्र का चुनाव	अभिषेक कुमार	70
71	Enjoy Writing !!!	Ku. Karuna Singh Maravy	71
72	Domestic Violence	Ku. Neelam Jaiswani	72
73	Hope	Ku. Pratibha Kaushik	73
74	स्वास्थ्य पर जंक फूड का प्रभाव	कु. प्रियंका कौशिक	73
75	जीत उसी की जो डरा नहीं	कु. रानू गंधर्व	74
76	स्त्री की पहचान	कु. पूजा बलराज	74
77	The Only Way is to Keep Moving on	Ku.Priyanka Janghel	74
78	Value of Time	Ku. Pooja Balraj	75
79	Who Knows	Shubham Kumar	75
80	साधना	डागेश्वरी कुम्हार	76
81	बेटी एक पिता की शान	कु. अंजुलता मिरी	76
82	जीवन संघर्ष	कु. टीनू वर्मा	77
83	हिन्दी में बिंदी	हिमेश कुर्रे	77
84	भारत सरकार की योजना - ''महिला शक्ति केन्द्र''	डॉ. संजय कुमार तिवारी	78
85	आत्मसम्मान	कु. मनाली यादव	79
86	राज्य विधान मण्डल	रुपेन्द्र शर्मा	80
87	प्लास्टिक : खतरे की घंटी	रितेश गुप्ता	81
88	अनमोल वचन	अमित कुमार नेताम	81
89	महिला सशक्तिकरण	डॉ. श्रीमती माया यादव	82

विभागीय प्रतिवेदन

1. विभाग का नाम : हिन्दी

   Vision : लोक साहित्य और लिपियों की विशेषता बताते हुए उसे संवर्धित करना।

2. विभाग का संक्षिप्त परिचय : इस महाविद्यालय में हिन्दी की स्नातकोत्तर की कक्षायें 1950 से प्रारंभ हुई । वर्तमान में हिन्दी साहित्य की स्नातक कक्षाओं में लगभग 650 एवं स्नातकोत्तर में 83 छात्र/छात्रायें अध्ययनरत है । सभी प्राध्यापक समय समय पर राष्ट्रीय, अंतर्राष्ट्रीय, सेमीनारों, कार्यशालाओं आदि में प्रतिभागिता प्रदर्शित करते हुए निरंतर ज्ञान संवर्धन तथा साहित्य संस्कृति के संरक्षण हेतु पूरी निष्ठा से प्रयासरत है।

3. विभाग में शिक्षकों का विवरण :

क्र.	नाम	शैक्षणिक योग्यता	अध्यापन अनुभव	
			स्नातक	स्नातकोत्तर
1	डॉ.जयश्री शुक्ल	एम.ए., पी.एच.डी.	34	32
2	डॉ.मंजुला पाण्डेय	एम.ए., पी.एच.डी.	12	06
3	डॉ.के.के.सिन्हा	एम.ए., बी.एड., पी.एच.डी.	06	06
4	डॉ.फेदोरा बरवा	एम.ए., बी.एड., पी.एच.डी.	06	06
5	श्रीमती चैताली सलूजा	एम.ए., बी.एड.	02	02

4. विभाग की गतिविधियों (आयोजित किये गये कार्यक्रम) सत्र 2019-20 :-

क्र.	गतिविधि	दिनांक	अभ्युक्ति
1	हिन्दी साहित्य परिषद का गठन	14.09.2019	अध्यक्ष - गीतेश निर्मलकर, एम.ए. तृतीय सेम.
2	हिन्दी पखवाड़ा	14 सितम्बर	उपाध्यक्ष - संजय खाण्डेय, एम.ए. प्रथम सेम.
3	छत्तीसगढ़ी राजभाषा दिवस	28.11.2019	सचिव - प्रीति साहू, एम.ए. तृतीय सेम.
4	विश्व हिन्दी दिवस	10.01.2019	
6	स्नातकोत्तर सेमीनार	-	

5. उपलब्धियां : (शिक्षकों एवं विभाग की) 2019-20 :-

1. डॉ. जयश्री शुक्ल शासकीय ई.रा.रा. महाविद्यालय बिलासपुर में हिन्दी अध्ययन मंडल की अध्यक्ष है।
2. डॉ. मंजुला पाण्डेय, पुस्तक प्रकाशित - शीर्षक ''मध्यकालीन नवजागरण काल और संत साहित्य''
3. डॉ. के.के. सिन्हा, एन.एस.एस. प्रभारी द्वारा सात दिवसीय विशेष शिविर का आयोजन किया गया। विषय - ''संपूर्ण स्वच्छता हेतु युवा''। शासन द्वारा निर्धारित गतिविधियोँ का संचालन किया गया।
4. विभागाध्यक्ष एवं सहायक प्राध्यापकों की राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय शोध संगोष्ठी में सहभागिता।
5. एल.आई.सी में हिन्दी दिवस की तैयारी एवं प्रश्न मंच में डॉ. फेदोरा बरवा की विशेष सहभागिता।

6. छात्र संख्या :- 2019-20

कक्षा	कुल	छात्र	छात्रा	कक्षा	कुल	छात्र	छात्रा
बी.ए.प्रथम वर्ष	474	260	214	हिन्दी साहित्य			
बी.ए.द्वितीय वर्ष	439	248	191	B.A.-I	196	98	98
बी.ए. तृतीय वर्ष	432	238	194	B.A.-II	174	83	91
बी.एस-सी. प्रथम वर्ष	202	120	82	B.A.-III	172	99	73
बी.एस-सी. द्वितीय वर्ष	156	94	62				
बी.एस-सी. तृतीय वर्ष	154	88	66				
बी.कॉम. प्रथम वर्ष	180	125	55	BBA-I	35	23	12
बी.कॉम. द्वितीय वर्ष	157	117	40	BBA-II	23	14	09
बी.कॉम. तृतीय वर्ष	158	91	67	BBA-III	14	09	05
एम.ए. प्रथम सेमेस्टर	45	18	27				
एम.ए. तृतीय सेमेस्टर	40	13	27				

7. परीक्षा परिणाम : सत्र 2018-19

कक्षा	छात्र संख्या	सम्मिलित	उत्तीर्ण	अनुत्तीर्ण	अनुपस्थित	प्रथम श्रेणी	उत्तीर्ण %
B.A.-I	418	411	411	NIL	07	280	100%
B.A.-II	387	384	384	NIL	03	45	100%
B.A.-III	388	388	387	01	NIL	158	99%
B.Sc.-I	167	163	160	03	04	34	98.15%
B.Sc.-II	152	151	151	NIL	01	151	100%
B.Sc.-III	116	116	116	NIL	NIL	86	100%

B.Com-I	153	153	153	NIL	NIL	15	100%
B.Com-II	152	152	152	NIL	NIL	65	100%
B.Com-III	141	140	140	NIL	01	18	100%
BBA-I	23	23	19	04	NIL	06	84%
BBA-II	14	13	13	NIL	01	03	100%
BBA-III	19	19	19	NIL	NIL	05	100%

हिन्दी साहित्य स्नातक एवं स्नातकोत्तर

कक्षा	छात्र संख्या	सम्मिलित	उत्तीर्ण	अनुत्तीर्ण	अनुपस्थित	प्रथम श्रेणी	उत्तीर्ण %
B.A.-I	162	162	162	NIL	NIL	112	100%
B.A.-II	144	142	141	01	01	60	99%
B.A.-III	179	178	178	NIL	01	46	100%
M.A.-I	50	42	30	NIL	08	07	71.42%
M.A.-II	44	42	42	NIL	02	38	100%
M.A.-III	29	27	22	NIL	02	09	100%
M.A.-IV	27	27	26	01	NIL	22	96.09%

8. **विभाग की सामाजिक गतिविधियां (यदि कोई हो) :**

सत्र 2018-19 में हिन्दी दिवस के अवसर पर हिन्दी विभाग द्वारा हिन्दी पखवाड़ें का आयोजन किया गया। जिसमें प्रतिदिन एक अतिथि द्वारा व्याख्यान दिया जाता था, पखवाड़े के अंत में समापन समारोह आयोजित किया गया ।

1. राष्ट्रीय स्वच्छता अभियान से जुड़ना ।
2. छत्तीसगढ़ी राजभाषा एवं मातृभाषा के प्रति विद्यार्थियों को जागरुक करना ।
3. महाविद्यालयीन समस्त साहित्यिक गतिविधियों में विभाग की सक्रिय सहभागिता ।

9. विभाग की प्रस्तावित योजनाएं (यदि कोई हो तो)

1. साहित्य के इतिहास को पोस्टर द्वारा दर्शाना ।
2. वृद्धाश्रम में स्वच्छता कार्यक्रम में सहभागिता करना ।

--00--

Department of English : An Overview

Dr. Savitri Tripathi
Prof. & Head

Vision of the Department

To be a Lamp, a life-boat, a ladder and interprete••of human conscious through language and literature.

Established in 1944, the college is the only Multi-Faculty Co-educational Post- Graduate Government Institution in the city. The department of English of this college is as old as the college itself. An Institution is known by the faculty and the students it has. The Department of English has been fortunate enough to witness the great literary giants under whose guidance the department flourished and whose planning and vision took the institution towards great academic heights. 'Post- Graduation came 'into existence in the year 1963. The Department feels proud on the great teachers of the Dept. who played vital role in shaping the various personalities since very beginning. At present all the teachers of the Depm1ment are committed to create an academic atmosphere and maintain a cordial relationship with the students.

ln March 17- 2016 College has been accredited by NAAC with Grade A. it is a matter of great pride that in the report of NAAC the name the of Department of English has been mentioned thrice for appreciation.

Present faculty in the Dept.

S.No.	Name	Designation	Qualification	Teaching Experience
1	Dr. Savitri Tripathi	Prof. & Head	M.A., Ph.D.	34 Years
2	Dr. S.K. Tripathi	Professor	M.A., Ph.D.	33 Years
3	Dr. Priya Bajaj	Asst. Professor	M.A., Ph.D.	12 Years

Examination Result Session 2018-2019

Post Graduate	***Passed Percentage***
M.A. IVSem.	100 % Passed in First – 09
Under- Graduate	***Passed Percentage***
B.A. English Language B.Sc. English Language B.Com. English Language B.B.A. English Language B.A. Literature	96.64% 100% 99% 100% 100%

Students Strength : Session 2019-2020

Post-Graduate -		*Under-Graduate*	
M.A. Fist Sem.	38	B.A. Part I En g!ish Language	474
M.A. Fourth Sem.	13	B.Sc. Part I E nglish Language	202
		B.Com. Part I English Language	180
		B.B.A. Part I English Language	35
		B.A. Pati I E nglish Literature	05

Membership of Academic Bodies

a) Board of Studies
b) Examiner ship for Ph.D. Thesis and Viva-voce :
c) Examination committee
d) Moderation committee
e) R.D.C. Expert committee etc.

English Association-

Students actively participate in various academic activities und er the banner of this Association. Guest speakers are invited deliver lectures and P.G. students get benefitted by the lectures.
The names of office bearers of this years' Association : 2018-2019

President	**Kshmta Singh**
Vice-President	Kishan Manhar
Secretary	Nitesh Garehewal
Joint Secretary	Deeksha Pandey
Treasurer	Dhirendra Chaudhary

Strengths of the Department

i) Oldest and well-known department of this region and second oldest of the state.
ii) The Department is only Co-educational Government Post -Graduation Dept. in the city.
iii) The Department has well-qualified teachers who maintain cordial relationship with students and create academic atmosphere.

Weakness:

The College is multi-faculty co-educational institution where B. A ., BSc., B.Com., B.B.A., B.A. literature and Post-Graduate classes are taught. Admission is given to students as per Govt. admiss on rules. Poor base .of the students in language knowledge cause problems in delivering the desired and expected results. Still department is committed for the upliftment and betterment of the weaker section ofthe students.

Challenges

The limited resources and poor back ground of the learners (mostly from rural areas and weaker section of the society) are the challenges which the dept. accepts and delivers good results.

Future Plan

To update old English Language lab in computer assisted language lab.

विभागीय प्रतिवेदन

1. विभाग का नाम : राजनीति
2. विभाग का संक्षिप्त परिचय : राजनीति विज्ञान विभाग सर्वाधिक प्राचीन विभाग के रुप में ख्याति प्राप्त है । 1944 में स्नातक एवं 1950 में स्नातकोत्तर कक्षाओं के सबसे पुरातन विभाग के रुप में प्रतिष्ठित है । इस विभाग की विभागाध्यक्ष डॉ. दीपशिखा शुक्ला प्र. प्राचार्य के रुप में दायित्व का निर्वहन किया है । डॉ. वंदना तिवारी प्राध्यापक, डॉ. संजय तिवारी एवं डॉ. माया यादव सहायक प्राध्यापक के कुशल नेतृत्व में प्रगति पथ पर अग्रसर है ।

3. विभाग में शिक्षकों का विवरण :

क्र.	नाम	शैक्षणिक योग्यता	अध्यापन अनुभव	
			स्नातक	स्नातकोत्तर
1	डॉ. दीपशिखा शुक्ला	एम.ए., एम.फिल., पी.एच-डी.	35	33
2	डॉ. वंदना तिवारी	एम.ए., पी.एच.डी.	33	32
3	डॉ. संजय तिवारी	एम.ए., पी.एच.डी.	29	24
4	डॉ. माया यादव	एम.ए., पी.एच.डी.	25	24

4. विभाग की गतिविधियों (आयोजित किये गये कार्यक्रम) सत्र 2019-20 :-

क्र.	गतिविधि	दिनांक	अभ्युक्ति
1	छात्र परिषद का गठन, उद्घाटन	04.10.2019	IQAC में प्रतिवेदन प्रस्तुत।
2	विभागीय सेमीनार का आयोजन	16.11.2019	-----"-----
3.	राजनीतिक जागरुकता सर्वेक्षण (ग्राम-लिमतरी OBC मतदाता)	23.11.2019	
4	संविधान दिवस के परिपेक्ष्य में व्याख्यान कार्यक्रम	16.12.2019	
5.	विभाग द्वारा एक दिवसीय रोजगारोन्मुख कार्यशाला	14.12.2019	

5. उपलब्धियां : (शिक्षकों एवं विभाग की) 2019-20 :-

1. 03 प्राध्यापक शोध-निर्देशक का कार्य कर रहे हैं ।
2. डी.आर.सी. (राजनीति विज्ञान विभाग) का सफलतापूर्वक संचालन
3. छात्र-छात्राओं द्वारा परियोजना कार्य के माध्यम से राजनीतिक जागरुकता का कार्य
4. प्राध्यापकों का राष्ट्रीय सेमीनार में सहभागिता

6. छात्र संख्या (2019-20) :-

कक्षा	छात्र	छात्रा	सामान्य	अनु. जाति	अ.ज.जा.	अ.पि.व.	कुल
बी.ए.प्रथम वर्ष	219	195	34	130	80	170	414
बी.ए.द्वितीय वर्ष	232	165	40	113	68	176	397
बी.ए. तृतीय वर्ष	216	168	38	127	63	156	384
एम.ए. द्वितीय वर्ष	27	12	04	15	05	15	39
एम.ए. चतुर्थ वर्ष	19	18	4	13	09	11	37

7. परीक्षा परिणाम : सत्र 2018-19

कक्षा	कुल विद्यार्थी की संख्या	प्रथम श्रेणी	द्वितीय श्रेणी	तृतीय श्रेणी	अनुत्तीर्ण	उत्तीर्ण %
B.A.-I	375	45	214	97	19	99%
B.A.-II	337	03	137	171	26	98%
B.A.-III	333	08	142	173	10	99%
M.A.-II	36	20	10	05	01	98%
M.A.-IV	36	22	06	05	05	90%

8. विभाग की सामाजिक गतिविधियां (यदि कोई हो) :

महिला कौशल स्वावलंबन के अंतर्गत ''सखी स्व सहायता, कुटीर उद्योग के अंतर्गत, बड़ी, पापड़, आचार जैसी वस्तुओं का निर्माण कार्य में सहायता, बाजार उपलब्ध कराना व वितरण कार्य में मागदर्शन सहयोग प्रदान करना । छात्रों के कौशल विकास में डॉ. नीरजा स्वामी द्वारा हस्तकला मिट्टी व गोबर से आभूषण बनाने का प्रशिक्षण।

3. विभाग की आगामी प्रस्तावित योजनाएं (यदि कोई हो तो) :

1. राजनीतिक चेतना/जागरुकता हेतु विधानसभा का भ्रमण प्रस्तावित है।
2. सेमीनार एवं वर्कशॉप हेतु कार्ययोजना प्रस्तावित है।
3. प्रतियोगी परीक्षा हेतु (P.Sc., NET, SET) मार्गदर्शन कक्षायें आयोजित की जावेगी ।

विभागीय प्रतिवेदन

1. विभाग का नाम : समाजशास्त्र

   (Vision) "To make a healthy, Peaceful responsible and aware Society.

2. विभाग का संक्षिप्त परिचय : विभाग का संचालन 1985-86 से है । यहां स्नातक के साथ-साथ स्नातकोत्तर स्तर पर अध्ययन-अध्यापन की वयवस्था है। विभाग द्वारा विभिन्न समस्याओं पर शोध-कार्य कराया जाता है । यह विषय प्रतियोगियों की पहली पसंद है। सभी संकाय के विद्यार्थी इस विषय का अध्ययन करते है। यह विभाग शोधकार्य तथा अकादमिक क्षेत्र में अपनी अलग पहचान रखता है, इस विभाग का परीक्षा परिणाम इसकी स्थापना काल से ही सर्वोत्तम रहा है।

3. विभाग में शिक्षकों का विवरण :

क्र.	नाम	शैक्षणिक योग्यता	अध्यापन अनुभव	
			स्नातक	स्नातकोत्तर
1	डॉ. कमल किशोर अग्रवाल	एम.ए., पी-एच.डी.	34	21
2	डॉ. महेश कुमार पाण्डेय	एम.ए., एम.फिल., पी.एच.डी., डी. आर.डी. (इग्नू)	29	26

4. विभाग की गतिविधियों (आयोजित किये गये कार्यक्रम) सत्र 2019-20 :-

क्र.	गतिविधि	दिनांक	अभ्युक्ति
1	विभागीय सेमीनार	25 एवं 26 नवंबर 2019	-
2	एम.ए. प्रथम सेमेस्टर हेतु इंडक्शन प्रोग्राम	17 जुलाई 2019	-
3	पी.एच.डी0. शोधार्थियों का अध्ययन-अध्यापन	4 मई 2019 से लगातार	-

5. उपलब्धियाँ : (शिक्षकों एवं विभाग की) 2019-20 -

1. डॉ. के.के. अग्रवाल - (A) **सदस्य,** केन्द्रीय बोर्ड ऑफ स्टडी रायपुर (छ.ग.), (B) **विषय विशेषज्ञ,** डॉ.सी.वी.रामन् विश्वविद्यालय, करगीरोड (कोटा), (C) सदस्य, बोर्ड आफ स्टडीज, अटल बिहारी बाजपेयी विश्वविद्यालय बिलासपुर (छ.ग.)
2. डॉ.एम.के.पाण्डेय - Counsellor (परामर्शदाता), डॉ.सी.व्ही.रामन् विश्वविद्यालय, करगीरोड, कोटा (छ.ग.)

6. छात्र संख्या 2019-20 :-

कक्षा	छात्र	छात्रा	सामान्य	अनु.जाति	अ.ज.जा.	अ.पि.व.	कुल
बी.ए.प्रथम वर्ष	120	125	14	63	60	108	245
बी.ए. द्वितीय वर्ष	130	117	17	81	47	102	247
बी.ए. तृतीय वर्ष	153	154	20	94	50	143	307
एम.ए.प्रथम सेम.	19	24	5	17	06	15	43
एम.ए.द्वितीय सेम.	15	24	4	12	08	15	39

7. परीक्षा परिणाम : सत्र 2018-19

कक्षा	कुल विद्यार्थी की संख्या	प्रथम श्रेणी	द्वितीय श्रेणी	तृतीय श्रेणी	अनुत्तीर्ण	उत्तीर्ण %
बी.ए. तृतीय वर्ष	-					95%
एम.ए.चतुर्थ सेम.	39	06	33	-	-	100%

8. विभाग की आगामी प्रस्तावित योजनाएं (यदि कोई हो) :-

1. उच्च न्यायालय के माननीय न्यायाधीश द्वारा 'सामाजिक परिवर्तन में न्यायालय की भूमिका' विषय पर व्याख्यान की योजना ।
2. विभाग का NGO's (बिलासपुर में कार्यरत) के साथ MoU की योजना।

--00--

विभागीय प्रतिवेदन

1. विभाग का नाम : अर्थशास्त्र
2. विभाग का संक्षिप्त परिचय : इस महाविद्यालय के स्थापना वर्ष 1944 से ही अर्थशास्त्र विभाग में स्नातक एवं स्नातकोत्तर की कक्षाएं संचालित है । अर्थशास्त्र विभाग को निरंतर आगे बढ़ाने, प्रतिष्ठा दिलाने तथा छात्रों को प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी कराने में विभागाध्यक्ष एवं प्राध्यापक प्रयासरत रहते हैं । इस विभाग के कई भूतपूर्व छात्र/छात्राएं शासकीय, अर्द्ध शासकीय तथा निजी क्षेत्रों में कार्यरत है।
3. विभाग में शिक्षकों का विवरण :

क्र.	नाम	शैक्षणिक योग्यता	अध्यापन अनुभव	
			स्नातक	स्नातकोत्तर
1	डॉ. रंजना गुप्ता	एम.ए.,पी.एच.डी.	35 वर्ष	32 वर्ष
2	डॉ. सुनील शर्मा	एम.ए.,एम.फिल,पी.एच.डी.	35 वर्ष	30 वर्ष
3	डॉ. किरण एस.एक्का	एम.ए.,एम.फिल,पी.एच.डी.	26 वर्ष	26 वर्ष
4	श्रीमती अनुराग दुबे	एम.ए.,एम.फिल,स्लेट	17 वर्ष	17 वर्ष

4. विभाग की गतिविधियों (आयोजित किये गये कार्यक्रम) सत्र 2018-19 :-

क्र.	गतिविधि	दिनांक	अभ्युक्ति
1	स्नातकोत्तर अर्थशास्त्र परिषद का गठन	06.10.2018	अध्यक्ष - अजय कुमार जोगी एम.ए. तृतीय सेमेस्टर
2	आंतरिक मूल्यांकन परीक्षा	15 एवं 16 अक्टूबर 2018	उपाध्यक्ष - रणवीर सिंह राठौर एम.ए. प्रथम सेमेस्टर
3	स्नातकोत्तर स्तर पर कक्षा सेमीनार	06 एवं 07 नव. 2018	सचिव - संगीता मंगेशकर एम.ए. तृतीय सेमेस्टर
4.	औद्योगिक भ्रमण	13.02.2019	सहसचिव - अनिशा एम.ए. प्रथम सेमेस्टर
5.	एक दिवसीय सेमीनार	20.02.2019	

5. उपलब्धियां : (शिक्षकों एवं विभाग की) 2019-20 :-

1. डॉ. रंजना गुप्ता बिलासपुर विश्वविद्यालय के अर्थशास्त्र अध्ययन मण्डल की अध्यक्ष एवं डॉ. सुनील शर्मा सदस्य के रूप में अपना सहयोग प्रदान कर रहे हैं।
2. डॉ. रंजना गुप्ता अटल बिहार वाजपेयी विश्वविद्यालय में समाज विज्ञान संकाय की अधिष्ठाता है ।
3. विभिन्न राष्ट्रीय राज्यस्तरीय समीनार, कार्यशाला एवं परिचर्चा में सभी प्राध्यापकों ने भाग लिया।
4. विभाग द्वारा ''समय का लेखा'' विषय पर एक दिवसीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

6. छात्र संख्या :- 2019-20

कक्षा	छात्र	छात्रा	सामान्य	अनु.जाति	अ.ज.जा.	अ.पि.व.	कुल
बी.ए.प्रथम वर्ष	46	23	06	17	24	22	69
बी.ए.द्वितीय वर्ष	48	29	07	28	16	26	77
बी.ए.अंतिम वर्ष	51	20	05	23	13	30	71
एम.ए.प्रथम सेम	20	11	02	13	04	12	31
एम.ए.द्वितीय सेम	08	05	01	07	01	04	13

7. परीक्षा परिणाम : सत्र 2018-19

कक्षा	कुल विद्यार्थी की संख्या	प्रथम श्रेणी	द्वितीय श्रेणी	तृतीय श्रेणी	अनुत्तीर्ण	उत्तीर्ण %
बी.ए.प्रथम वर्ष	71	**03**	**36**	**29**	03	96%
बी.ए.द्वितीय वर्ष	66	**06**	**55**	**04**	01	98%
बी.ए.अंतिम वर्ष	75	**20**	**46**	**07**	02	97%
एम.ए.प्रथम सेम	13	11	**02**	—		**100%**
एम.ए.द्वितीय सेम.	13	12	**01**	—		**100%**
एम.ए. तृतीय सेम.	18	09	**09**	—		**100%**
एम.ए. चतुर्थ सेम.	17	07	**10**	—		**100%**

8. विभाग की सामाजिक गतिविधियां (यदि कोई हो) :-

1. डॉ.सुनील शर्मा ने कैरियर काउन्सिलिंग (रोजगार मार्गदर्शन प्रकोष्ठ) के संयोजक के रूप में कई व्याख्यानों का आयोजन किया गया।
2. श्री रामकृष्ण विवेकानंद आश्रम अमरकंटक को सहयोग राशि प्रदान की गई।
3. ''सार्थक'' बाल उत्थान समिति को सहयोग राशि प्रदान की गई।

9. विभाग की आगामी प्रस्तावित योजनाएं (यदि कोई हो) :

1. औद्योगिक भ्रमण प्रस्तावित है।
2. एक दिवसीय सेमिनार का आयोजन प्रस्तावित है।

विभागीय प्रतिवेदन

1. विभाग का नाम : इतिहास
2. विभाग का संक्षिप्त परिचय : अतीत के अनुभव से लाभ उठाकर वर्तमान को समझने का प्रयास और बेहतर भविष्य का निर्माण । गौरवशाली अतीत के प्रेरक प्रसंग एक संस्कारवान और जिम्मेदार नागरिक का निर्माण करते हैं । विभाग इस दिशा में सक्रिय है।

3. विभाग में शिक्षकों का विवरण :

क्र.	नाम	शैक्षणिक योग्यता	अध्यापन अनुभव	
			स्नातक	स्नातकोत्तर
1	डॉ. वीणा तिवारी	पी-एच.डी.	34 वर्ष	21 वर्ष
2	डॉ. ए.तिर्की	पी-एच.डी.	33 वर्ष	13 वर्ष
3	श्री सुभाष सूर्यवंशी	एम.ए. नेट उत्तीर्ण	06 महीने	06 महीने

4. विभाग की गतिविधियों (आयोजित किये गये कार्यक्रम) सत्र 2019-20 :-

क्र.	गतिविधि	दिनांक	अभ्युक्ति
1	महाविद्यालयीन इतिहास परिषद का गठन	04.10.2019	
2.	कैरियर ओरिएण्टेड प्रोग्राम का आयोजन	15.10.2019	भ्रष्टाचयार की रोकथाम हेतु भाषण प्रतियोगिता
3	युवा-उत्सव का आयोजन	13 से 15 नवंबर 2019	तात्कालिक भाषण, निबंध, वाद-विवाद, चित्रकला व प्रश्न-मंच जैसी प्रतियोगिताओं का आयोजन

5. उपलब्धियां : (शिक्षकों एवं विभाग की) 2019-20 :-

1. अटल बिहारी वाजपेयी विश्वविद्यालय बिलासपुर के 23.08.2019 के नोटिफिकेशन के अनुसार विभाग के दो विद्यार्थी राजेश साहू और आशीष पाण्डेय ने क्रमशः IV व VI स्थान प्रावीण्य सूची में प्राप्त किया।
2. गुरु घासीदास केन्द्रीय विश्वविद्यालय, बिलासपुर द्वारा राष्ट्रीय सेमिनार का आयोजन किया गया, जिसमें विभाग की भागीदारी रही ।
3. विश्वविद्यालय के दीक्षांत समारोह में आयोजन समिति के सदस्य बनें।

6. छात्र संख्या :- 2019-20

कक्षा	छात्र	छात्रा	सामान्य	अनु.जाति	अ.ज.जा.	अ.पि.व.	कुल
बी.ए.प्रथम वर्ष	176	116	16	109	78	89	292
बी.ए.द्वितीय वर्ष	145	98	17	94	43	89	243
बी.ए.अंतिम वर्ष	151	105	18	83	42	113	256
एम.ए.प्रथम	19	13	01	06	05	20	32
एम.ए.अंतिम	24	13	03	13	09	12	37

7. परीक्षा परिणाम : सत्र 2018-19

कक्षा	कुल विद्यार्थी की संख्या	प्रथम श्रेणी	द्वितीय श्रेणी	तृतीय श्रेणी	अनुत्तीर्ण	उत्तीर्ण %
बी.ए.प्रथम वर्ष	243	25	98	73	47	80.65%
बी.ए.द्वितीय वर्ष	226	18	76	83	49	78.31%
बी.ए.अंतिम वर्ष	118	16	58	38	06	94.91%
एम.ए.प्रथम सेमेस्टर	45	27	10	Nil	08	82.22%
एम.ए.तृतीय सेमेस्टर	52	17	15	Nil	20	61.53%

8. विभाग की सामाजिक गतिविधियां (यदि कोई हो) :-

1. केन्द्रीय भण्डारण निगम भारत सरकार के उपक्रम के अंतर्गत सतर्कता जागरुकता सप्ताह बनाया गया।

9. विभाग की आगामी प्रस्तावित योजनाएँ (यदि कोई हों) :

1. फरवरी 2020 में शैक्षणिक भ्रमण प्रस्तावित है ।

--00--

विभागीय प्रतिवेदन

1. विभाग का नाम : भूगोल
2. विभाग का संक्षिप्त परिचय : इस महाविद्यालय का स्थापना वर्ष 1944 है। यहां प्रारंभ से ही भूगोल विभाग संचालित है। हजारों-हजार छात्र/छात्राओं को भूगोल विषय से परिचित कराने वाले इस विभाग में स्नातक एवं स्नातकोत्तर कक्षाओं को मिलाकर लगभग 600 विद्यार्थी अध्ययरनरत है । विभागाध्यक्ष डॉ. एस.के. दुबे, सहायक प्राध्यापक डॉ. उत्तरा चौबे, कुसुम सहगल, श्री चन्द्रकांत भोई सहित चार कुशल शिक्षक विभाग में अध्यापनरत है।
3. विभाग में शिक्षकों का विवरण :

क्र.	नाम	शैक्षणिक योग्यता	अध्यापन अनुभव	
			स्नातक	स्नातकोत्तर
1	डॉ. एस.के.दुबे	एम.ए.,पी.एच.डी.	35 वर्ष	13 वर्ष
2	श्रीमती कुसुम सहगल	एम.ए., नेट एवं सेट	03 वर्ष	03 वर्ष
3	डॉ. उत्तरा चौबे	पी-एच.डी.	04 वर्ष	04 वर्ष
4	चन्द्राकान्त भोई	एम.ए., एम.फिल, नेट -सेट	04 वर्ष	04 वर्ष

4. विभाग की गतिविधियों (आयोजित किये गये कार्यक्रम) सत्र 2019-20 :-

क्र.	गतिविधि	दिनांक	अभ्युक्ति
1	भूगोल परिषद का गठन	13.08.2019	

5. छात्र संख्या :- 2019-20

कक्षा	छात्र	छात्रा	सामान्य	अनु.जाति	अ.ज.जा.	अ.पि.व.	कुल
बी.ए.प्रथम वर्ष	92	52	12	50	28	52	142
बी.ए.द्वितीय वर्ष	90	48	14	48	30	46	138
बी.ए.अंतिम वर्ष	83	40	10	46	26	41	123
एम.ए. प्रथम सेम.	10	07	01	08	03	05	17
एम.ए. तृतीय सेम.	12	06	01	05	03	09	18

6. परीक्षा परिणाम : सत्र 2018-19

कक्षा	कुल विद्यार्थी की संख्या	प्रथम श्रेणी	द्वितीय श्रेणी	तृतीय श्रेणी	अनुत्तीर्ण	उत्तीर्ण %
बी.ए.प्रथम वर्ष	142	11	102	23	02	99%
बी.ए.द्वितीय वर्ष	134	16	85	21	12	91%
बी.ए.अंतिम वर्ष	123	14	87	19	03	97%
एम.ए. प्रथम सेम.	17	10	07	Nil	Nil	100%
एम.ए. तृतीय सेम.	18	12	06	Nil	Nil	100%

7. विभाग की सामाजिक गतिविधियां (यदि कोई हो) :-

1. विभाग के द्वारा बी.ए. भाग तीन के छात्र/छात्राओं के लिए दो दिवसीय भौगोलिक पर्यटन (अमरकंटक) का आयोजन दिनांक 21 एवं 22 जनवरी 2019 को किया गया ।

8. विभाग की आगामी प्रस्तावित योजनाएं (यदि कोई हो) :

1. सामाजिक-आर्थिक ग्रामीण सर्वेक्षण
2. पर्यावरण संरक्षण एवं जल संरक्षण पर संगोष्ठी का आयोजन
3. शैक्षणिक पर्यटन

——00——

विभागीय प्रतिवेदन

1. विभाग का नाम : वनस्पति शास्त्र
2. विभाग का संक्षिप्त परिचय : पेड़ पौधों का अध्ययन, प्रकृति से सामंजस्य एवं महत्ता । विभिन्नता एवं विविधतायुक्त पौधों का अध्ययन, उपयोगिता, सुरक्षा एवं संरक्षण का प्रयास । प्राकृतिक वन संपदा के अत्यधिक दोहन को रोकने का प्रयास, प्रोन्नत एवं प्रदूषण मुक्त स्वस्थ रोग रहित पौधों सुरक्षित एवं संरक्षण प्रदान करना ।
3. विभाग में शिक्षकों का विवरण :

क्र.	नाम	शैक्षणिक योग्यता	अध्यापन अनुभव	
			स्नातक	स्नातकोत्तर
1	डॉ. उषा शिवहरे	एम.एस.सी., पी.एच.डी.	35 वर्ष	26 वर्ष

4. विभाग की गतिविधियों (आयोजित किये गये कार्यक्रम) सत्र 2019-20 :-

क्र.	गतिविधि	दिनांक	अभ्युक्ति
1	बी.एस.सी. अंतिम के विद्यार्थियों को लोकल विजिट	09.10.2018	पर्यावरण ज्ञान हेतु
2	बी.एस.सी. अंतिम के विद्यार्थियों वानस्पतिक उद्यान का अध्ययन एवं अध्यापन	16.11.2018 29.11.2018	पुस्तकीय ज्ञान के साथ-साथ प्रायोगिक ज्ञान प्रदान
3	जैव प्रौद्योगकी पर लेक्चर	08.01.2019	बी.एस.सी. तृतीय एवं माईक्रो बायलाजी के विद्यार्थियों के ज्ञान हेतु

6. उपलब्धियां : (शिक्षकों एवं विभाग की) 2019-20 :-

औषधीय पौधे अश्वगंधा, सर्पगंधा, कालीमिर्च, घृतकुंवार, तुलसी, वन तुलसी, तेज पात, दाल चीनी, नीम, कपास एवं सिंदूर जैसे पौधों का संरक्षण एवं विशिष्ट पौधा इक्वीसिप्म का प्रसारण एवं सरंक्षण।

7. छात्र संख्या :-

कक्षा	छात्र	छात्रा	सामान्य	अनु.जाति	अ.ज.जा.	अ.पि.व.	कुल
बी.एस.सी.प्रथम वर्ष	67	53	49	15	40	16	120
बी.एस.सी.द्वितीय वर्ष (वनस्पति)	52	54	43	07	24	22	106
बी.एस.सी.अंतिम वर्ष (माइक्रोबायलॉजी)	24	48	36	12	11	13	72

8. परीक्षा परिणाम : सत्र 2018-19

कक्षा	कुल विद्यार्थी की संख्या	प्रथम श्रेणी	द्वितीय श्रेणी	तृतीय श्रेणी	अनुत्तीर्ण	उत्तीर्ण %
बी.एस.सी.प्रथम वर्ष	115	25	38	18	24	67.6%
बी.एस.सी.द्वितीय वर्ष	112	38	66	01	07	93.7%
बी.एस.सी.अंतिम वर्ष	83	17	56	01	01	98.6%

9. विभाग की सामाजिक गतिविधियां (यदि कोई हो) :-

1. पर्यावरण उपयोगिता का ज्ञान, जल संरक्षण एवं संवर्धन के ज्ञान से छात्र-छात्राओं को अवगत कराना पॉलीथीन के उपयोग पर रोक एवं परिसर साफ सुथरा एवं पॉलीथीन रहित बनाने का संकल्प ।

10. विभाग की आगामी प्रस्तावित योजनाएं (यदि कोई हो) :

1. वर्षा जल संरक्षण एवंज ल अपव्यय को रोकना।

--00--

विभागीय प्रतिवेदन

1. विभाग का नाम : प्राणीशास्त्र
   Vision : To conduct quality teaching and holistic development of student.
2. विभाग का संक्षिप्त परिचय : विज्ञान संकाय के अंतर्गत प्राणीशास्त्र विभाग 1989-90 से संचालित है, इस विभाग में स्नातक स्तर की अध्ययन अध्यापन की व्यवस्था है, प्रयोगशालायें आधुनिक उपकरणों से प्रायोगिक कार्य हेतु उपलब्ध है।
3. विभाग में शिक्षकों का विवरण :

क्र.	नाम	शैक्षणिक योग्यता	अध्यापन अनुभव	
			स्नातक	स्नातकोत्तर
1	डॉ. एल.पी.मिरी	एम.एस.सी.,पी.एच.डी.	26 वर्ष	-
2	डॉ.रंजू गुप्ता	एम.एस.सी.,पी.एच.डी.	17 वर्ष	10 वर्ष
3	श्री मोहन लाल पटेल	बी.ए. (बी.ए.प्रयोगशाला शिक्षक)		
4.	कु. मानसी रात्रे	बी.एस.सी., एम.एस.सी. प्रयोगशाला (आई.टी.) सहायक		

4. उपलब्धियां : (शिक्षकों एवं विभाग की) 2019-20 :-
   1. डॉ. एल.पी.मिरी, सदस्य, बोर्ड ऑफ स्टडी (जूलाजी) बिलासपुर विश्वविद्यालय, बिलासपुर
   2. डॉ. एल.पी. मिरी, विषय विशेषज्ञ (जुलॉजी) केन्द्रीय अध्ययन मंडल रायपुर
   3. डॉ. (श्रीमती) रंजू गुप्ता द्वारा गुरुघासीदास विश्वविद्यालय में रिफ्रेशर कोर्स
   4. डॉ. (श्रीमती) रंजू गुप्ता, एन.एस.एस. (कार्यक्रम अधिकारी) महिला इकाई
   5. International Seminar & Conference -04
   6. National Seminar Participation & Presentation – 06
   7. State Level Semiar – 06

5. छात्र संख्या :- 2019-20

कक्षा	छात्र	छात्रा	सामान्य	अनु.जाति	अ.ज.जा.	अ.पि.व.	कुल
बी.एस.सी.प्रथम	45	44	07	26	19	38	89%
बी.एस.सी.द्वितीय	42	38	10	30	25	15	80%
बी.एस.सी.अंतिम	28	32	08	18	20	14	60%

6. परीक्षा परिणाम : सत्र 2018-19

कक्षा	कुल विद्यार्थी की संख्या	प्रथम श्रेणी	द्वितीय श्रेणी	तृतीय श्रेणी	अनुत्तीर्ण	उत्तीर्ण %
बी.एस.सी.प्रथम	83	18	39	17	09	89%
बी.एस.सी.द्वितीय	80	31	46	-	03	96%
बी.एस.सी.अंतिम	60	16	44	-	-	100%

--00--

विभागीय प्रतिवेदन

1. विभाग का नाम : भौतिक शास्त्र
   Vision : Science for Everyone

2. विभाग का संक्षिप्त परिचय : इस महाविद्यालय में विज्ञान संकाय वर्ष 1989 में प्रारंभ हुआ । बी.एस-सी. भाग 1, 2 एवं 3 में पठन-पाठन की सुविधा उपलब्ध है । इस हेतु एक प्रयोगशाला तथा एक डार्करूम उपलब्ध है। प्रयोगशाला में यू.जी.सी. नवीन पाठ्यक्रमानुसार प्रायोगिक उपकरण विभाग में उपलब्ध है ।

3. विभाग में शिक्षकों का विवरण :

क्र.	नाम	शैक्षणिक योग्यता	अध्यापन अनुभव	
			स्नातक	स्नातकोत्तर
1	डॉ. एस.एस. उपाध्याय	एम.एस-सी., पी.एच.डी.	26 वर्ष	-
2.	श्री राजकुमार यादव	प्रयोगशाला परिचारक		

4. परीक्षा परिणाम : सत्र 2018-19
   1. बी.एस-सी. भाग एक का परिणाम - 83%
   2. बी.एस-सी. भाग दो का परिणाम - 89%
   3. बी.एस-सी. भाग तीन का परिणाम - 94%

5. छात्र संख्या :- 2019-20

कक्षा	छात्र	छात्रा	सामान्य	अनु.जाति	अ.ज.जा.	अ.पि.व.	कुल
बी.एस-सी. प्रथम वर्ष	52	27					79
बी.एस-सी. द्वितीय वर्ष	44	14					58
बी.एस-सी. अंतिम वर्ष	41	10					51

--00--

विभागीय प्रतिवेदन

1. **विभाग का नाम** : **रसायनशास्त्र**
   Vision : To make, green & clean environment

2. **विभाग का संक्षिप्त परिचय** : Department of chemistry has been established in 1989 in this college. Undergraduate course is available. This department has the post of Assistant Professor, one for lab technician and attendent each. Chemistry lab is well equipped with chemicals and instruments.

3. **विभाग में शिक्षकों का विवरण** :

क्र.	नाम	शैक्षणिक योग्यता	अध्यापन अनुभव	
			स्नातक	स्नातकोत्तर
1	डॉ. प्रियंका तिवारी	एम.एस.सी., बी.एड., पी.एच.डी.	07 साल	-

4. विभाग की गतिविधियों (आयोजित किये गये कार्यक्रम) सत्र 2019-20 :-

क्र.	गतिविधि	दिनांक	अभ्युक्ति
1	Invited Lecture	23.09.2019	Students of B.Sc.-III & II year participated
2	Invited Lecture	27.09.2019	Student of B.Sc. I & II year participated
3	Invited Lecture (Swayam : A learning portal)	22.10.2019	Students & faculty of all P.G. Courses of College Participated

5. उपलब्धियां : (शिक्षकों एवं विभाग की) 2019-20 :-

Dr. Priyanka Tiwari has organized Invited Lecture on "Periodic Properties" and "Laboratory Practices" Dr. Tiwari has also participated in state level workshop on "SWAYAM : Online Courses". She has organized Invited lecture on "SWAYAM" in college. She has also published resarch paper in UGC-litsed Jornal in the year 2019.

6. छात्र संख्या :- 2019-20

कक्षा	छात्र	छात्रा	सामान्य	अनु.जाति	अ.ज.जा.	अ.पि.व.	कुल
बी.एस.सी.प्रथम वर्ष	93	69	13	41	39	69	162
बी.एस.सी.द्वितीय वर्ष	72	56	18	26	31	53	128
बी.एस.सी.अंतिम वर्ष	73	60	14	34	23	63	134
बी.एस.सी.प्रथम							

7. परीक्षा परिणाम : सत्र 2018-19

कक्षा	कुल विद्यार्थी की संख्या	प्रथम श्रेणी	द्वितीय श्रेणी	तृतीय श्रेणी	अनुत्तीर्ण	उत्तीर्ण %
बी.एस.सी.प्रथम	138	16	75	15	32	76.88%
बी.एस.सी.द्वितीय वर्ष	128	16	83	15	14	89.06%
बी.एस.सी.अंतिम वर्ष	96	22	68	08	02	97.91

--00--

विभागीय प्रतिवेदन

1. विभाग का नाम : गणित
   Vision : "We encourage student to become accurate, efficient and flexible problem solver"

2. विभाग का संक्षिप्त परिचय : इस महाविद्यालय में वर्ष 1989 में विज्ञान संकाय की स्थापना हुई । गणित विभाग में स्नातक स्तर पर बी. एस.सी. की कक्षाएं संचालित हो रही है।

3. विभाग में शिक्षकों का विवरण :

क्र.	नाम	शैक्षणिक योग्यता	अध्यापन अनुभव	
			स्नातक	स्नातकोत्तर
1	श्री ओम प्रकाश देवांगन (अतिथि शिक्षक)	एम.एस-सी., नेट	07 माह	06 माह

4. छात्र संख्या :- 2019-20

कक्षा	छात्र	छात्रा	सामान्य	अनु.जाति	अ.ज.जा.	अ.पि.व.	कुल
बी.एस-सी. प्रथम वर्ष	52	28	08	22	07	43	80
बी.एस-सी. द्वितीय वर्ष	40	18	-	-	-	-	58
बी.एस-सी. अंतिम वर्ष	39	12	-	-	-	-	51

5. परीक्षा परिणाम : सत्र 2018-19

कक्षा	कुल विद्यार्थी की संख्या	प्रथम श्रेणी	द्वितीय श्रेणी	तृतीय श्रेणी	अनुत्तीर्ण	उत्तीर्ण %
बी.एस-सी. प्रथम वर्ष	57		45		12	78.95%
बी.एस-सी. द्वितीय वर्ष	53		49		04	92.50%
बी.एस-सी. अंतिम वर्ष	48	13	34	-	01	97.92%

--00--

विभागीय प्रतिवेदन

1. विभाग का नाम : कम्प्यूटर साइंस एंड एप्लीकेशन
   Vision : "To encourage students to know about digital world and using it in secure manner"

2. विभाग का संक्षिप्त परिचय : इस महाविद्यालय में बी.एस.सी. कम्प्यूटर विज्ञान की कक्षाएं स्ववित्तीय योजना के अंतर्गत वर्ष 1995 से तथा पी.जी.डी.सी.ए. की कक्षा 2009 से संचालित की जा रही है। विभाग के प्रयोगशाला में नये कान्फिगरेशन का कम्प्यूटर प्रायोगिक कार्य हेतु उपलब्ध है।

3. विभाग में शिक्षकों का विवरण :

क्र.	नाम	शैक्षणिक योग्यता	अध्यापन अनुभव	
			स्नातक	स्नातकोत्तर
1	श्री कौशल बंजारे	एम.सी.ए., सी.जी. सेट, यू.जी.सी. नेट	-	02 वर्ष
2	कु. पूजा गुप्ता (स्ववित्तीय)	एम.सी.ए.	1 वर्ष	-

4. छात्र संख्या :- 2019-20

कक्षा	छात्र	छात्रा	सामान्य	अनु.जाति	अ.ज.जा.	अ.पि.व.	कुल
पी.जी.डी.सी.ए.	28	32	07	11	20	22	60
बी.एस-सी. प्रथम वर्ष (कम्प्यूटर साइंस)	26	14	04	10	02	24	40
बी.एस-सी. द्वितीय वर्ष (कम्प्यूटर साइंस)	17	12	-	-	-	-	29
बी.एस-सी. अंतिम वर्ष (कम्प्यूटर साइंस)	18	07	-	-	-	-	25

5. परीक्षा परिणाम : सत्र 2018-19

कक्षा	कुल विद्यार्थी की संख्या	प्रथम श्रेणी	द्वितीय श्रेणी	तृतीय श्रेणी	अनुत्तीर्ण	उत्तीर्ण %
पी.जी.डी.सी.ए.	49	15	15	-	19	61%
बी.एस-सी. प्रथम वर्ष (कम्प्यूटर साइंस)	29	-	22	-	07	75.86%
बी.एस-सी. द्वितीय वर्ष (कम्प्यूटर साइंस)	26	-	24	-	02	88.46%
बी.एस-सी. अंतिम वर्ष (कम्प्यूटर साइंस)	28	05	22	-	01	96.43%

--00--

विभागीय प्रतिवेदन

1. विभाग का नाम : वाणिज्य

   (Vision) "Educate the students to become enterrehs not the servant"

2. विभाग का संक्षिप्त परिचय : अपनी स्थापना काल से ही महाविद्यालय का वाणिज्य संकाय अपनी अकादमिक एवं शैक्षणिक उपलब्धियों के लिए अंचल में प्रसिद्ध है। संकाय में बी.कॉम. एवं एम. काम. (सेमेस्टर पद्धति) तथा बी.बी.ए. पाठ्यक्रम संचालित हो रहे है। विभागाध्यक्ष डॉ. के.के. भंडारी अटल बिहारी विश्वविद्यालय बिलासपुर (छ.ग.) के वाणिज्य एवं प्रबंधन अध्ययन मण्डल के सदस्य भी है।

3. विभाग में शिक्षकों का विवरण :

क्र.	नाम	शैक्षणिक योग्यता	अध्यापन अनुभव	
			स्नातक	स्नातकोत्तर
1	डॉ. के.के. भंडारी	एम.कॉम., एम फिल, पी.एच.डी., पी.जी.डी.बी.एम., पी.जी.डी.जी.बी.	35	22
2	डॉ. जया अग्रवाल (सहायक प्राध्यापक)	एम.काम., एम.फिल, पी-एच.डी.	33	33
3	सुश्री नमन गुप्ता (सहायक प्राध्यापक)	एम काम	02	02

4. विभाग की गतिविधियों (आयोजित किये गये कार्यक्रम) सत्र 2019-20 :-

क्र.	गतिविधि	दिनांक	अभ्युक्ति
1	एल.आई.सी., रोजगार अवसर कार्यशाला	27.09.2019	-
2	अभिप्रेरणा व्याख्यान	11.11.2019	-

5. उपलब्धियाँ : (शिक्षकों एवं विभाग की) 2019-20 -

1. डॉ. सुधीर शर्मा - पूर्व विभागाध्यक्ष एवं प्राध्यापक, अटल बिहारी बाजपेयी विश्वविद्यालय बिलासपुर छ.ग. के कुलसचिव के पद पर नियुक्त है।
2. डॉ. के.के. भंडारी (विभागाध्यक्ष) अटल बिहारी बाजपेयी विश्वविद्यालय बिलासपुर छ.ग. के वाणिज्य एवं प्रबंधन अध्ययन मण्डल के सदस्य है।

6. छात्र संख्या 2019-20 :-

कक्षा	छात्र	छात्रा	सामान्य	अनु.जाति	अ.ज.जा.	अ.पि.व.	कुल
बी.कॉम. प्रथम वर्ष	125	55	35	47	38	60	180
बी.कॉम. द्वितीय वर्ष	117	40	22	45	26	64	157
बी.कॉम. तृतीय वर्ष	91	67	31	37	22	68	158
एम.कॉम.प्रथम सेम.	38	42	81	21	20	20	80
एम.कॉम.तृतीय सेम.	22	46	18	17	15	18	68

7. परीक्षा परिणाम : सत्र 2018-19

कक्षा	कुल विद्यार्थी की संख्या	प्रथम श्रेणी	द्वितीय श्रेणी	तृतीय श्रेणी	अनुत्तीर्ण	उत्तीर्ण %
बी.कॉम. प्रथम वर्ष	153	13	52	69	10	76.47
बी.कॉम. द्वितीय वर्ष	153	18	69	54	2	84.96
बी.कॉम. तृतीय वर्ष	141	20	100	18	-	97.07
एम.कॉम.प्रथम सेम	64	28	34	-	-	89
एम.कॉम.तृतीय सेम	36	16	16	3	1	97.22

8. विभाग की सामाजिक प्रस्तावित योजनाएं (यदि कोई हो) :-

विभाग के राष्ट्रीय सेवा योजना के छात्र-छात्राओं द्वारा ग्राम लिमतरी में विशेष शिविर में एक सप्ताह ग्राम की सफाई छ.ग. सरकार की योजना एवं नरवा गुरुवा घुरवा बाड़ी का प्रचार किया।

9. विभाग की आगामी प्रस्तावित योजनाएं (यदि कोई हो) :-

संकाय में अंग्रेजी माध्यम के छात्रों की बढ़ती संख्या को देखते हुए स्नातक स्तर पर अंग्रेजी माध्यम की पृथक कक्षा खण्ड बनाया जाना प्रस्तावित है।

--00--

विभागीय प्रतिवेदन – क्रीड़ा विभाग

1. महाविद्यालय में खेल सुविधाएँ - फुटबाल क्रिकेट, हॉकी, खोखो, कबड्डी, हैण्डबाल, व्हालीबाल, बास्केटबाल, साफ्टबाल, बेसबाल, नेटबाल, तलवारबॉजी, बॉक्सिंग, एथलेटिक्स, जूड़ो, ताइकाण्डो, वेट लिफ्टिंग।

2. महाविद्यालय में खेल उपकरण - टेबल टेनिस, 6 स्टेशन जीम, वाकर, लेगप्रेस इत्यादि।

3. महाविद्यालय से वर्ष 2018-19 में वि.वि. टीम का प्रतिनिधित्व करने वाले छात्र/छात्राओं की सूची सलग्न है - 22 छात्र/छात्राओं ने भाग लिया 2018-19 में महाविद्यालय से राज्य स्तरीय खेल कूद में भाग लेने वाले छात्र/छात्रा की संख्या 8 है।

सत्र 2018-19

4. विश्वविद्यालय का प्रतिनिधित्व करने वाले विद्यार्थी -

क्र.	विद्यार्थी का नाम	कक्षा	खेल का नाम
1	आयुषी शुक्ला	B.Com.-I	स्वीमिंग
2	राधा पाटले	B.A.	स्वीमिंग
3	प्रांजल	M.Com.-I	खो खो
4	जसप्रीतसिंह सलूजा	B.Com.-III	हैण्डबाल तलवार बाजी
5	सौरभ गुरुद्धान	B.Com.-I	हैण्डबाल तलवार बाजी
6	राहुल यादव	B.Com.-III	हैण्डबाल तलवार बाजी
7	पुष्पा आर्मो	M.A.	हैण्डबाल तलवार बाजी
8	हेमवती नेताम	M.A.	हैण्डबाल तलवार बाजी
9	अनुराधा आडिल	PGDCA	क्रिकेट
10	रोशनी यादव	B.B.A.-III	क्रिकेट
11	पूजा महिलांगे	B.Com.-I	क्रिकेट
12	रोहित टोप्पो	B.A.-I	हाकी
13	निशान्त केरकेत्ता	B.A.-I	हाकी
14	निशान्त एक्का	B.A.-I	हाकी
15	नेलशन लकड़ा	B.A.-I	हाकी
16	अशोक केरकेट्टा	B.A.-I	हाकी
17	रोबिन मिंज	B.A.-I	हाकी
18	राजेश साहू	B.A.-I	क्रिकेट
19	इरफान खान	B.A.-II	जूड़ो
20	मुन्नी देवांगन	B.A.-III	तलवार बाजी
21	महेन्द्र पटेल	B.A.-III	बाक्सिंग पु.
22	वेदिका शुक्ला	B.A.-III	हैण्डबाल

1. वर्ष के सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी छात्र जसप्रीत सिंह सजूला बी.कॉम. तृतीय वर्ष।
2. वर्ष के सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी छात्र रोशनी यादव बी.बी.ए.तृतीष वर्ष।
3. अनुशासित खिलाड़ी छात्र रोहित टोप्पो
4. अनुशासित खिलाड़ी छात्रा पुष्पा आर्मो एम.ए. तृतीय सेम.
5. क्रीड़ा / विभाग में कमलेश चतुर्वेदी सहयोग के लिये

विश्वविद्यालय का प्रतिनिधित्व करने वाले छात्रो की सूची
वर्ष 2019-20

क्र.	विद्यार्थी का नाम	कक्षा	खेल का नाम
1	मुकेश कुमार	B.Com.-II	हाकी
2	रायमन तिर्की	B.A.-II	हाकी
3	जसप्रीत सिंह सजूला	M.Com.-I	हैण्डबाल
4	अंकुर सिंह सलाम	M.Com.-I	हैण्डबाल
5	सौरभ गुरुद्वान	B.Com.-III	हैण्डबाल
6	इरफान अली	B.A.-III	जूडो कुश्ती
7	ललिता नेताम	B.A.-II	जूडो
8	हेमवती	PGDCA	हैण्डबाल
9	वीणा मरावी	PGDCA	हैण्डबाल
10	पुष्पा	PGDCA	हैण्डबाल
11	सुप्रिती सिंह	B.A.-II	हैण्डबाल
12	अंजनी सिंह	B.A.-II	हैण्डबाल
13	सृष्टी दुबे	B.B.A.	हैण्डबाल
14	रीना लामटे	B.Sc.-I	हैण्डबाल
15	संजुक्ता विश्वाल	B.A.-III	हैण्डबाल
16	प्रांजल पाचखाण्डे	M.Com.-I	खो खो
17	संगीता बाखला	B.Sc.-III	हाकी
18	अरुण कश्यप	M.A.-I	बाक्सिंग
19	टी.अखिलेश कुमार	M.A.-I	बाक्सिंग
20	विमला ध्रुव	B.A.-I	खो खो
21	निशान्त केरकेटा	B.A.-II	हाकी
22	राजेश मरावी	B.Com-I	क्रास कन्ट्री
23	विमला ध्रुव	B.A.-I	खो खो

उपलब्धियाँ :-

सत्र 2018-19

1. परिक्षेत्र स्तरीय हैण्डबाल पुरुष/महिला प्रतियोगिता में महाविद्यालय की टीम विजता रही है।
2. साफ्ट बाल अन्तर महाविद्यालय प्रतियोगिता में महाविद्यालय की महिला टीम उपविजेता रही है।

सत्र 2019-20

1. परिक्षेत्र स्तरीय हैण्डबाल पुरुष एवं महिला की प्रतियोगिता आयोजित की गई।
2. अन्तर महाविद्यालय हाकी पुरुष एवं महिला की प्रतियोगिता आयोजित किया।
3. राज्य स्तरीय हैण्डबाल पुरुष की प्रतियोगिता महाविद्यालय द्वारा किया गया ।

विभागीय प्रतिवेदन

1. विभाग का नाम : ग्रंथालय

2. विभाग का संक्षिप्त परिचय : महाविद्यालय ग्रंथालय में कला, वाणिज्य एवं विज्ञान विषयक पुस्तकों का विशाल संग्रह, अर्थशास्त्र, इतिहास, राज. विज्ञान, समाज शास्त्र, हिन्दी साहित्य, अंग्रेजी साहित्य, भूगोल, वाणिज्य की दुर्लभ संदर्भ पुस्तकों का संग्रह एवं शोध छात्रों के लिए प्रमुख शोध केन्द्र, इस पुस्तकालय की प्रमुख विशेषता है । प्रतिदिन 100 से 150 पुस्तकों का आदान-प्रदान इसकी महत्ताओं को प्रतिपादित करता है ।

3. विभाग में शिक्षकों का विवरण :

क्र.	नाम	शैक्षणिक योग्यता	कार्य अनुभव	
			स्नातक	स्नातकोत्तर
1	डॉ. सपना मुखर्जी	एम.ए. (अर्थशास्त्र), एम.लिब., आई.एस.सी.	1990 से निरंतर महाविद्यालयीन ग्रंथालय संचालन का प्रशासकीय अनुभव। ग्रंथाल विज्ञान के विषय विशेषज्ञ के बतौर विभिन्न विश्वविद्यालय में सेवा प्रदान की।	

5. विभाग की गतिविधियां (आयोजित किये गये कार्यक्रम) सत्र 2019-20

प्रतिदिन विद्यार्थियों, शोधार्थियों एवं विषय विशेषज्ञों को संदर्भ सेवा प्रदान किया जाता है। ग्रंथालय की पुस्तकों का डाटा बेस तैयार किया गया, ताकि आगामी वर्षो में ग्रंथालय को कम्प्यूटराईज्ड किया जा सके। रमन विश्वविद्यालय एवं सुंदर लाल विश्वविद्यालय के ग्रंथालय विज्ञान के विद्यार्थियों के लिए अध्यापन संबंधित कार्यो का संपादन किया गया ।

6. उपलब्धियां : (शिक्षकों एवं विभाग की) 2019-20 :-

1. अधिकतम विद्यार्थियों को पुस्तकालय सेवा प्रदान करना मुख्य उद्देश्य, निरंतर कार्यरत।
2. ग्रंथालय में ACC-Register में दर्ज पुस्तकों का database बनकर तैयार। सत्र् 2020-21 से साफ्टवेयर बेस्ड लाईब्रेरी का संचालन किया जायेगा।

7. विभाग की आगामी प्रस्तावित योजनाएं (यदि कोई हो) :

आगामी सत्र से पुस्तकालय की पुस्तकों को उचित Software सेवाओं से युक्त करके Computerization कराने की प्रमुख योजना प्रस्तावित है।

--00--

विभागीय प्रतिवेदन

1. विभाग का नाम : संस्कृत

2. विभाग का संक्षिप्त परिचय : संस्कृतस्य माध्यमेन देशस्य सभ्यता संस्कृत्याः च रक्षणार्थं प्रयासं अस्ति । विभागस्य एतदपि प्रयासं अस्ति यत् विद्यार्थिणाम् बौद्धिक स्तरं अपि श्रेष्ठं भवेत् । संस्कृत भाषा न केवलं विद्यार्थिणाम् कृते अपितु सर्वेषां कृते जनभाषा भवेत इति अस्माकं प्रयासं अस्ति ।

3. विभाग में शिक्षकों का विवरण :

क्र.	नाम	शैक्षणिक योग्यता	अध्यापन अनुभव	
			स्नातक	स्नातकोत्तर
1	कु. गिरिजा गुप्ता	एम.ए. सेट	-	-

4. विभाग की गतिविधियों (आयोजित किये गये कार्यक्रम) सत्र 2019-20 :-

क्र.	गतिविधि	दिनांक	अभ्युक्ति
1	श्लोकपाठः	23.09.2019	अध्यक्ष : पूजा कौशिक
2	संस्कृतगीतम्	29.09.2019	उपाध्यक्ष : भूवनेश्वरी कौशिक
3	संस्कृत संभाषणम्	13.10.2019	सचिवः पिन्टू कुमार पटेल

5. उपलब्धियां : (शिक्षकों एवं विभाग की) 2019-20 :-

संस्कृत भाषा अस्माकं सर्वेषां कृते अत्यन्त सरला भाषा भवेत् इति विभागस्य प्रयासं अस्ति ।

6. छात्र संख्या :- 2019-20

कक्षा	कुल	छात्र	छात्रा	कक्षा	कुल	छात्र	छात्रा
बी.ए.प्रथम वर्ष	3	2	0	1	3	1	5
बी.ए.द्वितीय वर्ष	2	3	0	2	1	2	5
बी.ए. तृतीय वर्ष	4	6	0	3	1	6	10

7. परीक्षा परिणाम : सत्र 2018-19

कक्षा	छात्र संख्या	सम्मिलित	उत्तीर्ण	अनुत्तीर्ण	अनुपस्थित	प्रथम श्रेणी	उत्तीर्ण %
B.A.-I	05	1	4	-	-	-	100%
B.A.-II	10	2	8	-	-	-	100%
B.A.-III	13	8	5	-	-	-	100%

8. विभाग की सामाजिक गतिविधियां (यदि कोई हो) :

विभागस्य प्रयासं अस्ति यत् संस्कृतविषयस्य सर्वे छात्राः महाविद्यालय तः गृहं गत्वा स्व स्व क्षेत्रे संस्कृतस्य प्रचार प्रसारं अपि कुर्वन्तु ।

9. विभाग की प्रस्तावित योजनाएं (यदि कोई हो तो) :

विभागस्य इयं अपि प्रयासं अस्ति यत् आगामी समये महाविद्यालये संस्कृत संभाषणस्य कृते अपि भिन्नं कक्षा भवेत् ।

--00--

स्वीप कार्यक्रम प्रतिवेदन

श्री कौशल बंजारे
स्वीप प्रभारी

1. वाद-विवाद प्रतियोगिता का आयोजन 25.08.2018 को किया गया प्रतियोगिता का विषय ''राजतंत्र बनाम लोकतंत्र''।
2. दिनांक 01.09.2018 को विषय ''मतदान केन्द्र का चित्रण'' पर पोस्टर प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।
3. दिनांक 08.09.2018 को क्वीज प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें प्रतिभागियों से भारतीय संविधान से संबंधित प्रश्नोत्तर किया गया।
4. दिनांक 11.09.2018 को स्वीप कार्यक्रम के अंतर्गत सायकल रैली का आयोजन नेहरू चौक से किया गया जिससे महाविद्यालय के छात्र/छात्राओं ने सहभागिता की।
5. दिनांक 15.09.2018 को मतदाता जागरूकता रैली एवं मानव श्रृंखला निर्माण मतदाता जागरूकता कार्यक्रम के अंतर्गत किया गया।
6. दिनांक 19.09.2018 को रंगोली प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। रंगोली प्रतियोगिता का विषय ''मतदान केन्द्र का चित्रण या मतदान प्रक्रिया से संबंधित।
7. ''मतदान को प्रभावित करने वाले कारक एवं निवारण'' विषय पर निबंध प्रतियोगिता एवं नारा लेखन प्रतियोगिता का आयोजन दिनांक 20.09.2018 को किया गया।
8. महाविद्यालय में मतदान शपथ कार्यक्रम 28.09.2018 को महाविद्यालय के अधिकारी, कर्मचारी एवं छात्रा/छात्राओं द्वारा मतदाता शपथपत्र बनवाया गया।
9. महाविद्यालय में दिनांक 29.09.2018 को जिला स्तरीय नुक्कड़ नाटक प्रतियोगिता का आयोजन कया गया जिसमें विभिन्न महाविद्यालय के छात्र/छात्राओं ने भाग लिया।
10. जिला स्तरीय क्वीज प्रतियोगिता का आयोजन 04.10.2018 को शासकीय माता शबरी नवीन कन्या महाविद्यालय में किया गया जिसमें महाविद्यालय से 02 छात्र एवं 01 छात्रा ने भाग लिया।
11. जिला स्तरीय पोस्टर प्रतियोगिता का आयोजन सी.एम.डी. महाविद्यालय में दिनांक 04.10.2019 को किया गया जिससे महाविद्यालय के 01 छात्र एवं 01 छात्रा ने भाग लिया।
12. जिला स्तरीय नारा लेखन प्रतियोगिता का आयोजन सी.एम.डी. महाविद्यालय में दिनांक 04.10.2019 को किया गया जिसमें महाविद्यालय के 01 छात्र एवं 01 छात्रा ने भाग लिया।
13. जिला स्तरीय रंगोली प्रतियोगिता का आयोजन दिनांक 05.10.2018 को शासकीय बिलासा कन्या महाविद्यालय में किया गया जिसमें महाविद्यालय के दो छात्राओं ने भाग लिया।
14. जिला स्तरीय वाद-विवाद प्रतियोगिता का आयोजन शासकीय ई. राघवेन्द्र राव विज्ञान महाविद्यालय में दिनांक 09.10.2018 को किया गया जिसमें महाविद्यालय के 01 छात्र एवं 01 छात्रा ने भाग लिया।

15. जिला स्तरीय निबंध प्रतियोगिता का आयोजन डी.पी. विप्र महाविद्यालय में दिनांक 11.10.2018 को किया गया जिसमें महाविद्यालय से 01 छात्र एवं 01 छात्रा ने भाग लिया।
16. जिला स्तरीय पतंगबाजी प्रतियोगिता का आयोजन सी.एम.डी. महाविद्यालय में दिनांक 13.10.2018 को किया गया जिसमें महाविद्यालय के दो छात्रों ने भाग लिया।
17. दिनांक 13.10.2018 को युवा सभा का आयोजन किया गया।
18. मतदाता सेल्फी कार्यक्रम का आयोजन दिनांक 27.10.2018 को किया गया।
19. कैंडल मार्च का आयोजन दिनांक 03.11.2018 को महाविद्यालय मे किया गया।
20. दिनांक 16.11.2018 को मतदाता शपथ महाविद्यालय के समस्त अधिकारियों एवं कर्मचारियों तथा समस्त छात्र/छात्राओं द्वारा लिया गया।
21. स्वीप कार्यक्रम के अंतर्गत कार्य करने के लिए महाविद्यालय के कैंपस एम्बेसडर कु. रोशनी साहू एवं विकास दास को कलेक्टर महोदय, बिलासपुर द्वारा प्रशस्ति पत्र मिला।
22. स्वीप प्रभारियों को भी कलेक्टर महोदय, बिलासपुर के द्वारा प्रशस्ति पत्र प्रदाय किया गया।
23. राष्ट्रीय मतदाता दिवस (25 जनवरी 2019) को प्रार्थना भवन में मनाया गया जिसमें मतदाता शपथ दिलाया गया तथा स्वीप प्रभारियों को प्रशस्ति पत्र दिया गया।
24. मतदाता सत्यापन कार्यक्रम के अंतर्गत महाविद्यालय में तीन दिवसीय कार्यशाला का आयोजन दिनांक ०३.१०.२०१९ से ०५.१०.२०१९ तक किया गया जिसमें ऑनलाईन मतदाता सत्यापन कार्य को बताया गया।
25. दिनांक 07.11.2019 को महाविद्यालय के समस्त अधिकारियों एवं कर्मचारियों का मतदाता सत्यापन किया गया।

एन.सी.सी. प्रतिवेदन सत्र 2019–20

श्री कौशल बंजारे
एन.सी.सी. केयर टेकर

1. संयुक्त वार्षिक प्रशिक्षण शिविर का आयोजन 01 मई से 10 मई 2019 तक रायगढ़ में 28 छ.ग. बटालियन एन.सी.सी. के द्वारा किया गया जिसमें 08 छात्र एवं 05 छात्रा सैनिकों ने भाग लिया।
2. अमरकंटक ट्रैकिंग कैम्प का आयोजन 21 मई से 28 मई 2019 तक अमरकंटक किया गया जिसमें 03 छात्र सैनिकों ने भाग लिया।
3. IMA Attachment कैम्प का आयोजन 12 जून से 23 जून 2019 तक देहरादून में किया गया जिसमें महाविद्यालय के 01 छात्र सैनिक हरमन सिंह मोहार ने भाग लिया।

4. दिनांक 21 जून 2019 को महाविद्यालय परिसर में अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस मनाया गया। जिसमें सभी कैडेट्स उपस्थित थे।
5. 26 जून 2019 को नशीली दवाओं के दुरूपयोग और अवैध तस्करी के खिलाफ अंतर्राष्ट्रीय दिवस मनाया गया।
6. राष्ट्रीय स्तर योगा स्वच्छता पखवाड़ा कार्यक्रम के अंतर्गत 02 जुलाई 2019 को स्वच्छता शपथ ली गई तथा स्वच्छता के ऊपर लेक्चर का आयोजन किया गया।
7. संयुक्त वार्षिक प्रशिक्षण शिविर तथा थलसेना शिविर-I का आयोजन 7CG बटालियन के बिलासपुर के द्वारा बहतराई में 04 जुलाई से 13 जुलाई 2019 तक किया गया। जिसमें 12 छात्र एवं 06 छात्रा सैनिकों ने भाग लिया।
8. थल सेना शिविर-I का आयोजन 7CG बटालियन के बिलासपुर के द्वारा बहतराई में 14 जुलाई से 23 जुलाई 2019 तक किया गया। जिसमें 02 छात्र एवं 02 छात्रा सैनिकों ने भाग लिया।
9. 26 जुलाई 2019 को हमारे महाविद्यालय में वृक्षारोपण कार्यक्रम किया गया जिसमें सभी छात्र/छात्रा सैनिक भाग लिये।
10. 26 जुलाई 2019 को कारगिल विजय दिवस अटल बिहारी बाजपेयी विश्वविद्यालय के द्वारा आयोजित किया गया जिसमें सभी छात्र/छात्राओं सैनिक भाग लिये।
11. थलसेना शिविर-III आयोजन 7CG बटालियन के द्वारा बहतराई में 03 अगस्त से 09 अगस्त 2019 तक किया गया जिसमें 02 छात्र एवं 02 छात्रा सैनिकों ने भाग लिया।
12. संयुक्त वार्षिक प्रशिक्षण शिविर का आयोजन 7CG बटालियन के बिलासपुर के द्वारा बहतराई में 03 अगस्त से 09 अगस्त 2019 तक किया गया। जिसमें 02 छात्र सैनिक ने भाग लिया।
13. 15 अगस्त 2019 को पुलिस ग्राउण्ड में आयोजित ड्रिल प्रतियोगिता में हमारे महाविद्यालय के 27 छात्र/छात्रा सैनिकों ने भाग लिया।
14. आर्मी अटैचमेन्ट कैम्प का आयोजन 07 अगस्त से 19 अगस्त 2019 तक सागर (धाना) में किया गया। जिसमें 04 छात्र सैनिकों ने भाग लिया।
15. थलसेना शिविर IGC का आयोजन 09 अगस्त से 18 अगस्त 2019 तक 33 म.प्र. बटालियन के द्वारा सागर में किया गया। जिसमें 01 छात्र एवं 02 छात्रा सैनिकों ने भाग लिया।
16. RDC-I का आयोजन 37 CG बटालियन के द्वारा दुर्ग पुरई में 07 सितम्बर से 16 सितम्बर 2019 तक किया गया। जिसमें 06 छात्र एवं 03 छात्रा सैनिकों ने भाग लिया।
17. RDC-I का आयोजन 37 CG बटालियन के द्वारा दुर्ग पुरई में 17 सितम्बर से 26 सितम्बर 2019 तक किया गया। जिसमें 06 छात्र एवं 03 छात्रा सैनिकों ने भाग लिया।
18. 14.09.2019 को वर्ड डायबीटिज डे मनाया गया जिसमें सभी छात्र सैनिक भाग लिये।
19. 16.09.2019 को गुड सेमेरिटन डे मनाया गया जिसमें सभी छात्र सैनिक भाग लिये।
20. 17.09.2019 से 02.10.2019 तक स्वच्छता पखवाड़ा चला जिसमें डी.पी. विप्र महाविद्यालय में प्रारंभ कराया गया तथा 02.10.2019 को जतिया तालाब में स्वच्छता अभियान चलाया गया।
21. 05 अक्टूबर से 19 अक्टूबर को एस.एस.बी. दिल्ली कैंप लगा जिसमें एक छात्र सैनिक ने भाग लिया।

22. RDC-III का आयोजन 8CG गर्ल्स बटालियन रायपुर में दिनांक 06.10.2019 से 10.10.2019 तक आयोजन किया गया। जिसमें 04 छात्र सैनिक व 03 छात्रा सैनिकों ने भाग लिया।
23. RDC-III का आयोजन 8CG गर्ल्स बटालियन रायपुर में दिनांक 17.10.2019 से 26.10.2019 तक आयोजन किया गया। जिसमें 03 छात्र सैनिक व 02 छात्रा सैनिकों ने भाग लिया।
24. RDC-IGC II का आयोजन भोपाल में 19 नवम्बर 2019 को किया गया जिसमें 04 म.प्र. बटालियन 02 छात्र सैनिक ने भाग लिया।
25. CATC-I का आयोजन रायपुर में 01 नवम्बर से 10 नवम्बर 2019 हुआ जिसमें 04 छात्र सैनिक ने भाग लिया।
26. RDC-DCAT III का आयोजन 04 म.प्र. गर्ल्स बटालियन भोपाल में दिनांक 20.11.2019 से 29.11.2019 तक आयोजित किया गया जिसमें 01 छात्र सैनिक ने भाग लिया।
27. 22 नवम्बर 2019 को एन.सी.सी. दिवस के अवसर पर मार्चपास्ट का आयोजन पुलिस ग्राउण्ड बिलासपुर से सिम्स बिलासपुर तक किया गया।
28. सिम्स बिलासपुर के ऑडिटोरियम में रक्तदान, नेत्रदान के लिये शपथग्रहण एवं उन्मुखीकरण कार्यक्रम का आयोजन 7CG बटालियन द्वारा किया गया जिसमें सभी छात्र/छात्रा सैनिकों ने भाग लिया।
29. एन.सी.सी. के समस्त गतिविधियों में प्राचार्य महोदया डॉ. (श्रीमती) दीपशिखा शुक्ला का सक्रिय योगदान रहा।

वार्षिक प्रतिवेदन
राष्ट्रीय सेवा योजना सत्र 2019–20

डॉ.के.के. सिन्हा
कार्यक्रम अधिकारी इकाई क्र. 1

डॉ. रंजु गुप्ता
कार्यक्रम अधिकारी इकाई क्र. 2

भारत सरकार द्वारा राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के जन्म शताब्दी वर्ष 24 सितम्बर 1969 में राष्ट्रीय सेवा योजना इस आशय के साथ प्रारंभ की गई कि उच्च शिक्षा से जुड़े विद्यार्थियों में सामाजिक दायित्व, चेतना स्वप्रेरित अनुशासन के साथ श्रम के प्रति सम्मान की भावना उत्पन्न हो। विद्यार्थी अपने रिक्त समय एवं अवकाश का सदुपयोग करने हेतु समाज सेवा करें तथा अपनी शिक्षा की पूर्णत: हेतु वास्तविक परिस्थितियों से साक्षात्कार भी कर सकें। जिससे उनके व्यक्तित्व का विकास हो।

छतीसगढ़ एवं मध्यप्रदेश में सन् 1969 में राष्ट्रीय सेवा योजना प्रदेश के दो विश्वविद्यालयों में शुरू की गई एवं वर्तमान में प्रदेश के समस्त विश्वविद्यालयों में इसका संचालन किया जा रहा है। इसी के अंतर्गत शासकीय जे.पी. वर्मा स्नातकोत्तर कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय बिलासपुर में भी दो इकाई - छात्र एवं छात्रा इकाई संचालित है। जिसमें 200 स्वयं सेवक प्रतिवर्ष पंजीकृत होते हैं। इन स्वयं सेवकों द्वारा वर्ष भर राष्ट्रीय सेवा योजना की गतिविधियां संचालित की जाती है जैसे पर्यावरण संवर्धन एवं संरक्षण, वृक्षारोपण, बेटी बचाओ- बेटी पढ़ाओ, कैशलेश ट्रांजेक्शन, डिजिटल इंडिया, स्वच्छ

परिसर, हरियर परिसर, जन साक्षरता, सामुदायिक चेतना के लिए रैलियां, मतदाता जागरूकता अभियान, युवा सप्ताह का आयोजन, स्वास्थ्य शिक्षा, प्राथमिक उपचार, जल संरक्षण तथा संपूर्ण स्वच्छता इत्यादि समाज सेवा के कार्य किये जाते हैं।

शासकीय जे.पी.वर्मा स्नातकोत्तर कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, बिलासपुर का राष्ट्रीय सेवा योजना के इकाई क्रमांक 01 एवं 02 का सात दिवसीय विशेष शिविर महाविद्यालय की प्राचार्या डॉ. दीपशिखा शुक्ला के निर्देशन एवं रा.से.यो. के कार्यक्रम अधिकारी डॉ. के.के. सिन्हा एवं डॉ. रंजू गुप्ता के मार्गदर्शन में बिलासपुर जिले के विकासखण्ड बिल्हा के लिमतरी ग्राम में आयोजित किया गया। दिनांक 22 से 28 नवम्बर 2019 तक आयोजित उक्त शिविर में स्वयं सेवक एवं स्वयं सेविकाओं द्वारा शिविर की आदर्श दिनचर्या का पालन करते हुए इस वर्ष की थीम ''नरवा गरवा घुरूवा बारी'' के अंतर्गत ग्राम में श्रमदान करते हुए विभिन्न प्रकार के कार्य पूर्ण किये गये। स्थान निर्माण के अंतर्गत शासकीय पूर्व माध्यमिक शाला एवं प्राथमिक शाला लिमतरी के विद्यालय परिसर में चबूतरे का निर्माण किया गया। स्वच्छता कार्यक्रम के अंतर्गत ग्राम के समस्त विद्यालय परिसर की साफ-सफाई करते हुए वृक्षारोपण का कार्य किया गया तथा पूर्व में रोपे गये पौधों को सुरक्षा प्रदान की गई तथा परिसर का रंग-रोगन किया गया। शिविर में ग्राम संपर्क अभियान के अंतर्गत ग्रामीणों से संपर्क स्थापित कर उनका आर्थिक एवं सामाजिक सर्वे किया गया। सात दिवसों तक सतत् रूप से रात्रिकालिन सांस्कृतिक कार्यक्रमों की प्रस्तुति दी गई तथा कश्मीर की समस्या पर आधारित नुक्कड़-नाटक ''चिखती खामोशी'' का मंच किया गया। विद्यालय के नन्हें-मुन्ने बच्चों को सम्मिलित करते हुए छ.ग. की मनमोहक कला एवं संस्कृति की झांकी प्रस्तुत करते हुए लोक गीतों पर आकर्षक नृत्य प्रस्तुत किया गया। कार्यक्रम के समापन अवसर पर छ.ग. राज्य का राजकीय गीत ''अरपा पैरी के धार''.... का ग्रामीणों को सहभागी बनाते हुए लयबद्ध तरीके से प्रस्तुत किया गया। शिविर के सफलता पूर्व आयोजन में ग्राम की सरपंच श्रीमती सुखबाई लहरी, उपसरपंच श्री विनोद कौशिक एवं प्रधान पाठक श्री तुलसी राम शर्मा एवं श्री वेदप्रकाश साहू तथा शिक्षक श्री अंशुमन आडिल एवं श्री गणेशी लाल गुप्ता का विशेष योगदान रहा।

राष्ट्रीय सेवा योजना की इकाई क्र. 01 एवं 02 का सात दिवसीय विशेष शिविर शहर से 15 कि.मी. की दूरी पर ग्राम लिमतरी में 22 नवम्बर से 28 नवम्बर 2019 तक आयोजित किया गया। शिविर में 45 छात्र एवं 45 छात्राओं ने 05+05 ग्रामीणों ने भाग लिया। शिविर के दौरान शिविरार्थियों द्वारा जागरूकता रैली, स्वच्छता कार्यक्रम, बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ, मतदाता जागरूकता आदि कार्यक्रम आयोजित किय गये।

महाविद्यालय में राष्ट्रीय सेवा योजना की उपलब्धियां

राष्ट्रीय सेवा योजना की महाविद्यालय इकाई द्वारा 24 सितम्बर को एन.एस.एस. का स्थापना दिवस मनाया गया। वर्ष 2018-19 में सुरेखा रात्रे, रितेश कुर्रे, ज्योति नेताम, ईशान सूर्यवंशी ने राष्ट्रीय स्तर के कैंप में सहभागिता की तथा राज्य स्तरीय कैंप में मधु सूर्यवंशी, सुरेखा रात्रे, हेमंत चौधरी तथा अमित लहरे ने महाविद्यालय का प्रतिनिधित्व किया। सत्र 2018-19 में इकाई क्र. 01 से 17 स्वयं सेवक एवं 08 स्वयं सेविकाओं ने ''बी'' प्रमाण पत्र की परीक्षा उत्तीर्ण की तथा इकई से 02 स्वयं सेवक एवं 09 स्वयं सेविकाओं ने ''सी'' प्रमाण पत्र उत्तीर्ण किया।

ग्रीष्मकालीन इन्टर्नशीप कार्यक्रम सत्र 2018-19

ग्रीष्मकालीन इन्टर्नशीप कार्यक्रम सत्र 2018-19 के अंतर्गत ग्राम सिलपरी एवं लिमतरी, विकासखण्ड बिल्हा, जिला बिलासपुर (छ.ग.) में इकाई क्रमांक 01 से 14 स्वयं सेवक तथा इकाई क्रमांक 02 से 16 स्वयं सेविकाओं ने भाग लिया तथा

इस कार्यक्रम के तहत जन जागरूकता अभियान, घर-घन जन संपर्क ठोस अपशिष्ट पदार्थो का प्रबंधन नरवा गरवा घुरवा बारी के अंतर्गत गड्ढा निर्माण, नाली निर्माण, सूखा एवं गीला कचरा का उचित निपटान तथा स्वच्छता का प्रचार-प्रसार ग्रामीण जनों को सहभागी बनाते हुए किया गया तथा निर्धारित 50 घंटे का कार्य पूर्ण किया गया।

नुक्कड़ नाटक ''यातायात'' का प्रदर्शन

शासकीय जे.पी. वर्मा. स्नातकोत्तर कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, बिलासपुर में महाविद्यालयीन विद्यार्थियों में सड़क सुरक्षा के प्रति जागरूकता सतर्कता एवं संस्कार विकास हेतु राष्ट्रीय सेवा योजना के इकाई क्रमांक 01 एवं 02 के छात्र/छात्राओं द्वारा संयुक्त रूप से एक नुक्कड़ नाटक ''यातायात जागरूकता'' का प्रदर्शन किया गया। नुक्कड़ नाटक के माध्यम से छात्र/छात्राओं ने यातायात नियमों का पालन न करने पर होने वाली दुर्घटनाओं को प्रदर्शित कर जन-मानस को जागृत करने का सराहनीय प्रयास किया। नुक्कड़, नाटक में प्रदीप खुंटे, गीतेश निर्मलकर, दीपाली केशरवानी, अंकिता तिर्की, आरती जायसवाल, अजय बंजारे, आदर्श उपाध्याय, रूपेश बन्नी, हसनेन रात्रे, महेश्वरी ध्रुव, ज्योति साहू, मनीष साहू, मुकेश साहू, शिव बांधेकर आदि ने उत्कृष्ट प्रदर्शन किया। इस अवसर पर महाविद्यालय की प्राचार्या डॉ. दीपशिखा शुक्ला एवं कार्यक्रम अधिकारी डॉ. के.के. सिन्हा के साथ महाविद्यालय के समस्त विभागों के प्राध्यापकों की गरिमामयी उपस्थिति रही।

विश्वविद्यालय स्तर पर नुक्कड़-नाटक में प्रथम स्थान प्राप्त

विश्व एड्स दिवस के अवसर पर दिनांक 01 दिसम्बर 2019 को अटल बिहारी वाजपेयी विश्वविद्यालय, बिलासपुर के राष्ट्रीय सेवा योजना कार्यालय द्वारा आयोजित नुक्कड़ नाटक प्रतियोगिता में शासकीय जे.पी.वर्मा स्नातकोत्तर कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, बिलासपुर की इकाई ने प्रथम स्थान प्राप्त कर महाविद्यालय को गौरवान्वित किया।

बिलासपुर का गौरव एस.बी.आर. महाविद्यालय

डॉ. एम.एल. स्वर्णकार
भू.पू. प्राध्यापक

ॐ सहनाववक्तु सहनौभुनक्तु सहवीर्य करवावहै ।
तेजस्विनावधीतमस्तु मा विद्विषावहै ।।

बिलासपुर का सबसे प्राचीन महाविद्यालय एस.बी.आर. जिसे वर्तमान में जमुना प्रसाद वर्मा महाविद्यालय कहा जाता हे । प्रारंभ से ही पूरे छत्तीसगढ़ में विख्यात रहा है । यद्यपि तब यह किराये की टूटी-फूटी बिल्डिंग में लगता था, यहां न ठीक-ठाक लायब्रेरी थी, न क्लासरूम के लिए ढंग से कमरे थे और न ही ढंग की अन्य सुविधाएं थी, किन्तु देश के स्वनाम धन्य मूर्धन्य लोग यही से पढ़कर आगे बढ़े और न केवल देश में अपितु, विश्व में भी भारत का नाम ऊंचा किया।

हिन्दी की एक प्रसिद्ध कविता है :-

जितने कष्ट कंटकों में हैं, जिनका जीवन सुमन खिला ।
गौरव गंध उन्हें उतना ही, अत्र तत्र सर्वत्र मिला ।।

मैं तब राजनीति विज्ञान में यहां से एम.ए. कर रहा था । सन् 1960 की बात है । उस समय कालेज की लायब्रेरी में राजनीति शास्त्र की सारी पुस्तकें उपलब्ध नहीं थी । अत: बम्बई की अमेरिकन लायब्रेरी से ''इंटर नेशनल अफेयर्स'' और लोकल सेल्फ गव्हर्नमेंट की कुछ पुस्तकें जिनमें एन्डरशन और मैकडानल्ड की लिखी हुई पुस्तकें भी थी, 6 महीनों के लिए यहां के वाचनालय में बुलाई गई थी और हमनें उन्हीं से अध्ययन किया था ।

उस समय असुविधाओं के चलते 40 छात्र-छात्राओं की बी.ए. प्रथम वर्ष की कक्षा में 140 से 160 विद्यार्थी बैठते थे और अध्ययन करते थे । संस्कृत का एक प्रसिद्ध श्लोक है जिसका परिपालन आज के सुयोग्य छात्रों को करना चाहिए जो भविष्य में आगे बढ़ना चाहते है :-

काव्य शास्त्र विनोदेन, कालो गच्छतिधीमताम् ।
व्यसनेन तु मूर्खाणाम, निद्रया कलहेन वा ।।

बुद्धिमान लोग एक-एक क्षण का सदुपयोग काव्य-शास्त्रों के लिए, पढ़ने-लिखने के लिए करते है, जबकि मूर्ख लोग उस समय को लड़ने-झगड़ने, नींद लेने और अन्य व्यसनों में बर्बाद कर देते हैं । ऐसा नहीं है कि आज के छात्र पढ़ते-लिखते नहीं हैं । हम चाहते हैं कि महाविद्यालय से निकलने वाले छात्र और छात्राएं काव्य-शास्त्रों की चर्चा में अपना बहुमूल्य समय अर्पित करें न कि मोबाईल से चेटिंग करने व गपशप में बिता दें ।

पढ़ने में दत्तचित्त होना इसलिए भी जरूरी हैं कि -शास्त्रों में कहा गया है :-

पुस्तकस्था तु या विद्या, परहस्त गतं धनम्,
कार्यकाले समापन्ने, न सा विद्या न तत् धनम् ।।

पुस्तक में स्थित विद्या और दूसरे से हाथों में गया हुआ धन, समय आने पर काम नहीं आते। इस गौरवपूर्ण महाविद्यालय के प्रथम प्राचार्य डॉ. बलदेव प्रसाद जी मिश्र थे । उनके बाद श्री आनन्दी लाल पाण्डेय इसके प्राचार्य और डायरेक्टर बने जो राजनीति विज्ञान में एम.ए. थे ।

जैसा कि पिछले संदर्भ में मैंने कहा - मैं इस महाविद्यालय से सन् 1960 से जुड़ा हूं । मैंने राजनीति विज्ञान में यहां से एम.ए. किया था और 1962 में चालीस लोगों में सेलेक्ट होकर मैं इस महाविद्यालय के लिए लेक्चरर हुआ । मेरे साथ डॉ. सिंह आगरा विश्वविद्यालय से चयनित हुए थे। यहां उस समय राजनीति में दो पद रिक्त थे । कालेज की आर्थिक स्थिति ठीक नहीं थी अत: तत्काल डॉ. सिंह को बुलाया नहीं जा सका और मुझे श्री पाण्डेय जी बुलाकर कहा कि आप इसी कालेज की संस्था एस.एन.जी. कालेज मुंगेली में ज्वाइन कर लीजिये । दीपावली तक आपको यहां बुला लेंगें ।

एन.एस.जी. कालेज मुंगेली मुझे अच्छा लगा । वहां बी.ए. के छात्र श्री कृष्णदतत भट्ट (के.डी. भट्ट) अपने भाई और बहन के साथ पढ़ते थे जो बाद में यहां लेक्चरर नियुक्त हुए । दीपावली के पहले ही मेरी नियुक्ति शासकीय सेवा के लिए हो गई अत: मैंने वहां त्यागपत्र देकर शासकीय सेवा स्वीकार कर लिया ।

सन् 1970 में मैंने इसी महाविद्यालय से पुन: हिन्दी साहित्य में भी एम.ए. किया और उसमें पूरी कक्षा में अकेले प्रथम श्रेणी में और मेरिट में स्थान प्राप्त किया । बाद में लोक सेवा आयोग इंदौर द्वारा चयनित होकर वहां भी 24 चयनित लोगों में मेरिट में तीसरे क्रम में शासकीय महाविद्यालय में नियुक्त हुआ । महाविद्यालय सेवा के क्रम में स्थानांतरित होकर इस कालेज में प्रोफेसर के पद पर सेवा निवृत्ति तक कार्य करने का सौभाग्य मुझे मिला है ।

यह महाविद्यालय सन् 1972 में ही शासकीय महाविद्यालय हो गया था। सन् 2002 में मैं इस महाविद्यालय से सेवानिवृत्त हुआ हूं । इस तरह शनै:-शनै: इसके वार्द्धक्य का मैं चाक्षुस गवाह बना। मेरे सामने इसने नया भवन, नई लाइब्रेरी, खेलकूद का प्रांगण और नया कलेवर प्राप्त किया है । मुझे प्रसन्नता है कि अपने बाल्यकाल से इस समय तक इसने इतनी प्रगति की है, जो सराहनीय है ।

इसके छात्र-छात्राओं के लिए मैं एक मंत्र देता हूं जो कि ''पुस्तकीय भवति पंडित:'' आप अपने सामान्य पाठ्यक्रम के अतिरिक्त अपनी सांस्कृतिक विरासत से जुड़िए । अच्छी किताबों का चयन करिये । वेद-शास्त्र, उपनिषद् आदि का अच्छा अनुवाद पढ़िये, गीता, रामायण, योग के साथ-साथ विदेशी लेखकों द्वारा भारत की सांस्कृतिक विरासत के बारे में पढ़िये, ब्रह्माण्ड और नक्षत्रों तथा तारागणों का अध्ययन कीजिये। भारतीय संगीत, आयुर्वेद, शून्य का आविष्कार आदि का अध्ययन कीजिये । हमारे पूर्वजों की ज्ञान राशि से दोचार होकर भारत की गरिमा को बढ़ाने में योगदान कीजिये। गैस पेपर्स को पढ़ना छोड़ कर अच्छी किताबें पढ़िये । अपने मागदर्शन में मैंने अनेक छात्र-छात्राओं का पी.एच.डी. मागदर्शन किया है, जो यहां के कालेजों में व अन्यत्र प्राध्यापक है । ''जिन्दगी जिन्दा दिली का नाम है मुर्दादिल क्या खाक जिया करते हैं ।'' अंत में मेरा संदेश है -

''आशा ही जीवन है - निराशा मृत्यु का दूसरा नाम ।

जो भी जीवित है आशा से जीवित है और जो मृत है निराशा से मृत है।''

अपनी कविता की इस पंक्ति के साथ मैं आपके मंगल भविष्य की कामना करता हूं । सर्वेषां मंगलम् भवतु ।

स्मृति के झरोखे से

गंगा प्रसाद बाजपेयी

मेरे महाविद्यालय का पत्र, प्राचार्य का पत्र प्रतिष्ठा पूर्ण व गरिमामय की भावना लिए प्राप्त हुआ। मैं आत्म विभोर हो गया, मुझ अकिंचन पूर्व छात्र जो पटल से ओझल सदृश्य हो गया है का स्मरण अनिवार्यत: महाविद्यालय परिवार व प्राचार्य की इस भावना की पुष्टि करता है कि वे संस्कारवान है, सयानों का सम्मान करना चाहते है।

मैं बड़े गौरव के साथ प्रतिष्ठा के साथ पूज्य प्रणम्य भावना के साथ महाविद्यालय के संस्थापक प्राचार्य डॉ. बलदेव प्रसाद जी मिश्र (राष्ट्रीय स्तर के विद्वान) प्रोफेसर आनंदी लाल जी पाण्डेय, प्राचार्य प्रो. एन.बी. शास्त्री, प्रो. चन्द्रशेखर अवस्थी, प्रो. छत्रछाया श्रीवास्तव, प्रो. आर.पी. मिश्रा, प्रो. बी.सी. जैन, डॉ. एन.पी. दुबे, डॉ. गजानंद शर्मा, डॉ. राजेश्वर गुरू व अन्य सभी को सम्मान के साथ प्रणाम करता हूं। इनके कारण ही कॉलेज ऊंचाईयों के शिखर सोपान पर पहुंचा व आज स्थापित है। बिलासपुर को श्रेष्ठ बिलासपुर बनाने में इस महाविद्यालय की अग्रणी भूमिका है। इस महाविद्यालय के सैकड़ों विद्यार्थी आज पूरे राष्ट्र में मान-सम्मान पा रहे है।

महाविद्यालय की पत्रिका प्रकाशन की श्रेष्ठ परंपरा है, पत्रिका महाविद्यालय का इतिहास बनाती है।

मैं भावनाओं से भरा हुआ हूं, महाविद्यालय का वर्ष १९५३ का स्नातक हूं, मुझे महाविद्यालय की शिक्षा के कारण जीवन के हर क्षेत्र में सफलता प्राप्त हुई है। मेरा यह महाविद्यालय सागर से (सागर विश्वविद्यालय) गौरवान्वित है, इस महाविद्यालय के इतने श्रेष्ठ विद्यार्थी है जो पूरे राष्ट्र में प्रतिष्ठा पा रहे है।

मैं केवल एक और निवेदन करना चाहूंगा, उस समय विश्वविद्यालय के कुलपति माननीय डॉ. आर.पी. त्रिपाठी राष्ट्रीय स्तर के इतिहास वेत्ता थे। जब वे बिलासपुर आते थे तब उनका मान-सम्मान पूरा जिला प्रशासन, संभागीय प्रशासन गौरव के साथ करता था, हम विद्यार्थी भी अपने को परम् गौरवान्वित करते थे कि इस परंपरा से हम भी प्रशासन तंत्र के समीप सम्मान पाते थे।

मैं पुन: महाविद्यालय परिवार के प्रति अपनी सम्मान की भावनाएं समर्पित करता हूं, उस समय हमारा जो बोध वाक्य (मोटो) था वह था

प्रिय विद्यार्थीगण अपने को गौरवान्वित अनुभव करें कि वे इस कॉलेज के विद्यार्थी है। उनके प्रति यशस्वीमय भावना के साथ।

शुभकामनाओं के साथ।

महाविद्यालय अन्तर्निहित शक्तियों का विकास स्थल

डॉ. वीणा तिवारी
प्राध्यापक - इतिहास विभाग

युवाओं में जोश होता है कुछ कर गुजरने की चाहत होती है, वह भी ऐसा जो किसी ने न किया हो । अन्तर्निहित शक्तियां सबके पास है कौन सी है उन्हें जानना है और उनका विकास करना है । कभी कोई तारीफ करे तो समझ लीजिये कुछ अच्छा आपके पास है । लक्ष्य निर्धारित कर योजनाबद्ध ढंग से कार्य किया जाए तो सफलती मिलती है । असफल भी हुए तो निराश मत होइए क्योंकि असफलता भी सफलता की दिशा में बढ़ाया गया एक कदम है।

कर्म से व्यक्ति अपने भाग्य का बदल सकता है, कृष्ण निष्काम कर्म की बात करते हैं जिसमें फल की इच्छा न की जाए । सत्कर्मो का नियन्ता विवेक है । विवेक तभी जागृत होता है जब शांति और सुबुद्धि हो, इन्हें विवेक के दो पत्नियों के रूप में स्वीकार किया गया है । विवेक तर्कशील और जागृत बनाता है जिससे आनंद की अनुभूति होती है । मनुष्य के पास बुद्धि भी है, मस्तिष्क ऐसा जिसमें स्मरण शक्ति है । मस्तिष्क क्रियाशील हुआ तो उसमें स्वयं से भी तेज चलने वाले कम्प्यूटर का निर्माण कर डाला।

वर्तमान समय में मोबाईल सबके हाथों में है ऐसा लगता है सारी दुनिया ही मुट्ठी में आ गई । क्या उपयोगी और क्या अनुपयोगी है यह तो स्वयं को ही सोचना पड़ेगा । समझदार हो जाने के पश्चात् आप स्वयं अपने निर्माता है । जीवन चुनौतियों से भरा हुआ है उन्हें हंसी के साथ स्वीकार करें । मुसीबत के समय इंसान अकेला रहता है, परेशान व्यक्ति का मनोबल टूटता है, याद रखिए एक रास्ता बंद होता है तो दूसरा खुलता है । किसी का इंतजार करोगे तो पीछे रह जाओगे समय, साधन, परिस्थिति और सामर्थ्य को परखो और योजनाबद्ध तरीके से आगे बढ़ो। मनुष्य का मन मस्तिष्क बड़ा संतुलित होकर कार्य करता है । दिल खुश, प्रसन्नचित्त और सुकून भरा हो तो उद्‌गार हृदय से निकलते है । जैसा आपका मन होगा वैसे की कर्म होंगे । कहा जाता है जैसा खाओगे अन्न वैसा होगा मन । मन की तुलना आकाश से की जाती है, इस चंचल मन को नियंत्रित करना पड़ता है ।

पगों में इतनी शक्ति हो, न हारो पूर्व मंजिल के ।
स्वयं दृढ़तर करो, यदि टूटते हों हौसले दिल के ।।

संयमित, दृढ़निश्चयी और लगनशील विद्यार्थी अपने लक्ष्य तक अवश्य पहुंच जाएगा । महाविद्यालय में उन्हें अवसर और मंच मिलता है । योग्य और कुशल प्राध्यापकों के मार्गदर्शन में अन्तर्निहित शक्तियों को विकसित होने दीजिये। यही आपकी वास्तविक पूंजी होगी ।

CHEMISTRY AND ENVIRONMENT

Dr. Priyanka Tiwari
Asst. Professor
Department of Chemistry

Chemistry is a branch of science that involves study of composition, structure and properties of matter. Environment is everything that is around us. It can be living or non-living. Environmental pollution is the introduction of contaminants into natural environment that cause adverse charges. Over the years, environmental issued such as water and air pollution, climatic changes, renewable energy have become important. Who head warns that air pollution is the new tobacco and 90% fo the world's children are breathing toxic air. Over the years due to industrilization and urbanization pollution has become a major problem in the world 91% of world's populaton lives in places where air quality exceeds WHO guidelines limits. Approximately a million deaths in 2015 were linked to pollution. Water pollution is increasing at alarming rate pure and safe drinking water availability is decreasing for increasing population.

We want to preserve the environment alongwith development. Chemical literacy is vital for environmental care. A deep knowledge of chemistry may be able to identify and evaluate environment risks and able to find solutions. There is huge contribution of chemistry to industrial development many environmental problems and processes are chemicals and to understand them the knowledge of basic chemistry is essential.

Chemists are now searching new methods that are environment friendly biomass, new lighting technologies like OLED's, power alcohols etc. Development of new products that degrade in environment moseasily like biodegradable plastics can help in reducing pollution. The Nobel prize in 2019 in chemistry has been awarded to John B. Good enough, M.S. Whittingham and A. Yoshino "for development of lithium-ion batteries". Lithium batteries are used to power portable electronics and have also enabled the development of electric cars and storage as energy team renewable sourced, such as solar and wind power. It has led to development of fossil-fuel free technologies.

There is important role of chemistry in sustainable development, research and industrial production, so as to reduce the release of less hazardous chemicals into the environment. The young generation should be Come scientifically literate. Knowledge and skills should be developed in students so that they become aware of environmental issues and contribute towards sustainable development. Reduce, reuse and recycle shoulb be the motto.

"Climate change is the environmental challenge of this generation and it is imperative that we act before it is too late". - John Delaney

उरांव लोकगीतों में रसों की अभिव्यक्ति

डॉ. फेदोरा बरवा
सहायक प्राध्यापक - हिन्दी विभाग

लोकगीतों की परंपरा अत्यंत प्राचीन एवं व्यापक है। मानव जीवन में हर्ष-विषाद, आशा-निराशा, दु:ख-सुख आदि अनेक भावों का वर्णन लोकगीतों में मिलता है। मानव के लिये गीत पुरातन समय से ही मीत रहा है। गीत मानव के हृदय से झंकृत होने वाली वह समस्त भावनाएं है जो भीतर से बाहर झरते रहता है, और हर मन को हरते रहता है। लोकगीत अधिकतर ऋतुओं और फसलों की बोहनी, कटाई आदि के साथ मानवीय जीवन की अन्तरंगता है। लोकगीत लोक मानस की वह सहज भावों वेगमयी अनायास अभिव्यक्ति है जिसमें उसके हर्ष-विषाद, उत्थान-पतन, रीति रिवाज, रहस्य, रोमांच, परंपराओं, अंधविश्वासों एवं संस्कारों आदि की झांकियाँ मिलती है, जो लय स्वर से युक्त एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी के स्वरों में लरजता हुआ मौखिक रूप में अपना अस्तित्व और प्रभाव बनाए रखता है।

उराँव आदिवासियों को नाचगान विरासत में मिला है। नाचगान उनके जीवन का अभिन्न अंग है। जिस प्रकार जीविका के लिये खेती बाड़ी के काम बारहों मास होते रहते हैं, उसी प्रकार उनके त्यौहार भी मौसम के अनुकूल आते रहते हैं। उन पर्व त्यौहारों के अवसर पर उराँव जनजातियों के द्वारा जो लोकगीत गाये जाते है उन गीतों में अनायास ही रसों की अभिव्यक्ति प्रस्फुटित होती है।

हम सब साहित्य के रसों से परिचित है। उराँव लोकगीतों में निहित रसों का उल्लेख इस प्रकार है -

1. **शृंगार रस** - उराँप लोकगीतों में शृंगार रस का पूर्ण परिपाक देखने को मिलता है। शृंगार के दोनों रूप संयोग शृंगार एवं वियोग शृंगार के उदाहरण मिलते है।

संयोग शृंगार -
ओ. टोंगरी मईयां पाड़िकन जूड़ी
खेरखेल किया मेंदेरिकी मला रे
कि. मेना गा मेंजेकन जूड़ी
आसिम गा मलिदस बचकन रे

(हे प्रिये पर्वत पर से तुम्हारे लिए गाना गाया। पृथ्वी पर तुम तक मेरी आवाज पहुँची की नहीं। तब प्रियतमा उनसे कहती है - हे प्रिये तुम्हारे गानों के बोल मुझे तक पहुंची पर तुम्ही हो या नहीं यह मैं जान नहीं पाई)

वियोग शृंगार -
ओ. ओंटा एकला जिन्होर मोड़ा
जीना मरेनान तेंगर काला रे (२)
कि. बनी भूती खद्द-खर्रन-पोसके
किचरी गे रूपया तईयोन रे (२)

हे प्रिये घर में एक ही मक्का का लोटना है। जाते जाते ये तो बता के जाओ कि इससे गुजारा कैसे होगा ? तब

प्रियतमा से कहते है - हे प्रिये मजदूरी करके बच्चों का पालन-पोषण करना, कपड़े के लिये मैं रूपया भेजूंगा।

२. **वीर रस** - वीर रस की अभिव्यक्ति उरांव लोकगीतों में भी देखने को मिलती है। बरवै राज में अपने राजा को युद्ध में जीत दिलाने के लिए सिपाही किस तरह संघर्ष करते थे उसका उदाहरण देखिए -

घुमारे-घुमारे तेलेंगा बरछी घुमारे बरोइया राजा

राजा का हजुरे तेलेंगा, बरछी घुमारे बरोइया राजा

३. **शांत रस** - जनजातियों में अशिक्षा के कारण अंधविश्वास और कई रूढ़ियां प्रचलित है। इसलिए देवी-देवता को मनाने की परंपरा रही है। देवी देवताओं की स्तुति, भजन आदि के द्वारा लौकिक और परलौकिक सुख की कामना करते हैं।

इतेक सुंदर धरती के के तो बनावल हैरे।

धरम रूपे भगवान सयो तो बनावल हैरे।

४. **हास्य रस** - उराँव लोकगीतों में हास्य रस का पुट मिलता है। एक व्यक्ति स्वयं तो बहरा है अच्छी भली बछिया में घंटी टांग देता है।

बहिरा रे बहिरा जनम बहिरा

बनचका बछिया नू घंटी टांगचकाय हो हाय।

५. **करूण रस** - उराँव लोकगीतों में करूण रस का पूर्ण परिपाक देखने को मिलता है, बेटी की विदाई के अवसर पर जो गीत गाया जाता है उसमें करूण रस अनायास ही प्रस्फुटित हो उठती है -

आ. हरे ! एंगदन बिसियन हरे ! एंगदन बिसियन

जदी जमगई जिला जलपाई हरे ! एंगदन बिसियन

कि. जूड़ी पेल्लैन एरेन जूड़ी झटिया खराकी

हरे ! एंगदा बरओ दरा कोरओ बेसे लागी।

इस प्रकार हम देखते है कि लोकगीतों में रसों की अभिव्यक्ति उराँव संस्कृति की धरोहर है उनका अभिमान एवं पहचान है। उराँव लोकगीतों में सामाजिक आर्थिक एवं धार्मिक परिस्थितियों का चित्रण एक साथ देखने को मिलता है। लोकगीत जहाँ जीवन में रस घोलते हैं वही श्रम की कलांति को मिलाते है। लोकगीत लोक के लिये ऊर्जा और प्रेरणा का कार्य करते है।

छोटा नागपुर के उराँव आदिवासी अपनी भाषा या बोली में जो गीत गाते है उनका अपना माधुर्य है। ये लोकगीत उराँव जनजाति की अतुल संपदा व अनंत भण्डार है। इस तरह उराँव लोकगीतों की एक लंबी श्रृंखला है जो गगन की तरह असीम है। इन लोकगीतों में यहां की मिट्टी की सोंधी महक बसी हुई है। तथा वातायन में इसका स्वर गूंज रहा है। इस प्रकार लोकगीत हृदय के समस्त उद्‌गारों को व्यक्त करने का एक सशक्त माध्यम है।

FORBIDDEN

Anmol Singha
Asst. Professor
B. MNGT & Commerce Department

What is Forbidden ?

Sometimes I find, why this "FORBIDDEN" is such a beautiful thing. It always entices us towards it like a magnet. Although we know that it is not good for us, that is the reason it is forbidden, but still we get enticed towards it as if, how necessary it is for us ?

We all know, what was "Original Sin" ? It was the consequence of consuming the apple from the "forbidden tree" in Eden Garden by 2 beautiful people and also first two human being made by God. Although they both were strictly ordered by none other than God, not to consume apple from that tree, but they still get attracted and consumed the same and ended up committing Original Sin. This itself shows how sometimes FORBIDDEN itself becomes an Enticer.

Have you ever imagined, why this "FORBIDDEN" is so beautiful ? Why we get attracted towards it so easily ? Is it Shrewd ?

Well I leave this question on your wisdom.

Since childhood, we have been given such "Forbidden Commands" from our elders, whether our parents, Siblings or relatives. For example :

a) Don't play outside in summer days !

b) Avoid watching television late night ! etc.

And what we usually used to do ? Or sometimes do the same even today is, we find the ways to escape from people's eye and try to do what is forbidden. We find a kind of Gratification, don't we ?

Have you ever thought why ?

Remember, in first line I mentioned "Forbidden is Beautiful". Very famous English Romantic poet i.e. Mr. JOHN KEATS has also stated that, "A thing of beauty is joy for ever". So does this mean "FORBIDDEN" will be always such enticing and attractive for us.

IS FORBIDDEN IS ROOT CAUSE OF EVIL ?

If Adam and Eve were explained in place of simply ordered and restricted to go near the forbidden tree, don't you think they have followed that ?

Forbidden always act like cruel securities guard and restricts you to enter the beautiful and attractive castle of evil. But I think, it should be a guide that should explain you the Pros and Cons behind the commands of prohibition.

भारतीय उपभोक्ता बाजार और हिन्दी

डॉ. रंजना गुप्ता
विभागाध्यक्ष - अर्थशास्त्र विभाग

वैश्वीकरण संपूर्ण विश्व को एक ग्राम में तब्दील करने की अवधारणा है। कोई सीमा नहीं कोई सरहद नहीं, कोई दीवार नहीं । वैश्वीकरण के संदर्भ में महात्मा गांधी का यह कथन कितना सार्थक, सारगर्भित एवं प्रासंगिक है - ''मैं नहीं चाहता कि मेरा मकान चारो ओर दीवारों से घिरा हो और उसकी खिड़कियां बंद हो, मैं चाहता हूं सभी देशों की संस्कृतियों, भाषाओं की हवाएं मेरे घर में जितनी आजादी से बह सके बहें लेकिन मैं यह नहीं चाहता कि उनमें से कोई भी हवा मुझे मेरी जड़ों से ही उखाड़ दे।''

वैश्वीकरण एवं औद्योगिक क्रान्ति के फलस्वरूप उत्पादों का निर्माण व्यापक स्तर पर उन उत्पादों की बिक्री व विपणन हेतु नए-नए बाजारों की खोज करना, उससे अधिकाधिक लाभ कमाना एवं उपभोक्तावादी प्रवृत्ति को बढ़ावा देना है। अत: व्यवसायिकता के दृष्टिकोण से अंग्रेजी का पलड़ा अन्य भाषाओं पर भारी रहा है । वैश्वीकरण का भाषा वैविध्य पर भी प्रभाव पड़ा है, भारतीय भाषाएं इससे अछूती नहीं है। हम राष्ट्रीय स्तर पर एक सर्वमान्य संपर्क भाषा का चयन नहीं कर पाए हैं , क्योंकि मातृभाषा हिन्दी को हेय दृष्टि से देखा जा रहा है । मगर भाषाएं इतनी आसानी से खत्म नहीं होती इसलिए हिन्दी समेत अनेक भाषाएं अपनी जगह पर कायम है । किसी भाषा के बोलने वालों की संख्या घट सकती है लेकिन यह भाषा किसी न किसी रूप में बरकरार रहती है । संभवत: यही कारण है कि बहुराष्ट्रीय कंपनियां बड़े पैमाने पर अपने उत्पादों के विज्ञापन न केवल हिन्दी में तैयार कर रही है बल्कि उनमें क्षेत्रीय लहजा भी अपनाने पर जोर दे रही है। यह सच है कि वैश्वीकरण ने संवाद के कई रास्ते खोले हैं, इससे भाषा के मुद्रित स्वरूप पर जरूर आघात पहुंचा है, मगर बाजार ने अपनी जरूरतों को ध्यान में रखकर हिन्दी जैसी भाषा को ज्यादा सम्प्रेषणीय बनाया है । इसने हिन्दी को नया लहजा दिया है, नए शब्द दिए हैं उनमें एक प्रवाह एवं गतिशीलता प्रदान की है । इसी कारण स्टार टी.वी. एवं रसियन चैनल भी हिन्दी में प्रचार-प्रसार करने लगे हैं हिन्दी फिल्में अंतर्राष्ट्रीय क्षेत्र में अधिक पसंद की जा रही है । हमारी भाषा को वैश्विक स्वीकृति मिलने लगी है । इडली, दोसा, चटनी, छोला-भटूरा आदि शब्दों का विश्व के अंग्रेजी कोषों में सम्मिलित किया जाना एक प्रकार की स्वीकृति है जो वैश्वीकरण के परिणाम है । कुल मिलाकर कह सकते हैं कि भाषा समृद्ध हुई है । विश्व पूंजी नियंता बहुराष्ट्रीय निगमों के समक्ष साफ है कि अगर किसी ब्राण्ड को अखिल भारतीय बाजार देना है तो उसे हिन्दी में लांच करना है । इस तरह बाजारवाद ने हिन्दी को सबकी पहली संपर्क भाषा बना डाला । बहुराष्ट्रीय निगमों की समझ में आ गया है कि गांव कस्बे की हिन्दी वाली जनता से उसी के मुहावरे में निपटना होगा । इस तरह जनसंख्या, मार्के, मीडिया और उपभोक्तावाद ने हिन्दी को विश्व में तीसरा स्थान दिलवाया है ।

परन्तु कड़वा सच यह भी है कि जो भाषा व्यापार के काम आएगी वह चलगी और व्यापार या बाजार की भाषा बनने में हिन्दी की मूल प्रवृत्ति नष्ट होने एवं वर्तमान फिल्मी गानों की तरह हिन्दी के रिमिक्स होने की संभावना बढ़ेगी । स्वतंत्रता के पश्चात भारतीय संविधान में हिन्दी को राष्ट्रभाषा का नहीं 'राजभाषा' का स्थान दिया है । दुखद स्थिति यह है कि गुवाहाटी जैसे विश्वविद्यालय में हिन्दी के शोध प्रबंध को अंग्रेजी में स्वीकार किया जाता है । अभी भी हिन्दी पूरी तरह से सरकारी कामकाजों में भी प्रयुक्त नहीं होती है । राजभाषा विभाग ज्यादातर अनुवाद का ही कार्य करता रहा है । नोबेल

पुरस्कार भी उन्हीं रचनाओं को मिलने की संभावना रहती है जो अंग्रेजी में अनुवादित होती है। लोकतंत्र के स्वास्थ्य के लिए आवश्यक है कि शासन उस भाषा में किया जाए जो अधिकांश जनों के लिए सुगम हो। जब हिन्दी ज्ञान-विज्ञान की भाषा बनेगी तो इसमें ज्ञान का सृजन होगा और यह रोजगार देने वाली भाषा बन जायेगी। तब उसे वह प्रतिष्ठा प्राप्त हो जायेगी जिसकी वह हकदार है।

वैश्वीकरण और हिन्दी

डॉ. किरण एक्का
सहायक प्राध्यापक - अर्थशास्त्र विभाग

हिन्दी भारत की सर्वाधिक प्रचलित और समृद्ध भाषा है। हिन्दी की वर्तमान स्थिति में कहीं न कहीं वैश्वीकरण का योगदान है। वैश्वीकरण की मूल संकल्पना व्यापार, विदेशी निवेश द्वारा आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक व्यवस्था पर अधिग्रहण तथा आपसी समन्वय, आदान-प्रदान के माध्यम से एक मंच का निर्माण करने की प्रक्रिया के रूप में उभरती है। इन सब में भाषा की भूमिका अत्यंत महत्वूर्ण है। वैश्वीकरण के बाद हिन्दी भी एक नई भूमिका में हमारे सामने आयी है।

वैश्वीकरण के इस दौर में भारत का कॉरपोरेट जगत हिन्दी को हाथों-हाथ स्वीकार कर रहा है। भारत में उपभोक्ता वस्तुओं के वृहद् बाजार को अनदेखा नहीं किया जा सकता। विदेशी कंपनियों के लिए भारतीय बाजारों के खुलने के साथ ही कई बहुराष्ट्रीय कंपनियों ने भारत में पर्दापण किया है। इन कंपनियों को यह अनुभव था कि किसी भी देश में वहां की भाषा और संस्कृति को जाने बिना अपने पांव जमाना आसान नहीं है। ऐसे में इन कंपनियों ने अपने उत्पादों को भारतीय जरूरतों के हिसाब से ढालकर पेश किया। अपने उत्पादों के विपणन के लिये इन कंपनियों ने हिन्दी भाषा को चुना क्योंकि हिन्दी भारत जैसे विशाल देश की प्रमुख संपर्क भाषा है।

हिन्दी के वैश्विक स्वरूप को संचार माध्यमों में भी देखा जा सकता है। संचार माध्यमों ने हिन्दी के वैश्विक रूप को गढ़ने में पर्याप्त योगदान दिया है। भाषाएं संस्कृति की वाहक होती है। आज स्मार्टफोन के रूप में हर हाथ में एक तकनीकी डिवाइस मौजूद है और उसमें भी हमारी भाषा है। सभी ऑपरेटिंग सिस्टमों में हिन्दी में संदेश भेजना, हिन्दी की सामग्री को पढ़ना, सुनना या देखना लगभग उतना ही आसान है जितना अंग्रेजी की सामग्री को देखना। मोबाइल ने हिन्दी के प्रयोग को अचानक गति दे दी है।

आज सर्वाधिक विज्ञापन हिन्दी में आते हैं। इंटरनेट और सोशल मीडिया पर भी हिन्दी का प्रभाव बढ़ा है। कई सॉफ्टवेयर और हार्डवेयर अन्तर्निर्मित हिन्दी यूनिकोड की सुविधा के साथ आ रहे हैं। इससे हिन्दी की तकनीकी समस्याएं लगभग समाप्त हो गई है। आज भारत वैश्विक अर्थजगत में महाशक्ति बनकर उभर रहा है। ऐसे में हिन्दी की भूमिका व्यापक होगी। हिन्दी भारत की राजभाषा, संपर्क भाषा से आगे बढ़ते हुए विश्व भाषा बनने की ओर अग्रसर हो सकती है।

संस्कृत बनेगा नासा की भाषा

कु. गिरिजा गुप्ता
अतिथि प्राध्यापक - संस्कृत

हिन्दुस्तान में वेद, ग्रंथ और कथा शास्त्रियों की जुबां एवं सिमटी संस्कृत की गूंज कुछ साल बाद अंतरिक्ष में सुनाई दे सकती है। वेदभाषा के वैज्ञानिक पहलू का मुहिम अमेरिका इसे नासा की भाषा बनाने की कसरत में जुटा है। इस प्रोजेक्ट पर भारतीय संस्कृत विद्वानों के इंकार के बाद अमेरिका अपनी पीढ़ी को इस भाषा में पारंगत करने में जुट गया है।

गत दिनों आगरा दौरे पर आए अरविन्द फाउंडेश (इंडियन कल्चर) पांडिचेरी के डायरेक्टर संपदानंद मिश्रा ने जागरण से बातचीत में यह खुलासा किया। उन्होंने बताया कि नासा के वैज्ञानिक रिक ब्रिग्स ने 1985 में भारत से संस्कृत के एक हजार प्रकांड विद्वानों को बुलाया था। उन्हें नासा में नौकरी का प्रस्ताव दिया था। उन्होंने बताया कि संस्कृत ऐसी प्राकृतिक भाषा है, जिसमें सूत्र के रूप में कम्प्यूटर के जरिए कोई भी संदेश कम से कम शब्दों में भेजा का सकता है। विदेशी उपयोग में अपनी भाषा की मदद देने से उन विद्वानों ने इंकार कर दिया था।

इसके बाद कई अन्य वैज्ञानिक पहलू समझते हुए अमेरिका ने वहां नर्सरी क्ला से ही बच्चों को संस्कृत शिक्षा देना शुरू कर दिया है। नासा के मिशन संस्कृत की पुष्टि उसकी वेबसाइट भी करती है। उसमें स्पष्ट लिखा है कि 20 साल से नासा संस्कृत पर काफी पैसा और मेहनत कर चुकी है।

अमेरिका में स्पीच थैरेपी -

आगरा वैज्ञानिकों का मानना है कि संस्कृत पढ़ने से गणित और विज्ञान की शिक्षा में आसानी होती है, क्योंकि इसके पढ़ने से मन में एकाग्रता आती है। वर्णमाला भी वैज्ञानिक है। इसके उच्चारण मात्र से ही गले का स्वर स्पष्ट होता है। रचनात्मक और कल्पना शक्ति को बढ़ावा मिलता है। स्मरण शक्ति के लिए भी संस्कृत काफी कारगर है। मिश्रा ने बताया कि काल सेंटर में कार्य करने वाले युवक-युवती भी, संस्कृत का उच्चारण कर अपनी वाणी को शुद्ध कर रहे हैं। न्यूज रीडर, फिल्म और थियेटर के आर्टिस्टों के लिए यह एक उपचार साबित हो रहा है। अमेरिका में संस्कृत को स्पीच थेरेपी के रूप में स्वीकृति मिल चुकी है।

सर्वे भवन्तु सुखिन:, सर्वे सन्तु निरामया: ।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु, मा कश्चिद् दु:खभाग भवेत् ।।

हिन्दी कम्प्यूटिंग का इतिहास एवं वर्तमान में डिजीटल दुनिया में हिन्दी का महत्व

सबसे पहले हिन्दी टाइप वर्ड स्टार (वर्जन प्लस) नामक सॉफ्टवेयर में किया गया। फिर विंडोज और पेजमेकर सॉफ्टवेयर में हिन्दी टाइप का उपयोग किया जाने लगा। इस समय कम्प्यूटर हिन्दी का उपयोग प्रिंटिंग तक ही सीमित था। सन् 1991 में यूनिकोड आया जिसमें हिन्दी वर्णमाला के सभी अक्षरों को कम्प्यूटर में दर्शाया जाने लगा।

यूनिकोड के कारण माइक्रोसाफ्ट आफिस साफ्टवेयर में 8 बिट हिन्दी फाण्ट से हिन्दी में वर्ड प्रोसेसिंग किया जाने लगा। सन् 1995 के आसपास इंटरनेट पर हिन्दी का पर्दापण हुआ। 14 सितम्बर 1996 को हिन्दी दिवस के अवसर पर पीसी-डॉस के हिन्दी संस्करण का विमोचन हुआ जिसमें एक हिन्दी प्रोग्रामिंग भाषा भी शामिल थी।

29 अप्रैल 2002 को सी-डैक द्वारा हिन्दी ओसीआर साफ्टवेयर चित्रांकन का विमोचन किया गया। सन् 2003 में जीमेल के जरिये हिन्दी में ई-मेल की सुविधा आई। मई 2008 में गूगल ट्रांसलेट में हिन्दी से अन्य प्रमुख विदेशी भाषाओं में अनुवाद की सुविधा लाई गई।

वर्तमान में उपयोग में लाये जाने वाले मोबाईल फोन स्मार्ट फोन है, जिसकी आत्मा एण्ड्रॉइड ऑपरेटिंग सिस्टम है। एण्डराइड ऑपरेटिंग सिस्टम में पहले हिन्दी कम्प्यूटिंग नहीं हो पाता था बाद में गूगल ने जून 2012 को एण्डराइड के संस्करण में 4.1 में हिन्दी की-बोर्ड को शामिल किया जिसके फलस्वरूप हिन्दी कम्प्यूटिंग की जा रही है।

जनवरी 2014 में विण्डोज फोन पर हिन्दी समर्थन उपलब्ध हुआ। मई 2014 तक मोबाईल एवं कम्प्यूटर में हिन्दी के अक्षरों को की-बोर्ड की सहायता से इनपुट किया जाता था। जून 2014 में गूगल की एण्डराइड हिन्दी वायस रिकॉग्नीशन सुविधा के तहत हिन्दी अक्षरों को बोलकर टाइप करने की सुविधा आयी।

वर्तमान में डिजीटल इण्डिया के तहत भारत का हर नागरिक किसी न किसी माध्यम से डिजीटल दुनिया के साथ जुड़ रहा है। डिजिटल इंडिया भारत सरकार की एक पहल है जिससे सरकारी विभागों एवं भारत के लोगों को एक दूसरे के पास लाया जा रहा है। भारत में सरकारी विभागों के द्वारा काम या रिकार्ड हिन्दी भाषा का प्रयोग करके बनाया जाता है क्योंकि वर्तमान में अब सरकारी विभाग डिजिटल इंडिया के माध्यम से डिजिटल दुनिया में हिन्दी का महत्व बढ़ रहा है, साथ ही भारत के लोग हिन्दी भाषा को ही अच्छे से समझते है। इसके लिए हिन्दी उपयोगिता डिजिटल दुनिया में जरूरी है, इसके लिए सरकार हर तरह से प्रयास कर रही है कि डिजिटल इण्डिया के अंतर्गत सारे काम हिन्दी में हो और हिन्दी के महत्व को डिजिटल दुनिया में और बढ़ाने के लिए लगभग सारे एप्लीकेशन में हिन्दी भाषा का उपयोग कराया जा रहा है। जिसके फलस्वरूप वर्तमान में भारत का हर नागरिक हिन्दी भाषा का उपयोग आज डिजिटल दुनिया में कर रहे है।

अनोखी संजीवनी

कु. अंजू
बी.एस.सी. अंतिम

यदि आप सज्जन बनना चाहते है, तो निम्नलिखित औषधि का सेवन करें :-

औषधि का नाम :- सच्चाई के पत्ते, ईमानदारी की जड़, मिलाप के आंवले, संगठन के पान, उदारता की अर्क, वाणी की मिठास, दया का छिलका, परोपकार का बीज, सत्संग का रस, स्वदेशी प्रेम का शहद।

विधि :- इन वस्तुओं में परमात्मा रूपी घी मिलाकर प्रेम के चूल्हे पर रखकर, ध्यान के आंच में अच्छी तरह पकायें व पक जाने पर उतारकर ठंडा करके प्यार से छानकर मस्तिष्क की शीशी में भर लें।

सेवन विधि :- इस औषधि को प्रतिदिन संतोष के अनुसार इंसाफ के चम्मच से खायें।

परहेज :- क्रोध का मिर्च, अहंकार का तेल, धोखे का पापड़, दुराचार का आचार।

चलो बढ़ाए एक कदम

कु. शिवानी भोंसले
बी.एस.सी. प्रथम वर्ष

- आज भी कुछ ऐसे लोग है जिन्हें खाने के लिए दो वक्त की रोटी नसीब नहीं होती। ख्वाहिश तो उनकी भी होती है, खुशियों की जिंदगी जीने की, जिन्हें त्यौहारों में नये कपड़े नसीब नहीं होती।
- कितना बुरा लगता है यह सोचकर कि जब कोई हमारे सामने हाथ फैलाता है और हम कहते हैं छुट्टे नहीं है। अरे! जरा देखो उन्हें जिनके नसीब में गरीबी और बदनसीबी के सिवा कुछ नहीं है।
- इतनी दूरियां क्यों है अमीरी और गरीबी के बीच जिन्हें बनाने वाले एक है। चलो मिटाये उन दूरियों को क्योंकि दूरियां बढ़ाने वाले अनेक है।

पेड़ ही वरदान

जितेश पटेल
बी.ए. द्वितीय वर्ष

वृक्ष ही जिंदगी, वृक्ष बंदगी
वृक्ष साधना, वृक्ष आराधना
वृक्ष परिंदों का आशियाना
वृक्ष से पलते सभी घराना

धरती के श्रृंगार है वृक्ष
जीवन के आधार है वृक्ष
वृक्ष से चलती सांसे सबकी
वृक्ष बचाए प्राण-हमारी
धरती के श्रृंगार है वृक्ष
जीवन के आधार है वृक्ष
धर्म पुकारे ग्रंथ पुकारे
पुकारे दशो दशाएं .....
वृक्ष लगाओ, वृक्ष बचाओ
धरती का श्रृंगार सजाओ
वृक्ष दे छाया, पुत्र दे माया .....
वृक्ष बांटे सुगंध बहार
वृक्ष फल-फूल बरसाए
हरियाली जो मन को हर्षाय
वृक्ष ही मंदिर, वृक्ष ही पूजा
वृक्ष के जैसा नहीं कोई दूजा
वृक्ष की महिमा करे बखान
जितेश बांटे सबको यही ज्ञान

मेरी सोमनाथ यात्रा

कु. निधि दुबे
बी.एस.सी. अंतिम वर्ष

भारत विविधताओं का देश है, प्राचीनता के साथ इसका गौरवशाली इतिहास है। भारत में कई ऐतिहासिक स्थल है, दर्शन की अभिलाषा हमारे मन में हमेशा बनी रहती है। इसी चाव से हमने गुजरात स्थित सोमनाथ के ऐतिहासिक मंदिर देखने का निश्चय किया और योजना बनायी।

सोमनाथ जाने का मेरा उत्साह अपने चरम पर था क्योंकि एक तो बचपन से किताबों में सोमनाथ मंदिर के बारे में पढ़ते आ रहे थे और सभी ज्योर्तिलिंगों में प्रथम ज्योतिर्लिंग के दर्शन के आनंद की लालसा थी। तथा अगले दिन हम प्रात: 5 बजे ट्रेन से रवाना हुए, हम सोते रहे और ट्रेन अपनी गति से चलती रही, एक-एक करके स्टेशन पार होते गए। सुबह लगभग 7 बजे हम वेरावल पहुंच गए। वेरावल सोमनाथ से कुछ 8 कि.मी. पहले का एक कस्बा है। वेरावल से हमने ऑटो रिक्शा किया और सोमनाथ पहुंचे।

वेरावल से सोमनाथ के उस सात-आठ किलोमीटर के रास्ते में मुझे बहुत सारी ऐसी चीजें देखने को मिली जो मैंने जिंदगी में पहली बार महसूस की थी। जैसे मैंने नारियल के इतने सारे पेड़ एक साथ कभी नहीं देखे और समुद्र का किनारा होने की वजह से यहां सुखी मछलियों की बड़ी जबरदस्त और जानलेवा गंध फैली हुई थी। वेरावल से सोमनाथ के बीच पूरे समुद्री किनारे पर भारी संख्या में नावें और जहाज का निर्माण होते हुए देखा।

सोमनाथ आगमन -

मंदिर परिसर में प्रवेश करते ही मंदिर के ऊपर लगे विशाल ध्वज को देखा जो हजारो वर्षो से भगवान सोमनाथ का यशगान करता आ रहा है जिसे देखकर शिव की शक्ति का, उनकी ख्याति का अहसास होता है। आसमान को स्पर्श करता मंदिर का शिखर देवाधिदेव की महिमा का बखान करता है।

मंदिर की सुरक्षा व्यवस्था बहुत कड़ी थी। सोमनाथ मंदिर का इतिहास बताता है कि मंदिर पर कई आक्रमण हुए जिससे वास्तविक स्वरूप नष्ट होता रहा। मंदिर पर 17 बार महमूद गजनवी ने आक्रमण किया बाद में जिसका जीर्णोद्धार सरदार वल्लभ भाई पटेल द्वारा कराया गया। मंदिर के अंदर पहुंचते ही पहली भेंट भगवान के प्रिय वाहन नंदी से होती है, उसके पश्चात् मस्तक पर चन्द्रमा को धारण किए हुए देवों के देव महादेव का बड़ा शिवलिंग है जिस पर चंदन से ओम अंकित था। बेलपत्र और फूलों की माला से शिवलिंग का शृंगार किया गया था। उनके दोनों किनारे भगवान ब्रह्मा और विष्णु की मूर्तियां क्रमश: दांयी और बांयी ओर अवस्थित है। हमने पूजा-अर्चना की और बाहर निकल आये। मंदिर प्रांगण में शाम 7.30 बजे से 8.30 बजे तक साउंड और लाइट शो चलता है जिसमें मंदिर के इतिहास का बड़ा ही सुंदर चित्रण होता है।

मंदिर की आंतरिक साज-सज्जा, सुंदर नक्काशी और उत्कृष्ट कारीगरी को देखकर हम हतप्रभ रह गए। वहां समीप स्थित समुद्र की घनघोर आवाज करती हुई लहरे हमें तट पर बार-बार छूने के लिए दौड़ रही थी। ठंडी समुद्री हवाओं में घुली तरलता ने अब हमारे चेहरे से थकान की परतों को धो दिया और हम समुद्री लहरों का मजा लेने लगे, डूबते सूरज का अद्भुत दृश्य आज भी हमारे मनमस्तिष्क में स्थित है।

सुबह-सुबह हम लोग वहां से निकट में स्थित भालका तीर्थ मंदिर गये यहां पर श्रीकृष्ण जी की एक लेटी हुई प्रतिमा

है। किवदन्ती है कि यहीं पर ''जर'' नामक एक शिकारी ने श्री कृष्ण को हिरन समझ कर तीर मारा था, जिससे घायल होकर उन्होंने अपने प्राण त्याग दिये थे। इसी के आगे त्रिवेणी संगम है जहां तीन नदियों हिरण, कपिला, और सरस्वती का महासंगम है, मान्यता के अनुसार यहीं पर श्रीकृष्ण के पार्थिव शरीर का अंतिम संस्कार हुआ था।

त्रिवेणी संगम के ही निकट गीता मंदिर है। इसकी दीवारों पर गीता के अध्याय लिखे हुए है। सोमनाथ के तट पर बाणगंगा नामक एक तीर्थ है, इस जगह पर एक शिव लिंग है, जो कि समुद्र के अंदर स्थित है। बाहर से ही मंदिर की भव्यता और विशालता को देखकर मंत्रमुग्ध हो गए। समुद्र के एकदम किनारे विशाल मंदिर और मंदिर परिसर का शांत और सौम्य वातावरण मन को शांति प्रदान कर रहा था।

हम लोग वहां से पुन: वापस लौट आये, लेकिन अभी तक वहां की स्मृतियां तरोताजा मन में है, जो हम लोगों ने इस यात्रा के दौरान अनुभव किया। यह यात्रा मेरे लिए बहुत यादगार थी।

यात्राओं का जीवन में विशिष्ट महत्व है, ऐतिहासिक दृष्टि से महत्वपूर्ण स्थानों की यात्रा से मनोरंजन के साथ-साथ ऐतिहासिक घटनाओं, परंपराओं और अतीत के धरोहरों का ज्ञान प्राप्त होता है।

जीवन पर मेरे विचार

कु. रोशनी सूर्यवंशी
बी.एस.सी. प्रथम वर्ष

कभी भी उनसे मत डरिये जो बहस करते है पर उनसे जरूर करिये जो चाल चलते है। दो बातें अपने अंदर पैदा कर लो एक तो चुप रहना और दूसरा माफ करना। क्योंकि चुप रहने से बेहतर कोई जवाब नहीं और माफ कर देने से बेहतर कोई सजा नहीं। जिन्दगी में कभी भी अपने हुनर पर घमंड मत करना क्योंकि पत्थर जब भी पानी में गिरता है तो अपने ही वजन से डूब जाता है। जिन्दगी में तीन लोगों को कभी मत भूलना - मुसीबत में साथ देने वालों को जहां दूसरों को समझाना कठिन हो वहां खुद को समझा लेना ही बेहतर होता है। जीवन में यदि कोई आपके किये गये कार्य की तारीफ ना करें तो चिंता मत करना क्योंकि आप उसी दुनिया में रहते है जहां जलता तो तेल और बाती है और लोग कहते है दीपक जल रहा है। अपने दुश्मन को हजार मौके दो कि वो आपका दोस्त बन जाये लेकिन अपने दोस्त को एक भी मौका मत दो कि वो आपका दुश्मन बन जाये। अपनों का साथ कभी मत छोड़ों क्योंकि जिन्हें अपने छोड़ते है वो गैरो के हाथ लग जाता है। जिंदगी में ऐसे इंसान पर कभी जुल्म मत करना जिसके पास पुकारने के लिए परमात्मा के अलावा कोई न हो। केवल अच्छा दिखो नहीं बल्कि अच्छा बनो भी किसी की पीठ के पीछे बस एक ही काम करना और वो है उसके लिए दुआ करना। दूसरों पर हंसने से बेहतर है खुद पर हंसा करो क्योंकि दूसरों पर हंसने से अहंकार बढ़ता है और खुद पर हंसने से अहंकार टूटता है, रोने का टाइम कहां सिर्फ मुस्कुराओ चाहे ये दुनिया कहे पागल, आवारा बस याद रखना जिंदगी मिलेगी न दोबारा। दुश्मन बनाने के लिए जरूरी नहीं कि किसी से लड़ा जाये हम जिंदगी में थोड़ा सफल हो जाये अपने आप दुश्मन बन जायेंगें। हमें गुरू भी सिखाते

है और वक्त भी, फर्क बस इतना होता है कि गुरू सिखाकर इम्तहान लेते है और वक्त इम्तहान लेकर सिखाते हैं । अगर ठुकरा दिया है तुम्हें किसी ने तुम्हारा वक्त देखकर तो तुम भी कसम खाओ की ऐसा वक्त लाओगे कि मिलना पड़े उसे तुम्हारा वक्त लेकर । मुझे मेरे भाग्य से ज्यादा ही मिला है क्योंकि यदि कभी मेरे पांव में जूता नहीं रहता तो मैं मायूस नहीं होती क्योंकि जो लोग मुझसे जलते है मैं उनसे कभी गुस्सा नहीं होती क्योंकि यही वो लोग है जो समझते है कि मैं उनसे बेहतर हूं अगर मुझसे कोई कुछ मांगे तो मैं दे देती हूं क्योंकि मैं शुक्रगुजार हूं कि ईश्वर ने मुझे देने वाला बनाया है मांगने वाला नहीं । सफलता हमें तभी मिलती है जब हमारे सपने हमारे बहानों से बड़े हो जाते है । ये मायने नहीं रखता कि आप दुनिया में कैसे है बल्कि ये मायने रखता है कि आप इस दुनिया से कैसे जायेंगें । जीने का बस यही अंदाज रखो जो तुम्हें ना समझे उसे नजरअंदाज करो । धूप का नाम तो वैसे ही बदनाम है वरना लोग जलते तो एक-दूसरे से भी कम नहीं है । संसार का एकमात्र मनुष्य ही ऐसा प्राणी है जिसका जहर उसकी दांतों में नहीं बल्कि बातों में होता है । अपने लिये ना सही लेकिन उनके लिए कामयाब बनो जो आपको नाकामयाब देखना चाहते है जब तक तुम डरते रहोगे तुम्हारी जिंदगी का फैसला कोई और लेता रहेगा। इसलिए हमेशा तैयारी के साथ रहना चाहिये । क्योंकि मौसम और इंसान कब बदल जाये पता नहीं चलता ।

परिंदे की ख्वाहिश

कु. तनु सोनटेके
बी.कॉम. प्रथम वर्ष

परिंदे की ख्वाहिशों को दबाओ मत, उसे उड़ना आता है ....
बार-बार उसे उलझाओ मत ।

कोई बड़ी ख्वाहिश थोड़ी न है, उसे तो बस ऊँचाईयां छूनी है,
तुम नहीं कर पाओगे, तुम नहीं कर पाओगे
ये कहकर उसके आत्मविश्वास को तो गिराओ मत

उसे एक मौका तो देकर देखो, शायद वो सफल हो जाये,
बार-बार उसके ख्वाहिशों को दबाकर उसे तो ठेस पहुँचाओं मत

किसी को समझे बिना तुमने कैसे अनुमान लगा लिया .....
बस अब रूक जाओ ये गलतियां दुबारा दोहराओ मत ।
परिंदे खुले आसमान के मुसाफिर है,
इन्हें बांध कर तो तुम दफनाओ मत ।
रूको ! .... एक और बात कहती है तुमसे
हां किसी का दिल तो दुखाओ मत,
परिंदे की ख्वाहिशों को दबाओ मत ।

एक वतनपरस्त इंसान

कु. मुस्कान खातून
बी.कॉम. प्रथम वर्ष

नाम सुनते ही लोग पूछते है
कि हिंदू है या मुसलमान .... ?
तो सुनो न हम हिंदू है न मुसलमान है,
हम तो सिर्फ एक वतनपरस्त इंसान है।
और वतन अपना सिर्फ हिंदुस्तान है।
मिटा दो हर सोच से मजहब का निशान
बस बाकी रहे दिलों में सिर्फ और सिर्फ हिंदुस्तान
क्या करोगे ? जानके क्या मजहब ? क्या ईमान है ?
बस याद रखो दिल हिंदुस्तानी और जान हिंदुस्तान है ।
हम न हिंदू है न मुसलमान है, वतनपरस्ती ही मजहब और
ईमान है क्योंकि हम हिंदुस्तानी और वतन सिर्फ हिंदुस्तान है
हो जाऊं उदास तो तिरंगे को देखकर
चेहरे पर छा जाती एक मुस्कान है,
तभी तो हर दिल में बसता हिंदुस्तान है।
न हम हिंदू है न मुसलमान है,
हम तो सिर्फ एक वतनपरस्त इंसान है।

Things we need to Understand

Manish Kukreja
B.Sc.-III, (Mathematics)

Studies are highly value in today's new era, but the students did not know what significance these subjects really have in their original life. We move only like sheep's move and in the end we face many problems. Through this article, I will try to cover some of the problems which primally affect those students who think and what is the reality behind them.

First of all if subject like mathematics are talked about then there are many confusions in the minds of the students such as what is the real meaning of integration, differentiation trigonometry but the correct meaning of mathematics is to increase the problem solving ability. The principles of mathematics are also used in practical life, from which one in integrating Device which is usually seen as the power metre in which the process is done with the help of integration. Solving the confusion I would I like to present the real definition of integration which can be thought of as adding together the pieces something to reconstruct where as Differentiation can be thought of as the instantaneous rate of change of something.

Now if I talk about chemistry then chemistry addressess topics such as how atoms and molecules interact viachemical bonds to form new chemical compounds. Various types of research in this subject which are researched in the subject of medicines and other things which can lead to human welfare. Here in this subject we know a term which is called titration students have this feeling that they have no significance. But it can be defined as a technique where a solution of known concentration is used to determine the concentration of an unknown solution.

Therefore, there is no such thing in those subjects which is useless because if this happens then it would never taught to us. concluding my words I would just like to tell one thing that there are several things that wee need to understand but we never wants to do so, we only want our profit, either it is good or bad we just want to achieve it without knowing the real meaning therefore on should know his aim and if not then he is equivalent to a gun without bullet.

दिव्य मन

रितेश उपाध्याय
बी.ए. द्वितीय वर्ष

दिव्य बन पवित्र बन गीता का तू गीत बन .....

राम की छवि है तुझमें कृष्ण का तू गीत है
माँ भारती का पुत्र तू हिन्दुत्व की संतान है
तू खुद को यूं बनाता चल यूं मुश्किलो को हराता चल
हताश हो ना बैठ तू ऐसा ना आए कोई पल
टीपू सा सुल्तान है सुभाष सा महान है
जिन्दगी को ऐसे जी लगे कि तुझमें जान है
इतिहास के पन्नों पर छाप तू अमिट बन
दिव्य बन पवित्र बन, गीता का तू गीत बन .....

जो सोच ले वह कर दिखा ख्वाबों को न तू दबा
कठिनाइयां तो आनी है सिर को यूं ना झुका
नरेंद्र का व्यक्तित्व है गांधी की है तुझमें शीलता
फिर क्यों होता निराश तू, क्यों आती तुझमें हीनता
खुद को यूं ना तू गिरा तेज का प्रतीक बन
दिव्य बन पवित्र बन, गीता का तू गीत बन

वाणी में हो नम्रता व्यक्तित्व में ओजस्विता
रोक ना सकें तुझे पर्वतों की भी श्रृंखला
जो गिर पड़े तो बीज सा, फिर उठ खड़ा हो वृक्ष सा
जो शूल के हो रास्ते तो बना ले खुद को झील सा

शिवा का चातुर्य तुझमें महाराणा की है वीरता
फिर क्यों डरे पराजय से तू क्यों आती तुझमें धीरता
डरा सके ना मुश्किलें ऐसा तू अजीत बन
दिव्य बन, पवित्र बन गीता का तू गीत बन ...!!

मेरी सोच मेरा सपना

कु. श्रद्धा चंद्रवंशी
बी.एस.सी. अंतिम वर्ष

हर खुशी है लोगों के दामन में
पर एक हंसी के लिए वक्त नहीं
दिन रात दौड़ती दुनिया में,
जिंदगी के लिए वक्त नहीं
मां की लोरी का एहसास है, पर
मां को मां कहने का वक्त नहीं
सारे रिश्तों को तो हम मार चुके है,
अब उन्हें दफनाने का वक्त नहीं,
मां बाप की उम्मीदों का सपना आंखों में,
लेकिन उनको सच करने के लिए वक्त नहीं,
बचपन में जिनके पास बैठकर कहानियां सुना करते थे,
आज उनके हाथ-पैर दबाने का वक्त नहीं
सभी दोस्तों की यादें है दिल में
पर दोस्ती के लिए वक्त नहीं,
गैरो की क्या बात करे,
जब अपनों के लिए वक्त नहीं
आंखों में नींद बड़ी है,
पर सोने के लिए वक्त नहीं
दिल है गमों से भरा हुआ
पर रोने के लिए वक्त नहीं
पराए के एहसास की क्या करें,
जब अपने सपनों के लिए वक्त नहीं
जीवन की नैया बीच भंवर में,
पार लगाने का वक्त नहीं,
अब तू ही बता ऐ जिंदगी
इस जिंदगी का क्या होगा
कि हर पल जीने वालों को
मरने के लिए वक्त नहीं।

क्या कसूर था मेरा

किरण यादव
बी.एस.सी. अंतिम वर्ष

क्या कसूर था मेरा, जो उस वक्त अकेली थी
ना मां बाबा थे साथ, ना कोई सहेली थी
भेड़ियों के झुंड ने आकर नोंच लिया
बेबस मुझे पाकर, सब कुछ मेरा लूट लिया
मुझसी कितनी ''निर्भया'' यूंही बली चढ़ेगी
देश को खून चाहिए, तो क्या ये ऐसे लेगी ,
समाज के डर से कब तक चुप रहूं,
अधिकारियों के सवालों से आखिर कब तक
घर हो या हो सार्वजनिक जगह मैं कहीं सुरक्षित नहीं
डॉक्टर हो या हो सार्वजनिक जगह मैं कहीं सुरक्षित नहीं
डॉक्टर हो या नेता, क्या कोर्ट इतना भी शिक्षित नहीं
पाल पोस कर बड़े लाड़ से मां बाप ने बड़ा किया
फिर आत्महत्या करने क्यों शासन और
समाज ने मजबूर किया ।
अब तो बस इस समाचार पत्रों का कोई कॉलम रह जाऊंगी
कुछ दिनों बाद मैं भी 'निर्भया'
जैसे एक इतिहास बन जाऊंगी ।

"Orange Day - He for She"

संजय रात्रे
बी.एस.सी. अंतिम वर्ष (बॉयो)

25 नवंबर ''अंतर्राष्ट्रीय महिला हिंसा उन्मूलन दिवस'' मनाया जाता है। यह दिवस डोमिनिक तानाशाह राफेल त्रजिलो द्वारा सामाजिक कार्यकर्ता मीराबल बहनों की हत्या के विरोध मे मनाया जाता है।

संयुक्त राष्ट्र संघ ने इस वर्ष 25 नवंबर पर ''Orange Day'' मनाने की घोषणा की है। यह 25 नवंबर से शुरू होकर 10 दिसंबर अंतर्राष्ट्रीय मानवधिकार दिवस तक चलेगा।

इसमें महिलाओं के अधिकारों हेतु 'ही फार शी' "He for She" नाम से एक वैश्विक अभियान की शुरूआत की। इस अभियान का मुख्य उद्देश्य महिलाओं के खिलाफ हो रही हिंसा को समाप्त करना है क्योंकि महिलाओं के खिलाफ हिंसा मानवाधिकार का उल्लंघन हैं।

बोल प्यार भरे

प्रेरणा देशमुख
बी.एस.सी. प्रथम वर्ष

दो बोल प्यार के जब प्यार से बोलोगे,
नफरत का घना साया पीछे छोड़ आओगे
जो तुम खुशियो के पल लुटाओंगे
नफरत की कठोर दीवार तोड़ पाओगे।।
इंसाफ कुदरत का गलत नहीं होता
मिलेगा वही जो तुम उगाओगे।
गर प्यार बांटना जीवन में तुम सीख लोगे
नई सोच से संसार को सींचते चलोगे।।
दुनिया बदरंग नहीं, नजारों से भरी है
हसीन सपने यहाँ तुम बुनते चले चलोगे
दो बोल प्यार के जब प्यार से बोलोगे
नफरत का घना साया पीछे छोड़ जाओगे।

सब कुछ बिकता है

पिंटू यादव
बी.ए.. द्वितीय वर्ष

जो भाग्य में हैं वह
भाग कर आयेगा
जो नही है, वह
आकर भी भाग जायेगा,

यहाँ सब कुछ बिकता हैं।
दोस्त रहना जरा संभल के
बेचने वाले तो हवा भी
बेच देते है, गुब्बारों में डाल के,

सच बिकता है, झूठ बिकता है
बिकती है, हर कहानी
तीनो लोक में फैला है फिर भी
बिकता है बोतल में पानी।

कभी फूलों की तरह मत जीना,
जिस दिन खिलोगे टूटकर बिखर जाओगे,
जीना है तो, पत्थर की तरह जियो
जिस दिन तराशे गये, भगवान बन जाओगे।।

" अच्छा दिन खुशियां लाता है और बुरा दिन अनुभव, जिंदगी के लिए दोनों ही जरुरी है "

छोटी पर महत्वपूर्ण बातें

मनीष कुमार गुप्ता
सहा.ग्रेड-3

**जिंदगी में एक दूसरे के जैसा होना आवश्यक नहीं है
बल्कि एक दूसरे के लिए होना आवश्यक है।**

मनुष्य यदि अपनी इच्छाओं को घटाकर देखे,
तो खुशियों का संसार नजर आएगा।
मनुष्य यदि मस्तक को थोड़ा झुकाकर देखे,
तो सारा अभिमान मर जायेगा।

**मनुष्य यदि जिह्वा पर लगाम लगा के देखे,
तो सारा क्लेश खत्म हो जायेगा।**

क्षमा उस फूल के समान होता हैं,
जो कुचले जाने के बाद भी खुशबू देता रहता है।

**मनुष्य को कुछ हंसकर और कुछ बोलकर टाल देना चाहिए।
जीवन में परेशानियां बहुत हैं कुछ वक्त पर डाल देना चाहिए।।**

किसी को सुख पहुँचाना भले ही आपके हाथ में न हो।
लेकिन किसी को दुःख न पहुँचाना तो आप के हाथ में है।।

**सागर को घमंड था की मैं, सारी दुनिया को डुबा सकता हूँ।
इतने में तेल की एक बूद आयी, और तैर कर निकल गयी।।**

माली पौधों में पानी रोज देता है, लेकिन फल सिर्फ मौसम में ही आता है।
इसीलिये जीवन में धैर्य रखें, हर काम अपने समय पर ही होगा ।।

यदि हारने की कोई संभावना ना हो, तो जीतने का कोई मतलब नहीं है।

"व्यक्ति क्या है? ये महत्वपूर्ण नहीं है, लेकिन, "व्यक्ति में" क्या है ?
ये बहुत ही महत्वपूर्ण है।

वृक्ष ही मंदिर, वृक्ष ही पूजा
वृक्ष के जैसा नहीं कोई दूजा
वृक्ष की महिमा करे बखान
जितेश बांटे सबको यही ज्ञान।।

हमर छत्तीसगढ़

कैलाश पटेल
बी.ए.. प्रथम वर्ष

हमर राज के जइसे नाम हे
छत्तीसगढ़ ओइसनेहे ईहा छत्तीस
छत्तीस किसम के रीति रिवाज, बोली,
वेश भुषा अऊ काम हे

बल्कीन ए राज म छत्तीस ठन गढ़ हे अऊ सबो डहर आने-आने बोली बोले जाथे फेर वाह हमर छत्तीसगढ़ीया भाषा, बोली जइसे अब्बड़कन फूलके एक ठन माला गुथा जथे, ओइसनच हमर छत्तीसगढ़ी बोली ह हमर ए राज ल फुल के माला कस ऐके मा गुथ के रखे हवय।

हमर राज म (वर्ष) बरस, के बोहनी मृग डहर ले होथे। काबर हमर ईहा एक ठन परसीद्ध हे, ''मृग के बाऊग अऊ पुस के लीयासी, काबर मृग मा धान के भोवई होथे अऊ पुक म बियासी हमर राज धान के फसल परमुख फसल अक्षय तेखरे सेती ऐला'' धान के कटोरा कथे, जब किसान मन के बोवई के बुता हो जथे त किसानी के सबो ठन जिनीश (कुदारी, नांगर, बरला) धोवई करके पुजा करके हरेली के तिहार मनाथे, अऊ ऐही डहर ले आनी-बानी के तिहार मन शुरू होथे जइसे राखी, पितर-पाख, गेढ़ी, पोरा देवारी, कतका ठन तिहार।

खान-पान म ईहा कोदो-कुटकी ले लेके दार-भात रोटी-साग, बोरे बासी, अंगाकर रोटी संग चिरपोटी पताल के चटनी होगे तहर का पुछथस, पहुनई ओढ़ई म माइलोगीन मन लुगरा पहिरथे अऊ छोकरापीला धोती, कुर्ता, बंगाली, अऊ गोड़ म पनही पहिरथे। घर कुरिया मन छानही वाला हवय अऊ गऊटीया, नौकरीहार मन के घर पक्का घर हे, फेर गरिबहा घर वाले मन अपन घर ल सुग्घर लिपई-पोताई करके रखथे, ईहा के मनखे मन कोखरो सुख बाटे बर बलके नई आही फेर जब कोखरो उपर बिपत्ती आथे सब झन ओखर मदद बर अगवा जथे।

ऐखरे सेती सिरतोन म हमर ए राज (छत्तीसगढ़) के रीति-रिवाज, खान-पान, बोली, भुसा, आदत बेवहारी म बड़ मिठास हे।

रो रहा है देश मेरा

कु. सुरेखा रात्रे
एम.ए. राजनीति विज्ञान प्रथम सेमेस्टर

रो रही धरती यहां की
रो रही प्रकृति यहां की
हो रहा घायल हिमालय
तड़प रही है नदियाँ यहां की
घायल है मेरा देश का कोना
रो रहा है देश मेरा।।

चुभ रही हवाएं यहां की
रो रहा है प्राणी यहां का
कैसा आतंक है छाया यहा पे
छाई है भ्रष्टाचार यहां पे
घायल है मेरा देश का कोना
रो रहा है देश मेरा।।

हो रहा भाइयों में झगड़ा यहां पे
छाया है कैसा अंधकार यहां पे
छोड़ गए गहरा घाव सभी के
ताक बिछाई है आंधी यहां पे
घायल है मेरा देश का कोना
रो रहा है देश मेरा।।

खतरे में है जान सभी के
नारियों का हो रहा अपमान यहां पे
हो रहा है भेद लड़की-लड़का पे
खो रहा है विश्वास सभी का
घायल है मेरा देश का कोना
रो रहा है देश मेरा।।

श्री गुरूपादुकापंञ्चकम्

कु. पूजा कौशिक
बी.ए. अंतिम वर्ष

ऊँ नमो गुरूभ्यो गुरूपादुकाम्यो
नमः परेभ्यः परपादुकाभ्यः।
आचार्य सिद्धेश्वर पादुकाभ्यो
नमो नमः श्री गुरूपादुकाभ्यः।।

ऐंकार हींकार रहस्ययुक्त
श्रींकार गूढ़ार्थ महाविभूत्या।
ऊँकार मर्म प्रतिपादिनीभ्यां
नमो नमः श्री गुरूपादुकाभ्याम्।।

होमाग्नि हौत्राग्नि हविष्य होत
होमादि सर्वाकृति भासमानं
यद्ब्रम्हा तत्वबोध वितारिणीभ्यां
नमो नमः श्री गुरूपादुकाभ्याम्।।

कामादि सर्वत्रयगारूड़ाभ्याम्
विवेक वैराग्य निधिप्रदाभ्यां
बोधप्रदाभ्यां दुतमोक्षदाभ्यां
नमो नमः श्री गुरू पादुकाभ्याम्।।
अनन्त संसार समुद्रतार
नौकायिताभ्यां स्थिर भक्तिदाभ्यां
जाड़याब्धि संशोषण वाडवाभ्यां
नमो नमः श्री गुरूपादुकाभ्याम्।।
ध्यानमूलं गुरोर्मूतिः पूजामूलं गुरोः पदम्।
मंत्रमूलं गुरोर्वाक्यं मोक्षमूलं गुरोः कृपा।

गुरूर्ब्म्हा गुरूर्विष्णु-गुरूदेवो महेश्वरः।
गुरू साक्षात् परमब्रम्ह तस्मै श्रीगुरूवे नमः।।

गुरूरादिनादिश्च गुरः परमदैवतम्।
गुरोः परतरं नास्ति तस्मै श्रीगुरवे नमः।।

ब्रम्हानन्दं परमसुखदं केवलं ज्ञानमूर्ति
द्वंदातीतं गगनसदृशं तत्वमस्यादिलक्ष्यम्।
एकं नित्यं विमलमचलं सर्वधीसाक्षिभूतं
भावातीनं त्रिगुणरहितं सद्गुरूं तं नमामि।।

आनन्दमानन्दकरं प्रसन्नं
ज्ञानस्वरूपं निजपोधयुक्तम्।
योगीन्द्रमीड्यं भवरोग वैधं
श्रीमद्गुरं नित्यमहं नमामि।।

जो व्यक्ति अपने बड़ों का सम्मान नहीं करता है, जीवन के किसी मोड़ पर उसे भी अपमान का सामना करना पड़ता है।

मंजिल उन्हीं को मिलती है, जो रास्ते की कठिनाइयों की परवाह किए बिना चलते रहते हैं।

हमें जो मिला है हमारे भाग्य से ज्यादा मिला है, यदि आपके पाँव में जूते नहीं है तो अफसोस मत करिए दुनिया में कई लोग ऐसे भी हैं जिनके पाँव ही नहीं हैं।

रमता है सो राम

घट घट में जो रम रहा
कण-कण करता वास।
जिसके रमने से चले,
भीतर-बाहर श्वाँस।।

पशुपक्षी सुर नर मुनि,
करते जिसकी आस।
उसको कौन बताये बंदे
जो है तेरे पास।।

दृश्य वही दृष्टा वही,
नयनन करे प्रकाश।
जीव ब्रह्म माया वही,
धरती, जल, आकाश।।

गुरू वही गुरू मुख वहीं
गुरू पद का विश्वास
विनु उसके यह तन जरे,
जैसे सूखी घास।।

मैं से परे जो प्रेम है,
करौं उसे परनाम।
वही तो पूरन ब्रह्मा है,
वही तो पूरन काम।।

भजन-तजन के मध्य में,
जो करता विश्राम।
घट-परघट परगट भया,
रमता है सो राम।।

जी चाहता है

कु. रागिनी पटेल
एम.ए. अंग्रेजी प्रथम सेमेस्टर

आज फिर बचपन की उन नादान गलियों में,
जाने को जी चाहता है।
करके छोटी छोटी नादानियां,
खुश होने को जी चाहता है।
सताया करते थे जिन दोस्तो को हम,
उन्हे उसी तरह सताने को जी चाहता है।
करके बच्चो सी नादानियां, खुश होने को जी चाहता है।
वक्त कितना बदल गया, ना वो दोस्त है,
ना वो दोस्ती, जो हाथो की दो उंगलियों के,
जुड जाने से दोस्ती फिर पक्की हो जाती थी,
वैसे ही दोस्ती आज फिर करने को जी चाहता है।
करके छोटी-छोटी नादानियां,
खुश होने को जी चाहता है।
थोड़ा हंसना, थोड़ा रूलाना,
मारकर गाल सुजाना,
और कहना मुंह फुलाए बैठे हैं,
ये सब करने को जी चाहता है।
करके छोटी छोटी नादानियां,
खुश होने को जी चाहता है।
ना कोई खौफ था, ना कोई रौफ था,
स्कूल के जिस कोने में गए,
वहा हमारा रौब था,
ऐसी बादशाहत करनें को जी चाहता है।
करके छोटी-छोटी नादानियां,
खुश होने को जी चाहता है।

सफर में धूप तो होगी

रूपेश कुमार वर्मा
बी.ए. द्वितीय वर्ष

सफर में धूप तो होगी,
जो चल सको तो चलो, सभी है भीड़ में,
तुम निकल सको तो चलो
किसी के वास्ते राहे कहाँ बदलती हैं,
तुम अपने आप को खुद बदल सको तो चलो,
यहाँ कोई किसी को रास्ता नही देता,
मुझे गिरा के अगर तुम, संभल सको तो चलो,
यही हैं, जिन्दगी, कुछ ख्वाब चंद उम्मीदें
इन्हीं खिलौनो से तुम भी, जो चल सको तो चलो,
सभी हैं, भीड़ में, तुम भी निकल सको तो चलो।।

जिन्दगी बेटियों की

कु. सपना साहू
बी.एस.सी. अंतिम

बेटी बनकर आयी हूँ, माँ बाप के जीवन में
बसेरा होगा कल मेरा, किसी और के आँगन में,
क्यों ये रीत भगवान ने बनायी होगी,
कहते हैं आज नहीं तो कल बेटियाँ पराई होगी।
देके जनम पाल पोसकर जिसने हमें बड़ा किया
वक्त आया तो उन्ही हाथों से हमें विदा किया।
टूट कर बिखर जाती है हमारी जिन्दगी वहीं।
उस बंधन में प्यार मिले ये जरूरी नहीं।
क्यों रिश्ता हमारा इतना अजीब होता है।
क्या यही हम बेटियों का नसीब होता है।

सत्य श्लोका:

कु. शारदा साहू
बी.ए. अंतिम

तस्याग्निर्जलमर्णव: स्थलमरिर्मित्रं
सुरा: किंकरा: कान्तारं नगरं गिरि
गृहमहिमार्ल्य मृगारिर्मृग:। पातालं
बिलमस्त्र मृत्यलदलं व्यल: श्रृगालो
विषं पीयुषं विषमं समं च वचनं
सत्यञ्चितं वकि य:।

भावार्थ - जो सत्य वचन बोलता है, उसके लिए अग्नि जल बन जाता हे, समंदर जमीन, शत्रु मित्र, देव सेवक, जंगल नगर, पर्वत घर, साँय कुलो की माला, सिंह हिरन, पाताल दर, अस्त्र कमल, शेर लोमड़ी, झहर अमृत, और विषम सम बन जाते हैं।

सत्यं स्वर्गस्य सोपानं पारावरस्य
नौरिव। न पावनतमं किञ्चित्
सत्यादभ्यधिकं क्वचित्।।

भावार्थ - समंदर के जहाज की तरह, सत्य स्वर्ग का सोपान है। सत्य से ज्यादा पावनकारी और कुछ नही।

सत्येन पूयते साक्षी धर्म: सत्येन वर्धते।
तस्मात् सत्यं हि वकव्यं सर्वर्णेषु साक्षिभि:।।

भावर्थ - सत्य वचन से साक्षी पावन बनता है, सत्य से धर्म बढ़ता है। इसलिए सभी वर्णो मे, साक्षी को सम्य ही बोलना चाहिए।

नानृतात्यातकं किञ्चित् न सत्यात् सुकृतं परम्।
विवेकात् न परो बन्धु: रति वेदविदो विदु:।।

भावार्थ - वेदो के जानकार कहते है कि अनृक (असत्य) के अलावा और कोई पातक नही: सत्य के अलावा अन्य कोई सुकृत नही और विवेक के अलावा अन्य कोई भाई नही।

ये वदन्तीह सत्यानि
प्राणत्यागेअप्युपस्थिति।
प्रमाणभुता भूतानां दुर्गाण्यतितरन्ति ते।।

भावार्थ - प्राणत्याग की परिस्थिति में भी जो सत्य बोलता है, वह प्राणियो मे प्रमाणभूत है। वह संकट पार कर जाता है।

सत्येन रक्ष्यते धर्मो विद्याडभ्यासेन रक्ष्यते।
मृज्यया रक्ष्यते रूपं कुलं वृत्तेन रक्ष्यते।।

भावार्थ - धर्म का रक्षण सत्य से, विद्या का अभ्यास से, रूप का सफाई से, और कुल का रक्षण आचरण करने से होता है।

जीवन के रंगमंच

कु. आंचल कुर्रे
बी.एस.सी. अंतिम

कुछ करना है तो कदम आगे बढ़ाओ,
तुम्हें पीछे खीचने वालों की कमी नहीं हैं।
लक्ष्य बनाना हैं तो बड़ा बनाओं,
तुम्हें छोटा बताने वालो की कमी नहीं हैं।

सपने देखने है तो ऊँचे देखो,
तुम्हें नीचा दिखाने वालो की कमी नहीं हैं।
खुद से ही खुद को प्रोत्साहित करो,
तुम्हें हतोत्साहित करने वालो की कमी नहीं हैं।

भरोसा रखना है तो खुद की कोशिशों पर रखों,
किस्मत को कोसने वालो की कमी नही हैं।
बन सको तो व्यक्तित्व के सरल बनो,
नकाब पीछे छिपने वालों की कमी नहीं हैं।

निखरना हैं तो खुद की अलग पहचान बनाओं
भीड़ में पलने वालो की कमी नहीं हैं,
जीवन के इस रंगमंच के नायक बन जाओ,
यहाँ किरदार निभाने वालो की कमी नहीं हैं ।

जय सेवा, जय जोहार

धरमलाल पोर्ते
एम.ए.अंग्रेजी, तृतीय सेमेस्टर

माटी अऊ किसान हमर जींनगी अऊ विकास के गाड़ी हवया धरती। भूईयां ला, मनखे मन ला, प्रकृति ला, परियावरण परदूषण (ग्लोबल वार्मिंग के समस्या) ले बचाना हे त हम जम्मोंझनला प्रकृति, माटी, किसान के प्रति जागरूक होय ला परही, माटी अऊ किसान से हमर जीवन-मरन के कहानी जुरे हवय।

मोर बिचार ले अगर परदूषण ले छुटकारा पाना हे त माटी अऊ किसान के महिमा ओकर योगदान ला हमन ला समझेला परही तब जाके ओकर संरक्षण / बचाय के कोशिश करबों तब परदूषण के समस्या ह धीरे-धीरे संतुलित हो जही अऊ हमर वातावरण सुध्यर हो जही।

आओं गीत के माध्यम लें समझबों
शायरी - कहा ले शुरू करव, अऊ कहा ले खतम।
जोर से जयकारा बोलहूँ, हमर माटी अऊ किसान के हेवत हे सुआगतम

गीत

जय जय हमर माटी ... जय जय हमर किसान
जय जय हमर माटी ... जय जय हमर किसान ...2
सबके हवच भाग्य-विधाता ...2 सबके पालन हार...
तोर महिमा हे महान वो माटी .... तोर महिमा ग किसान ...2
जय जय हमर माटी ... जय जय हमर किसान ...2
भूईयां के हवच पहला उत्पादक ...2 अन्न उपजाये हजार ...
तोर महिमा हे महान ग किसान .... तोर महिमा हे महान....3
जय जय हमर माटी ... जय जय हमर किसान ...2
तोर दुख ला कोनों न समझे ....2 कोनों न करें बखान ....
तोर महिमा हे महान वो माटी ... तोर महिमा ग किसान...2
जय जय हमर माटी ... जय जय हमर किसान ...2
तोरे से हेवय जीवन ...2 तोरे से हेवय मरन —
तोर महिमा हे महान हो माटी ... तोर महिमा ग किसान ...2
जय जय हमर माटी ... जय जय हमर किसान ...2
घेरी-बेरी बंदव तोला ...2 नई लागे भूख पियास मोला ....
तोर महिमा हे महान वो माटी .... तोर महिमा ग किसान ....
जय जय हमर माटी .... जय जय हमर किसान ...2

''जय माटी, जय किसान''

वक्त

कु. ओमकुमारी सेन
एम.ए. प्रथम वर्ष हिन्दी

घर बनाने में वक्त लगता है,
पर मिटाने में पल नहीं लगता।
दोस्ती बड़ी मुश्किल से बनती है,
पर दुश्मनी में वक्त नही लगता।
गुजर जाती है उम्र रिश्ते बनाने में,
पर बिछड़ने में वक्त नहीं लगता।
जो कमाता है महिनों में आदमी,
उसे गंवाने में वक्त नही लगता।
पल-पल कर उम्र पाती है जिंदगी,
पर मिट जाने में वक्त नही लगता।
जो उड़ते है अहम के आसमानो में,
जमी पर आने में वक्त नहीं लगता।
हर तरह का वक्त आता है जिंदगी में,
वक्त के गुजरने में वक्त नहीं लगता... ।।

छत्तीसगढ़ी गीत

सनत कुमार
बी.ए. अंतिम वर्ष

''छत्तीसगढ़ के भुँइया ल जुरमिल के महकाबो जी।।''...२
सबो झन मिल के करबो सफाइ स्वच्छता ल लाबो जी।
गाँव गली अऊ सड़क ल जम के करबो सफाई,
स्वच्छता रही गली खोर इही म होही सब के भलाई।

जेन हा फइलाही गंदगी वोला ठेंगा दिखाबों जी,
छत्तीसगढ़ के भुँईला ल जुरमिल के महकाबो जी।
गन्दगी फईलायले परदुसन के कहर बरसत हे,
हाथ म हाथ धरे रइगे सब आनी बानी के बीमारी ल परसत हे।

जब तक नही हो ही साफ सफाई मिल के कदम बढ़ाबोजी,
छत्तीसगढ़ के भुँईया ल जुरमिल के महकाबो जी।
घर के कचरा ल दुवारी म नई फेकना हे,
गन्दगी फेलायल हमन ल खुद बचना है।

गाँव के बाहर म सब गड्ढा खनव जी,
कचरा ल ओमा फेक के होसियार तुमन होसियार बनोजी।
गाँव गाँव म जाके अइसन स्वच्छता अभियान चलाबो जी,
छत्तीसगढ़ के भुँईया ल जुरमिल के महकाबो जी।

जगा जगा कचरा ल मेल के कुड़ादान झन बनाव जी,
स्वच्छता के नारा लगा के सोन सही चमकाव जी।
साफ सफाई म होही सबके भलाई,
अऊ हमर स्वस्थ्य जीवन के इही हे दवाई।

जुरमिल के सबो संगी साथी गीत ल हमन गाबो जी,
छत्तीसगढ़ के मोर भुँइया ल महर महर महकाबो जी।

विश्वबन्धुत्वम्

कु. निकिता सूर्यवंशी
बी.ए. अंतिम वर्ष

विश्व्स्य सर्वान् जनान् प्रति बन्धुत्ववस्य भाव: एव विश्वबन्धुत्वम इति कथ्यते। शान्तिमयाय जीवनाय विश्वबंन्धुत्वस्य भावनां नितरां महत्वं भजते। सर्वजनहितं सर्वजनसुखं च बधुर्त्व विना न सम्भवति। विश्वबन्धुत्व एवं दृष्टों निधाय केनपि मनीषिणा निर्दिष्टम-

अयं निज: परो वेति गणना लघुचेतसाम्।
उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्।।

साम्प्रतम अखिले संसारे अशान्ते: हिंसाया: च साम्राज्यं व्याप्तम् अस्ति। येन साधनसम्पन्न: अपिमानव: सुखस्य स्थाने दु:खमेव अनुभवति। यद्यपि ज्ञानबलेन मानव: इदानीं आकाशे विचरितुं सागरान सन्तर्तु विश्वभ्रमणं कर्तु चन्द्रादिग्रहेशु च गन्तुं समर्थ: अस्ति। विगतयो: द्वयो।

सर्वे भवन्तु सुखिन: सर्वे सन्तु निरामया:।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दु:खभाग भवेत्।।

विश्व युद्धो, विनाशलीलां सर्वे जानन्ति एव । इदानी तृतीयस्य युद्धस्य सम्भावना सर्वदा मानवजातिम् आक्रांत करोति। मानव: मानवं प्रति बन्धुत्व आचरण कुर्यात। एक: देश: अन्येन देशेन सह बन्धुताया: व्यवहारं कुर्यात।

**असफलता एक तरीके से सफलता ही है,
यदि हम उससे सीख लेते हैं तो।**

मेरी माँ

संजय कुमार खाण्डे
एम.ए. हिन्दी प्रथम सेमेस्टर

नौ महीने कोख मे रखकर, मुझे इस दुनिया मे लायी ... मेरी माँ,
इतनी पीड़ा सहकर, मुझे तुमने पाला ... मेरी माँ।
आज भी याद आता है, आँसू रोक नही पाता हूँ ... मेरी माँ,
जब वो इंसान शराब के नशे में, तुझपर जुर्म किया करता था... मेरी माँ,
और तुम मेरे खातिर सब कुछ सहां करती थी ... मेरी माँ।

बचपन से देखा गरीबी मैंने पर तेरे साथ खुद को अमीर पाता था ...
जो अपने दुख-दर्द छिपाकर, मुझें खुश किया करती थी ... मेरी माँ।

पिता के रहते भी पिता का साया ना मिला,पर तुम कमा कर खिलाया करती थी .. मेरी माँ।
याद है मुझको जब खाना कम पड़ जाता था,मेरा पेट भरा है बतलाकर,
तुम मुझे खिलाया करती थी ... मेरी माँ।

देखा मैने भी इस दुनिया को कहते अपना, पर अंत में तेरा ही साथ पाया ... मेरी माँ।
खुद कुछ ना खरीद, एक-एक पैसा जोड़कर, मेरी जरूरत पूरा करती थी ... मेरी माँ।
आते है याद वो दिन जब पैसे कम पड़ने पर, मेरे पास नया पड़ा है कहकर त्योहारो में,
मुझे नये कपड़े दिलाया करती थी .. मेरी माँ।

इतनी मुश्किलों से पाल-पोसकर किया बड़ा मुझे ... मेरी माँ,
हर गलती पर समझाकर मुझे माफ करती थी ... मेरी माँ,
मुझे सही करके आगे भी तुम ही बढ़ाती थी ... मेरी माँ, तुम कभी गलत कैसे हो सकती हो ।

याद है मुझको जब एक रोटी माँगने पर, तुम चार रोटी देती थी ... मेरी माँ,
हालात के इतने दुख-दर्द सहकर, जो तुमने मुझे बड़ा किया ... मेरी माँ।
तुम चिन्ता ना कर गलत राह पर नही जाऊँगा ... मेरी माँ,
तेरी ममता का कर्ज तो नही उतार पाऊँगा ... मेरी माँ,
पर अपना फर्ज जरूर अदा कर जाऊँगा ... मेरी माँ,
इतनी जल्दी तो काबिल नही बन पाऊँगा ... मेरी माँ,
पर एक दिन कामयाब बनकर, तेरा नाम ऊँचा कर जाऊँगा ... मेरी माँ।।

विश्वभाषा संस्कृतम्

कु. कामिनी लिबर्टी
बी.ए. अंतिम वर्ष

सरलभाषा संस्कृतं
सरसभाषा संस्कृतम्।
सरससरलमनोज्ञमण्ड.लं
देवभाषा संस्कृतम्।।

मधुरभाषा संस्कृतं
मृदुलभाषा संस्कृतम्
मुदलमधुरमनोहरामृत
तुल्यभाषा संस्कृतम्।।

देवभाषा संस्कृतं
वेदभाषा संस्कृतम्
भेदभावविनाशकं खलु
दिव्यभाषा संस्कृतम्।।

शस्त्रभाषा संस्कृतम्
शास्त्रभाषा संस्कृतम
शस्त्रशास्त्रभृदार्ष भारत
राष्ट्रभाषा संस्कृतम्।।

धर्मभाषा संस्कृतं
कर्मभाषा संस्कृतम्
धर्मकर्म प्रचोदकं खलु
विश्वभाषा संस्कृतम्।।

घर की दूरी बार्डर तक

आशीष कश्यप
एम.ए. हिन्दी तृतीय सेमेस्टर

माना की घर से दूर हूँ,
यूं ना समझो कि मै मजबूर हूँ।
जो पतझड़ मे हरियाली लाए वो सावन हूँ।
बेटे के घर आने की बाट संजोती, बूढ़ी माँ की आस हूँ,
विरह वेदना में तड़पती, नववधु की प्यास हूँ।

राहो को तकती आंखो का पानी हूँ,
मजबूरी मे की गई मनमानी हूँ।
विरह-मिलन की रसहीन कहानी हूँ।
श्रृंगार सजी दुल्हन की तन्हा जवानी हूँ।
भाई-बहन का सम्मान हूँ, बाबा का अभिमान हूँ।।

होली में उड़ता गुलाबी रंग हूँ,
अभी मैं आ नही सकता माँ,
बस थोड़ी सी मजबूरी है।
माँ तुम चिन्ता मत करना,
बस कुछ कोसो की दूरी है।
वादा है अबकी बार मै, होली पर आउंगा,
गुड़िया को अपने हाथों से, झूला झूलाउंगा।

पापा की खातिर मखमली, कम्बल लाऊंगा,
माँ तेरी खातिर कश्मीरी, स्वेटर लाऊंगा।
पर ना कैसे क्यूं तिरंगे के
संग खत लिपट आते
मैं भारत माँ के, शीश मुकुट की शान हूँ
कठिनाई से लड़ता, सहता, मैं सेना का जवान हूँ।।

मेरा बचपन

दुर्गेश कुमार धीवर
एम.ए.हिन्दी तृतीय सेमेस्टर

बचपन का जमाना होता था, खुशियों का खजाना होता था।
चाहत चांद को पाने की, दिल तितलियों का दीवाना होता था।
खबर ना थी कुछ सुबह की, न ही नामों का ठिकाना होता था।
थके-हारे जब स्कूल से आते, पर खेलने भी जाना होता था।
दादी की कहानी होती थी, परियों का फसाना होता था।
बारिश में कागज की कश्ती थी, हर मौसम सुहाना होता था।
हर खेल में साथी होते थे, हर रिश्तों को निभाना होता था।
पापा का डांटना गलती पर, मम्मी का मनाना होता था।
न गम की जुबान होती थी, न हंसने का बहाना होता था।
अब नहीं रही वो जिंदगी, जैसा बचपन का जमाना होता था।

देश के लिए नौजवान

देवेन्द्र कुमार कश्यप
बी.ए. तृतीय वर्ष

चल पड़ा हूँ लड़ने देश के लिए मैं जंग,
माँ होगी दिल में तू हर पल मेरे संग,
जब खून की होली सरहद पर खेली जाएगी,
पापा, तब आपकी प्यार वाली डांट याद आएगी,
भूलकर सब जंग के लिए मैं तैयार हो जाऊँगा,
बहन, पर तेरे से किया हर वादा मै निभाऊँगा,
पता नहीं मुझको कि क्या लिखा है जिंदगी में कल,
प्रिय, रहोगी दिल में मेरे तू हर पल,
चली, जाए अगर वहां वतन के लिए मेरी जान,
बच्चों, बनाए रखना तुम सदैव घर का मान,
भारत माँ के पुत्र होने का फर्ज बखूबी निभाऊँगा,
चलकर ना सही, तो तिरंगे में लिपटकर वापस जरूर आऊँगा।

बचाओ–बचाओ

आकाश तम्बोली
एम.ए.हिन्दी तृतीय सेमेस्टर

अब हर किसी की निभाने की आई जिम्मेदारी।
व्यर्थ में खर्च को, रोकने की आई पारी।
प्रकृति से प्रेम करने, चला हूँ मैं तूफान बनकर।
प्रकृति से न खेल, समझकर, तू अपना मेहमान।
देती है, ज्यों जीवन धरती पर, तू कर उसका सम्मान।
मानव-मानव रोक तू अब प्रकृति का नुकसान।
ये धरती को हरियाली देकर, तू ऐसा स्वर्ग बना जा।
प्रकृति से प्रेम कर तू, इसे आसमां बना जा।
जो भूल करता चला है, तू उसे अब तू रोक दे।
यह जीवन प्रकृति से, इससे रिश्ता तू जोड़ ले।
जिस धरती को माँ कहता उसकी बचा ले शान।
प्रकृति से ही है जीवन, माँ धरती की पहचान।
जब बूँद-बूँद में बहता, पृथ्वी का जल है।
समझो खत्म हो रहा, आने वाला कल है।
अभी माँ हाथों में तेरे, बच सकती है इसकी जान।
ये है तेरी मेरी प्रकृति,
इससे जीवन की अपनी पहचान।
माँ धरती की हरियाली लाना है,
पृथ्वी पर जीवन बचाना ।
जिसे माँ कहता है, तू उसकी रखले लाज।

घुट घुट कर जीना छोड़ दे

भूपेन्द्र सिंह कश्यप,
एम.ए.समाजशास्त्र तृतीय सेमेस्टर

घुट-घुट कर जीना छोड़ दे, तू रूख हवाओं का मोड़ दे।
हिम्मत की अपनी कलम उठा, लोंगो के भरम को तोड़ दे।
तू छोड़ ये आंसू उठ हो खड़ा, मंजिल की और अब कदम बढ़ा।
हासिल कर एक मुकाम नया, पन्ना इतिहास में जोड़ दे।
घुट-घुट कर जीना छोड़ दे, तू रूख हवाओ को मोड़ दे।
उठना है तुझे, नहीं गिरना है, जो गिरा तो फिर से उठना है।
अब रूकना नही एक पल तुझको, बस हर पल आगे बढ़ना है।
राहों में मिलेंगे तूफान कई, मुश्किलों के होंगे वार कई।
इन सबसे तुझे न करना है, तू लक्ष्य पे अपने जोर दे।
घुट-घुट कर जीना छोड़, तू रूख हवाओं का मोड़ दे।
चल रास्ते तू अपने बना, छू लेना अब तू आसमान।
धरती पर तू रखना कदम, बनाना है अपना ये जहाँ।
किसी के रोके न रूक जाना तू,
लकीरें किस्मत की खुद बनाना तू।
कर मंजिल अपनी तू फतह, कामयाबी के निशान छोड़ दे।
घुट-घुट कर जीना छोड़ दे, तू रूख हवाओं का मोड़ दे।
हिम्मत की अपनी कलम उठा, लोगो के भरम को तोड़ दे।

दोस्ती

कु. विद्या कौशिक
बी.ए. प्रथम वर्ष

दोस्ती, खुशी का मीठा दरिया है, जो आमंत्रित करता है हमें
आओ, खूब नहाओ, हंसी - खुशी की, मौज - मस्ती की
शंख - सीपियां, जेबों में भरकर ले जाओ।
आओ, मुझमें डुबकी लगाओं, गोता लगाओं
प्यार का मीठा पानी, हाथों में भरकर ले जाओ ...

मातृभूमि

कमलेश कुमार
बी.ए. द्वितीय वर्ष

मातृभूमि यह हम जन-जन की, हम सब एक समान हैं ।
हे मातृभूमि ! हम सब तेरी ही संतान हैं ।

जहाँ उत्तर की ऊँची-चोटी माँ के मुकुट समान है ।
जहाँ दक्षिण का विशाल सागर धोता चरण महान है ।।
यहाँ कि मिट्टी सोने जैसी, शहीदों का बलिदान है ।
हे मातृभूमि ! हम सब तेरी ही संतान है।।

विश्व की ऊँची-चोटी ऑस्टिन यहाँ विद्यमान है ।
जहाँ गंगा की पवित्र धारा,
उत्तर की यह शैल हिमालयान है ।
जहाँ विश्व की सर्वोच्च प्रतिमा वल्लभ जी महान है,
हे मातृभूमि ! हम तेरी ही संतान है।।

जहाँ महात्मा और सन्यासी करते काम महान हैं
महात्माओं का यह देश रहा है, हम उनके संतान है
हे मातृभूमि ! तुझे सत्-सत् प्रणाम है।।

धर्म अलग है, जाति अलग है फिर भी न घबराते हैं
जहाँ विश्व से लाखों दार्शनिक तेरी शरण में आते हैं ।
मातृभूमि यह हम जन-जन की आन, बान और शान हैं ।
हे मातृभूमि ! हम सब तेरी ही संतान है।।

जहाँ कारगिल जैसे युद्ध में दुश्मन को धूल चटायें है
वहाँ अनेक वीर शहीदों ने भी प्राण गवांये है
मातृभूमि यह शहीदों की देती धन्य-धान है
हे मातृभूमि ! हम सब तेरी ही संतान है।।

मातृभाषा हिन्दी

गितेश कुमार निर्मलकर
एम.ए.हिन्दी तृतीय सेमेस्टर

मेरी मातृभाषा है - हिन्दी
पुष्प की अभिलाषा है - हिन्दी
घोर निराशा मे हो गर प्राणी
जीने की आशा है - हिन्दी

बचपन की मधुशाला है - हिन्दी
मीरा का गोपाल है - हिन्दी
प्रसाद की कामायनी है - हिन्दी
अमृत रस का प्याला है - हिन्दी

रैदास का चंदन-पानी है - हिन्दी
महादेवी के गीतो की रवानी है - हिन्दी
द्विवेदी का अद्भुत अलाप है - हिन्दी
प्रेमचंद की अनुपम कहानी है - हिन्दी

गुप्त की भारत-भारती - हिन्दी
मिश्र की चित्रकालसंध्या आरती - हिन्दी
बहता प्रसाद का यूँ झरना
युगपंत की पुकारती - हिन्दी

सुभद्रा के बिखरे मोती - हिन्दी
दिनकर की रसवंती बोती - हिन्दी
नवीन की उर्मिला के गले में
तुलसी के पद पिरोती - हिन्दी

एक अनुपम वरदान है - हिन्दी
साहित्य की जान है - हिन्दी
यह सुमन है बड़ा निराला
परिंदे की उड़ान हैं - हिन्दी।।

अच्छा लगता है

रानू गंधर्व
बी.कॉम. तृतीय वर्ष

मन की बाते सबको बताना,
कभी-कभी छोटे बच्चों को रूलाना। अच्छा लगता है।।

यादों के समुन्दर में गोते लगाना,
भविष्य के लिए वर्तमान को सजाना, अच्छा लगता है।।

नींद के संग सपनों का आना,
उठने के बाद नाम को बड़बड़ाना, अच्छा लगता है।।

माता पिता के सपने सच कर दिखाना,
सबको कामयाबी के मार्ग का पता बताना,
अच्छा लगता है।।

दौड़ती जिंदगी में खुशी के पल चुराना,
माता पिता को बच्चों की तरह मनाना, अच्छा लगता है।

दोस्तो संग गप्पें मारना,
छोटी बहन के साथ थोड़ा लड़ना, अच्छा लगता है।

अनजानी जगहो पर घूमना,
कामयाबी के पाँ को चुमना, अच्छा लगता है।।

पर लगता है बुरा प्रकृति का देख हाल,
पशु, पेड़, पंक्षी, पर्वत, झरने हो चुके बेहाल।

उसको संवारने हाथ जब उठेगा,
तो कल बालक यह कह सकेगा।

हरे-हरे खेतों का लहलहाना,
प्रकृति का प्यार से मुस्कुराना, अच्छा लगता है।।

ईसकुल के सुरता

अमन कुमार दिनकर
बी.ए. प्रथम वर्ष

कतका सुतबे उठ नवा सवेरा होगे,
चल होजा तियार ईसकुल के बेरा होगे,

नावा-नावा किताब कलम हे,
नावा ईसकुल बस्ता हावय,

मस्ती करबो अउ अब्बड़ पढ़बो,
कठिन जिनगी के रस्ता हावय,

देख निकल अब घर के बाहिर
सुरूज रवनिया घेरा होगे,

चल होजा तियार ईसकुल के बेरा होगे ...
संगी जहुरिया ले बढ़ दिन म मिलबो,
रंग-रंग के गोठ गोठियाबो,

संघरा खेलबो संग टिफीन सिरवाके
अब्बड़ मजा उड़ाबो,

ईसकुल के दिन अब सुरता आये
हिरदे गद-गद मया के फेरा होगे

चल होजा तियार ईसकुल के बेरा होगे ...
हिन्दी के मास्टर हाजरी लेवय
दोहा-चौपाई मन भावय

गणित के गुरूजी गुस्सेलहा रहिच
फेर बहुत बढ़िया पढ़ावय,

अंग्रेजी म गोठियावन बड़ गुरतुर लागय
''एप्पल'' होगे सेब, ''बनाना'' केरा होगे,
चल होजा तियार ईसकुल के बेरा होगे ...।।

कितना व्यवहारिक है यह राष्ट्र का चुनाव

अभिषेक कुमार
एम.ए. राजनीति विज्ञान, प्रथम सेमेस्टर

हाल ही में १७ वी लोकसभा के चुनाव सम्पन्न हुआ, जिसके पश्चात् मोदी जी द्वारा बुलाई गई सर्वदलीय बैठक में एक राष्ट्र एक चुनाव का मुद्दा फिर से छिड़ गया। पूर्व में भी इस पर कई बार चर्चा की जा चुकी है किन्तु कई दलो के विरोध के कारण इसे व्यवहार में नही लाया जा सकता है।

एक राष्ट्र एक चुनाव का अर्थ है कि लोकसभा चुनाव के साथ-साथ विधानसभा तथा नगरीय निकायों का चुनाव भी साथ में कराए जाए। वर्तमान चुनाव प्रणाली में कई समस्याएँ व्याप्त है। जैसे नीतियों में अनिरंतरता था अधिक खर्च। वर्ष 2009 में आमसभा चुनाव में 1100 करोड़, 2014 में 4000 करोड़ खर्च हुआ। वर्ष 2014 में उम्मीदवार द्वारा _ करोड़ खर्च हुए। वर्ष 2019 में 60000 करोड़। इसके अलावा बार-बार चुनाव कराने से शासन व शिक्षण कार्य भी प्रभावित होते है।

हालांकि वर्तमान चुनाव प्रणाली में कुछ सकारात्मक पक्ष है। उदाहरण - बार-बार चुनाव कराने से सरकार में जवाबदेहिता बनी रहती है। इसके अलावा यह राष्ट्र की संघीय व्यवस्था के लिए भी उचित है, क्योंकि इसमें राष्ट्रीय तथा राजकीय मुद्दों का समिक्षण नही होता।

एक साथ चुनाव सम्पन्न कराने से आर्थिक बचत होगी तथा राजकोश पर कम भार पड़ेगा। सरकार को बार-बार आचार संहिता का पालन नहीं करना पड़ेगा जिससे शासन के कार्य प्रभावित नहीं होगे तथा शिक्षण कार्य की प्रभावित नही होगा, इससे लोगो में आपसी सौहार्द भी बढ़ेगा क्योंकि राजनीतिक दलो द्वारा बार-बार जाति व धर्म के मुद्दों को नही उठाया जाएगा साथ ही जनता को परेशानी से मुक्ति मिलेगी।

एक साथ चुनाव कराने से सबसे बड़ा नुकसान क्षेत्रीय पार्टियों को होगा क्योंकि अक्सर देखा जाता है कि राष्ट्रीय मुद्दों के सामने क्षेत्रीय मुद्दों गौण हो जाते है। हाल ही में सम्पन्न लोकसभा चुनाव में बालाकोर एयर प्रमुख मुद्दा रहा है। इसके अलावा त्रिशंकु विधानसभा या लोकसभा की स्थिति में अगर सरकार पहले गिर गइे तो क्या ? इससे चुनाव परिणाम में देरी की भी संभावना है।

एक साथ चुनाव कराने के लिए हमें संविधान के अनु. 83, 85, 172, 171, 174 व 350 को संशोधित करना होगा। चुनाव कराने के लिए भारी मात्रा में ई.वी.एम. तथा सुरक्षा बलों की आवश्यकता होगी।

हालांकि एक राष्ट्र एक चुनाव को व्यवहार में लाना मुश्किल नही है क्योंकि इससे पूर्व भी 1952, 1954, 1962, 1967 में लोकसभा व विधानसभा चुनाव साथ में हुए। फिलीवींस जैसे देश में केन्द्र से लेकर नगरीय निकाय तक के चुनाव साथ में होते है। इस संकल्पना को व्यवहार में लाया जा सकता है बशर्ते की सारे राजनीतिक दल इस पर सहमति प्रकट करें।

Enjoy Writing !!!

Ku. Karuna Singh Maravy

The first question that comes to our mind when we think of writing in whether writing is a science or an art ? A greater difficult question that comes next is whether writing is a skill or is it the love for it it that makes one per down words in a way that either appeals the reader or makes him feel otherwise.

In either way whether we call it a science or an art, one's skill or love, whether it appeals someone or it does no, there should be dirty in message, proportionateley mixed with creativity so that one enjoys the process called writing.

I call writing to be a method of making the communication through mind by not just putting words together but by putting meaning to each word that is written so that the reader gets the exact message. I would further add that the best way to convey your feeling to anyone is to write, as it helps on to communicate in a more effective and less.. ambagious way. Also it help the reader to easily comprehend the text.

Writing has many advantages attached to it, the reader could assimilate loads of information , the so called "gap" in verbal communication that is faced while speaking is dealt in an effective and efficilt manner throught until he since the writer is not abstuered until he has finised his work of writing. Strangly belive that every individual should be inspired to write or be self inspired to write (like me)

"Either write something worth reading or do something worth writing." Benjamin Franklin

So in either of the cases we head to write, to be read by someone.

Hence fall in love with writing, write in love, writ in pain, write when everything fall in vain, for writing, would inspiere not just your but, also your readers. So start writing, keep on writing & never STOP writing!!!

Domestic Violence

Ku. Neelam Jaiswani
M.A. III Sem. (English)

"Women's human right refers to a revolutionary notion aimed at emphasizing that women's rights are human rights and women are entitled to such rights simply for being human"

Domestic violence is present in almost every society of the world. In Indian society the situation is really gruesome. Women and children are often the soft targets. A significant number of deaths are taking place on daily basis, as a result of domestic violence only. Illiteracy, economical dependency on men folk and the otherwise male dominated society is some of the attributing factors to the problem. Generally domestic violence is a result of cumulative irresponsible behavior demonstrated by a section of the society. Not only the abuser is the main culprit but also those who are allowing it to happen and behave like mute spectators are the partners of the crime. Government has made and enforced domestic violence act. The rules and regulations have been introduced in section 498-A of Indian Penal Code. Law gives an effective shelter and deals strictly with the culprits. But making a law is not sufficient. People will have to wake up and arise. They have to be told about their rights and duties. Every human being deserves the basic honour and respect. No one is entitled to take law in one's hands. It is the mentality of the society that needs an overhauling. Society is in-turn nothing but the constitution of individuals. Every individual should make the necessary amendments and the society will change. It is the high time to raise voice against the injustice happening to self and others. Domestic violence has no place in the modern society and should be strongly dealt with.

"If we are to fight discrimination and injustice against women we must start from the home for if a woman cannot be safe in her own house then she cannot be expected to feel safe anywhere." — Aysha Taryam

अच्छे गुणों के अभाव से कुछ लोग धनवान, शक्तिशाली और प्रभावशाली तो हो जाते हैं लेकिन समाज को उन से कोई लाभ नहीं होता हैद्यजैसे शेर जंगल का राजा तो होता है लेकिन अकेला होता है क्योंकि सभी जानवर उससे डरते हैं और उससे दूर रहते हैं।

Hope

Ku. Pratibha Kaushik
M.A. 1st Sem.

If you can look at the sunset and smile, Then you still have hope.
If you can find beauty in the colors of a small flower, Then you still have hope.
If you can find pleasure in the movement of a butterfly. Then you still have hope.
If the smile of a child can still warm your heart. Then you still have hope.
If you can see the good in other people. Then you still have hope.
If the sight of a rainbow still makes you stop and store in wonder. Then you still have hope.
If you meet new people with a trace of excitement and optimism. Then you still have hope.
If your can look to the past and Then you still have hope.
Hope puts a smile on your face when the heart cannot manage.
Hope puts our feet on the path when our eyes cannot see it.
Hope moves us to act. When our souls are confused of the direction.
If can be found in each of us and it can bring light into the darkest of places.
Never lose hope!

स्वास्थ्य पर जंक फूड का प्रभाव

कु. प्रियंका कौशिक
एम.ए. राजनीति विज्ञान, तृतीय सेमेस्टर

मनुष्य का स्वस्थ जीवन ही मनुष्य की ताकत और उसकी अच्छी पहचान होती है। अच्छा और बेहतर जीवन जीने के लिए मनुष्य का हमेशा स्वस्थ रहना बहुत जरूरी होता है । एक अच्छे शरीरिक स्वास्थ्य के लिए पौष्टिक आहार की जरूरत होती है। यदि वर्तमान समय की बात करें तो जंक फूड मनुष्य को अपनी तरफ ज्यादा और जल्दी आकर्षित कर रहा है। जिसे खाने से मनुष्य के स्वास्थ्य को हानि पहुँच सकती है। जंक फूड जितना स्वादिष्ट होता है, उससे ज्यादा स्वस्थ जीवन के लिए हानिकारक होता है।

आज के आधुनिक दौर में हर कोई चाहे वे बच्चे हो या बड़े जंक फूड बहुत स्वाद से खाते है । अक्सर बच्चे अपना पूरा दिन बाहर के खाने जैसे बर्गर, पिज्जा, मोमोज, पेटिज, चाउमीन इत्यादि से अपना पेट भर लेते है और घर के खाने को नजर अंदाज कर देते है। जिसके कारण आगे चलकर उन्हें पेट दर्द जैसे परेशानियाँ हो जाती है । जंक फूड में कोई ऐसा भी पौष्टिक तत्व नहीं होता जिससे शरीर के स्वास्थ्य को फायदा मिले। यदि आप इसका ज्यादा सेवन करते है तो इससे शरीर का मोटापा बढ़ने की ज्यादा संभावना होती है। इसे खाने से कोलेस्ट्राल की मात्रा अधिक होने के कारण हृदय से सम्बंधित रोग हो सकते है जंक फूड को आप दिन का आहार न बनाये और हो सके तो इसे खाना छोड़ने की कोशिश करें और घर के बने खाने को ही खायें क्योंकि अच्छा स्वास्थ्य ही अच्छे जीवन का आधार है। हरी सब्जियाँ खायें और अपनी, जीन्स में फिट हो जायें।।

जीत उसी की जो डरा नहीं

कु. रानू गंधर्व
बी.कॉम. अंतिम वर्ष

हिम्मत ज्यादा, जज्बात कम
कई उमंगे पर आँखे नम
ऐसा हर खिलाड़ी को
मन मे डर कभी न हो
कि वो है किसी से कम
कहो आ जाये कोई गम
हम न रूकेगे जब तक है दम
हम तो वो आंधी है जो मंजिल पाने
तक रूके ना
रूक जाये तूफां के सामने मत करना तू ऐसा भ्रम
झोंकना धूल आँखो में,
ये बेईमानी का काम है
जो जीते हिम्मत, बल से उसी का यहाँ नाम है
ना रूक तू ना तू रोक
एक हार का मना जा तू थोक
आगे बढ़ना है तुझे चलता जा बस चलता जा
जज्बातों में आकर तू यूं ना पिघलता जा
कोई भी लक्ष्य बड़ा नही,
जीत उसी की जो डरा नही।।

स्त्री की पहचान

कु. पूजा बलराज
बी.एस.सी. अंतिम वर्ष (बॉयो)

भारत देश महान।
जहाँ है समाज पुरूष प्रधान।।

स्त्रियाँ अपने हक से अनजान।
फिर भी मेरा देश महान।।

हर औरत को चाहिए एक मुकाम।
सम्मान देने से मिलेगी उन्हे पहचान।।

अब भी लोग पूछते है पिता का नाम।
क्यों ? भूल जाते है माँ का नाम।।

ऐ बन्दे ! दुआ कर उस माँ के लिए।
जिससे मिली तुझे है जान।।

कभी कोई पूछे तुझसे खुदा का नाम।
आँख बन्द कर ले लेना माँ का नाम।।

औरत माँ है, बहन है, बेटी है।
पर केवल एक सम्मान के लिए जीती है।।

अब होगा नारी का सम्मान ।
जिससे होगी स्त्री की पहचान।।

Ku.Priyanka Janghel
M.A. English
1st Sem.

The Only Way is to Keep Moving on ....

Keep moving on
Nature has made you so strong
Time is always running on
so you also keep moving on
When the prosperity has gone
The only way is to keep moving on
Don't wait for down
It will come on its own
You just have to keep moving on
Everything is changing around
You too need to keep moving on.

Value of Time

Ku. Pooja Balraj
B.Sc. - III year

To know the Value of year,
Ask the boy who failed in the exam.

To know the Value of month,
Ask the month who has delivered a premature baby.

To know the value of week,
Ask the journalist who has to wonder around here for a week.

To know the value of hours,
Ask that person who waits to meet each other.

To know the value of minutes,
Ask the person who has missed the train.

To know the value of seconds,
Ask the person who has escaped a major accident.

To know the value of milisecond,
Ask the person who missed the olympic gold.

The know the value of time ask those tsumani victims who could have been saved but owing to death of time they couldn't.

Who Knows

Shubham Kumar
M.A. English, 1st Sem.

What life wants, who knows ...
Days are passing by as sand from fist, But what life wants, who knows ...
In a labyrinth of paths, where mind commands over, where life wants to go, who knows...
Deep inside, lots of ups & down are occuriing,
Some people say choose this, some says choose that ...
But what life wants to choose, who knows ...
Some people say this will be better while some says that,
But what will be better, who knows ...
Meanwhile a voice comes from inner soul...
Which says that, an angel will come and solve every complications of yours
But in real he comes or not, who knows...
Lots of dreams I come over my eyes
When they will become true, Who knows
Life has become a puppet, when will have a command, who knows...
Where one wants to go who knows....
What life wants, who knows...

न दौड़ना है, न रुकना है, बस चलते जाना है,
लक्ष्य को पाने का यही एक तरीका है ।

साधना

डागेश्वरी कुम्हार
बी.एस.सी. अंतिम वर्ष (बॉयो)

बहुत समय पहले की बात है एक जंगल में नदी के किनारे एक साधु की कुटिया थी। एक दिन साधु ने देखा की उनकी कुटिया के सामने वाले नदी में एक सेब तैरता हुआ आ रहा है।

साधु ने सेब को नदी से निकाला और अपनी कुटिया में ले आए । महात्मा सेब को खाने ही वाले थे की तभी उनके अंतरमन से आवाज आई- ''क्या यह तेरी सम्पत्ति है ? यदि तुमने इसे अपने परिश्रम से पैदा नही किया है तो क्या इस सेब पर तुम्हारा अधिकार है ?''

अपने अंतर्मन कि आवाज सुन साधु को आभास हुआ कि उसे इस फल को रखने और खाने का कोई अधिकार नही हैं । इतना सोचकर साधु असली स्वामी की खोज में निकल पड़े। थोड़ी दूर जाने पर साधु को एक बाग दिखाई दिया उन्होंने बाग के स्वामी से जाकर कहा - ''आपके पेड़ से यह सेब गिरकर नदी में बहते-बहते मेरी कुटिया तक आ गया था, इसलिए मैं आपकी सम्पत्ति लौटाने आया हूँ।'' उन्होंने एक छोटे से सेब के लिए इतनी लम्बी यात्रा का कारण साधु से पूछा और कहा ''महात्मा, मै तो इस बाग का रखवाला मात्र हूँ । '' बाग के रखवाले की बात सुनकर साधु महात्मा सेब को देने रानी के पास पहुँचे रानी को जब साधु के सेब को यहाँ तक पहूँचाने के लिए लम्बी यात्रा की बात पता चली तो वह बहुत आ□चर्यचकित हुई। उन्होंने एक छोटे से सेब के लिए इतनी लम्बी यात्रा का कारण साधु से पूछा । साधु बोले - ''महारानी साहिबा ! यह यात्रा मैंने सेब के लिए नही बल्कि अपने जमीर के लिए की है। यदि मेरा जमीर भ्रष्ट हो जाता तो मेरी जीवन भर की तपस्या नष्ट हो जाती। साधु की ईमानदारी से महारानी बड़ी प्रसन्न हुई और उन्होंने साधु महात्मा को राजगुरू की उपाधि से सम्मानित कर उन्हें अपने राज घराने में रहने का निमंत्रण दिया।''

''तो दोस्तों हमें इस कहानी से यही शिक्षा मिलती है कि हमें हर परिस्थिति में ईमानदार रहना चाहिए क्योंकि ईमानदार व्यक्ति हमेशा सम्मान पाता है।''

बेटी एक पिता की शान

कु. अंजुलता मिरी
बी.एस.सी. अंतिम वर्ष (बॉयो)

मै हूँ पापा की गुड़िया
जिसे उन्होने बहुत सम्भाल कर है रखा।

कभी अभिमान तो कभी स्वाभिमान हूँ
मै तो अपने पापा की शान हूँ।

मुझे तो भगवान नजर आते है
अपने पापा में।

प्यार से भरा हुआ वो समंदर है पिता
जिसके दिल में नफरत के लिए जगह ही
नही होती।

सख्त राहों में भी ...
आसान सफर लगता है
ये मेरे पिता के दिये संस्कारो का असर है।

आहिस्ता चल, ऐ जिन्दगी।
अभी कर्ज चुकाना बाकी है
कुछ दर्द मिटाना बाकी है
कुछ फर्ज निभाना बाकी है।

जीवन संघर्ष

कु. टीनू वर्मा
बी.एस.सी. अंतिम वर्ष (बॉयो)

हमारा जीवन संघर्षमय होता है संघर्ष के बिना जीवन में कुछ, नहीं प्राप्त होता । हमें जीवन में कठोर परिश्रम करना चाहिए। परिश्रम से ही जीवन में आगे बढ़ा जा सकता है।

जीवन में अनेक कठिनाईयाँ आती है उन कठिनाईयो को देखकर कभी निराश नहीं होना चाहिए बल्कि उन्ही कठिनाईयों से प्रेरणा लेके और अधिक परिश्रम करना चाहिए।

कोई भी काम असंभव नहीं होता है Impossible खुद ही कहता है "I am Possible" ये सब परिश्रम से ही Possible होता है।

''परिश्रम ही सफलता की कुंजी है''। जिस प्रकार सोना आग में जितना तपता है वह उतना ही अधिक निखरता है उसमें उतनी ही चमक आती है ठीक उसी प्रकार मनुष्य का शरीर होता है जितना उसको परिश्रम कराया जाये वह उतना ही खूबसूरत बनता है।

इसका जीता जागता उदाहरण ''हिमा दास'' है जिसने Running के क्षेत्र में 1 महिने में 5 बार स्वर्ण पदक पाया है और 01 महिने में 3 बार विश्वसुन्दरी बनी।

हिन्दी में बिंदी

हिमेश कुर्रे
बी.एस.सी. द्वितीय वर्ष (बॉयो)

कहा जाता है कि बिंदी, हिंदी की जान है। यह पूरी तरह सच है। 'परसो' और 'परसों' के अर्थ में जमीन, आसमान का अंतर केवल एक बिंदी की वजह से है। कुछ परोसने के लिए कहा जाएगा, परसो। और आने वाले कल के बाद या बीते कल के पहले के दिन को कहा जाएगा, परसों। इसी तरह बहनें का बहुवचन होगा बहनें (मेरी बहनें) लेकिन बह जाने के संदर्भ में कहा जाएगा बहने (बहने दो) । अनुस्वार (बिंदी) का उच्चारण बोलने में तो स्वाभाविक रूप से हो जाता है लेकिन लिखने में ध्यान नहीं रहता या फिर दुविधा होती है। जैसे - तीनो लिखें या तीनों ! तो जवाब यह है कि जब हम चारों, आठों, दसों लिखते और बोलते हैं, तो तीनों ही सही होगा। इसी तरह अनुस्वार वाले कुछ अन्य शब्द हैं - क्यों, इन्हें, तुम्हीं, मैंने, नहीं, पोंछा, मेंढक, भौंरा में, परछाई, ईंट। ध्यान रहे जब सम्बोधन किया जागा, तो बिंदी नहीं लगेगी। जैसे - मेरे प्यारे भाइयो और बहनो, प्रिय पाठको, सुनो मेरे दोस्तो, आदरणीय गुरूओ ...।

भारत सरकार की योजना – ''महिला शक्ति केन्द्र''

डॉ. संजय कुमार तिवारी
सहायक प्राध्यापक-राजनीति विज्ञान विभाग

'महिला सशक्तिकरण के लिए बढ़ाया गया कदम'

बजट सत्र 2017-18 के प्रस्तुतीकरण भाषण में भारत सरकार के वित्त मंत्री ने ''कौशल विकास रोजगार, डिजिटल साक्षरता, स्वास्थ्य और पोषण के साथ-साथ ग्रामीण महिलाओं को सशक्त बनाने के लिए'' वन स्टाप अभिसरण सेवाएँ प्रदान करने हेतु महिला शक्ति केन्द्र की स्थापना करते करने की घोषणा की। इस योजना के तहत ग्रामीण महिलाओं को सामुदायिक भागीदारी के माध्यम से उन्हें सशक्त बनाये जाने की बात है, ताकि वे अपनी पूरी क्षमता का उपयोग कर सके। यह योजना महिला और बाल विकास मंत्रालय के संरक्षण में लागू की गई है।

यह योजना 2017-18 से 2019-20 की अवधि के लिए महिलाओं के संरक्षण और सशक्तिकरण के लिए ''अम्ब्रेला स्कीम मिशन' के अंतर्गत कार्यान्वित की जायेगी। इस योजना में केन्द सरकार ने प्रधानमंत्री महिला शक्ति केन्द्र की स्थापना के लिए 3636.85 करोड़ रूपये की वित्तीय सहायता का प्रावधान 2017-18 से 2019-20 हेतु किया है। इस योजना में केन्द्र सरकार राष्ट्रीय स्तर पर, राज्य स्तर पर और जिला स्तर पर एक Ore Common Task Force के गठन की बात कही है। यह Task force योजना Reviewing & Monitoring में मदद करेगा। साथ ही खर्च की देखरेख को भी सुनिश्चित करेगा।

योजना का उद्देश्य - इस योजना का मुख्य उद्देश्य पूरे देश की महिलाओं की देखभाल, संरक्षण और विकास में वृद्धि करना है। इस योजना के तहत -

1. बच्चों के लिंग अनुपात में सुधार।
2. नवजात बालिका शिशु के बचपन में सुधार
3. लड़की को शिक्षा प्रदान कर उन्हें सशक्त बनाये जाने का प्रयास किया जायेगा।

महिला शक्ति केन्द्र की प्रमुख जानकारी –

1. यह योजना विशेष रूप से महिलाओं की देखभाल, संरक्षण और विकास के लिए कल्याणकारी योजना है।
2. यह योजना बाल लिंग अनुपात को बेहतर बनाने में मदद करेगी। लड़की के अस्तित्व और संरक्षण को सुनिश्चित करेगी। उसकी शिक्षा को सुनिश्चित करेगी। साथ ही उनको उनकी पूरी क्षमता का एहसास कराकर उन्हें सशक्त बनाएगी।
3. केन्द्र सरकार देश के 115 सबसे पिछड़े जिलों में महिला शक्ति केन्द्र स्थापित करेगी। इन केन्द्रो पर सरकार कुछ सुविधाएँ प्रदान करेगी। जिससे महिलाओं के लिए कौशल विकास, रोजगार, डिजिटल साक्षरता, स्वास्थ्य और पोषण शामिल होगा।
4. सरकार इन दो वर्षो की अवधि के दौरान 150 अतिरिक्त जिलों में One Stop Center (OSC) की स्थापना करेगी जो महिला हेल्प लाइन से जुड़ी होगी और 24 घंटे महिलाओं को आपातकालीन और गैर आपातकालीन सुविधा

प्रदान करेगी। प्रधानमंत्री द्वारा महिला शक्ति केन्द्र को राष्ट्रीय और राज्य स्तर पर सहायता प्रदान की जायेगी। इसके अलावा यह योजना जिला सतर और ब्लाक स्तर पर भी सहायता प्रदान करेगी।

6. इस योजना को सफल बनाने के लिए एवं महिलाओं से संबंधित किसी भी मुद्दे में सरकार को तकनीकी सहायता देने के लिए कोई संस्था आगे आ सकती है।

7. केन्द्र सरकार लगभग 26000 लाभार्थियों को राहत और पुर्नवास प्रदान करने के लिए इस योजना के अतिरिक्त सुधार ग्रह भी स्थापित करेगी।

8. सरकार 190 से अधिक महिला छात्रावासों के माध्यम से काम करने वाली महिलाओं को अपना समर्थन प्रदान करेगी। इन छात्रवासों की स्थापना लगभग 19000 अतिरिक्त कार्यशील महिलाओं के रहने के लिए की गई है।

9. बेटी बचाओं, बेटी पढ़ाओं का दायरा भी बढ़ाया जायेगा इसके लिए 640 जिलों में मीडिया कैपेन चलाया जायेगा। सरकार के अलावा 405 से ज्यादा जिलों में अलग-अलग सेक्टर के हिसाब से इसका दायरा बढ़ाया जायेगा।

इन सभी योजनाओं को महिलाओं तक पहुँचाने के लिए लगभग 03 लाख से अधिक छात्र स्वयं सेवक कार्य रहे है। देश की आधी आबादी को देश के विकास में योगदान देने के अवसर प्रदान करने की दिशा में ये महत्वपूर्ण कदम है।

आत्मसम्मान

कु. मनाली यादव
बी.एस.सी. अंतिम वर्ष

आत्मसम्मान - आजकल लोग इस शब्द को लेकर बहुत ही भ्रमित होते है। ये सोचने वाली बात है आत्मसम्मान क्या है ? आत्म का मतलब - ''अपना'' सम्मान का मतलब - अर्थात् अपना सम्मान करना। जब हमें महसूस होगा कि हम जो कर रहे हैं, वह ठीक है तभी हम अपना सम्मान कर पाऐंगे। अब सवाल ये है कि अपना सम्मान करने के लिए हमें उस लायक बनना होगा कि हम अपना सम्मान कर सके। जैसे कि अगर किसी ने झूठ बोला है, तो उसे बोला जाये कि आपने ये झूठ बोला है तो उसे बुरा लगेगा, लेकिन अगर उसके अंदर आत्मसम्मान है, तो वह गलत को सही साबित करने की कोशिष नहीं करेगा। और अपनी लगती समझकर उसे सुधारने की कोशिष करेगा।

आप जो भी करते हैं अपनी खुशी के लिए करते है, दूसरों को दिखाने के लिए नहीं। जब तक आप जैसे है वैसे अपने आप को दूसरों के सामने प्रस्तुत करने की हिम्मत रखते हैं । तो आप अपना सम्मान करते हैं। अगर आप दूसरों को दिखाने के लिए ऐसे कपड़े पहनते है। जिसमें आप को अच्छा नहीं लगता है, असुविधाजनक लगता है, तो आप अपना सम्मान नहीं करते हैं, तब आप दुनिया से भी सम्मान की अपेक्षा नहीं कर सकते।

कई बार हम अहंकार को आत्मसम्मान समझ बैठते हैं। अहंकार से हमेशा दूर रहना चाहिए क्योंकि इससे रिश्ते खराब होते हैं आप अपने अंदर आत्मसम्मान बनाकर रखिये। जैसे कि जब तक आप खुद कोई काम कर सकते है। किसी की मदद ना ले, जब तक बहुत जरूरी न हो पैसे ना ले, सच बोलने की कोशिश करे। जो भी है, जितना भी है। उसमें खुश रहना चाहिए। जब आप खुद अपना सम्मान करेंगे और आपका विश्वास आपके चेहरे पर प्रतिबिंबित होगा। तब लोग भी आपका सम्मान करने पर मजबूर हो जायेंगे।

राज्य विधान मण्डल

रुपेन्द्र शर्मा
शोधार्थी - राजनीति विज्ञान

संविधान एक ऐसा दस्तावेज है जिसके माध्यम से देश की शासन व्यवस्था का संचालन किया जाता है। शासन व्यवस्थापिका कार्यपालिक एवं न्यायपालिका का समन्वय है। व्यवस्थापिका जो नीति निर्माण एवं योजना निर्माण का कार्य करती है। व्यवस्थापिका को ही संसद । विधानमण्डल कहा जाता है। केन्द्र के लिए कानून निर्माण संसद के माध्यम से किया जाता है। उसी प्रकार राज्य के लिए कानून निर्माण विधानमण्डल या विधायिका के द्वारा किया जाता हैं भारत के संविधान के अनुच्छेद 168 में राज्य विधानमण्डल के गठन को बताया है, जिसमें बताया गया है राज्यों में वियान मण्डल दो सदनीय था एकसदनीय दोनों में से कोई एक हो सकता है। यदि विधान मण्डल दो सदनीय है तो - राज्यपाल, विधानसभा एवं विधान परिषद से मिलकर विधानमण्डल और यदि एक सदनीय है तो राज्यपाल एवं विधानसभा से मिलकर विधानमण्डल का गठन किया जा सकता है।

संविधान के अनुच्छेद 169 में बताया गया है कि विधान परिषद का सृजन एवं समाप्ति का अधिकार संसद को है जो विधान सभा बहुमत के आधार पर मांग पर किया जाता है।

विधानसभा – भारत के संविधान के अनुच्छेद 170 में राज्य विधानसभा को बताया गया है। इसे प्रथम सदन, निम्न सदन, जनका का सदन, प्रत्यक्ष सदन भी कहा जाता है। अनुच्छेद 170(3) में उल्लेख किया गया है कि विधानसभा के सीटों का निर्धारण प्रत्येक 10 वर्ष में किया जायेगा, परन्तु 95 संविधान संशोधन अधिनियम 2009-10 के तहत 206 तक सीटो के किसी भी प्रकार से परिवर्तन नहीं किया जायेगा। विधानसभा का निर्वाचन वयस्क मताधिकार के आधार पर प्रत्यक्ष रूप से किया जाता है। अभवि 18 वर्ष से अधिक आयु वर्ग के मतदाता के द्वारा मतदान किया जाता है। 61 वां संविधान संशोधन 1989 में मतदान करने के लिए मतदाता का उम्र 21 वर्ष से घटाकर 18 वर्ष कर दिया गया है। विधानसभा का सीट 500 अधिकतम एवं नयूनतम 60 सीट से कम नही हो सकता है लेकिन अपवादस्वरूप, गोवा, पाण्डुचेरी, सिक्किम में 60 सीट से कम है। सीटो का निर्धारण राज्य की जनसंख्या की आधार पर किया जाता है। विधानसभा सदस्यों का कार्यकाल सामान्यत 05 वर्ष का होता है, लेकिन संकटकालीन (अनु. 352) के तहत विधानसभा का कार्यकाल एक वर्ष के लिए बढ़ाया जाता सकता है। अनुच्छेद 89 में विधानसभा के लिए एक अध्यक्ष एवं उपाध्यक्ष का उल्लेख किया गया है। अध्यक्ष एवं उपाध्यक्ष का निर्वाचन विधान सभा सदस्यों में से ही किया जाता है।

विधान परिषद - संविधान के अनुच्छेद 171 में राज्यविधान परिषद को स्पष्ट किया गया है। जिसे द्वितीय सदन, उच्चसदन, स्थायी सदन कहा जाता है। विधान परिषद का अधिकतम सीट कुल विधानसभा का 1/3 एवं न्यूनतम सीट 40 का उल्लेख किया गया है। विधान परिषद मं 5/6 सदस्यों का निर्वाचन एवं 1/6 सदस्यों का मनोनयन राज्यपाल के द्वारा साहित्य समाजसेवा, शिक्षा, खेल, मनोरंजन आदि से किया जाता है। विधान परिषद सदस्यों का कार्यकाल 6 वर्ष का होता है तथा प्रत्येक 2 वर्षो में 1/3 सदस्य सेवा निवृत्त हो जाते है। संविधान के अनुच्छेद 93 में विधानपरिषद के पदाधिकारियों को बताया गया है। जिनका चुनाव विधान परिषद सदस्यों से ही किया जाता है।

प्लास्टिक : खतरे की घंटी

रितेश गुप्ता
एम.ए. भूगोल

1. **प्लास्टिक** - प्लास्टिक आज भारत देश की बड़ी समस्या है। भारत में लगभग 75 प्रतिशत से भी अधिक प्लास्टिक का उपयोग किया जाता है, ऐसा इसलिए होता है, क्योंकि यहाँ की जनता में से 55 प्रतिशत लोग प्लास्टिक से हानि के बारे में नहीं जानते और इस्तेमाल करते हैं और 45 प्रतिशत जनता दुष्प्रभाव को जानते हुए भी प्लास्टिक का इस्तेमाल करते हैं।

2. **प्लास्टिक से हानि** - प्लास्टिक पर अभी ध्यान नही दिया गया, तो कुछ वर्षो में यह एक गंभीर समस्या हो जायेगी, क्योंकि प्लास्टिक न तो सड़ता है, न गलता है और न ही रि-साइकिल होता है, और यह प्लास्टिक समुद्र, नदी आदि में फेंक दिया जाता है, तथा मिट्टी के अंदर दबा दिया जाता है, जिससे समुद्र नदी आदि में ज्यादा प्लास्टिक पाये जाते है, जिसके कारण इसमें वास करने वाले जंतुओं के लिए ऑक्सीजन की मात्रा घट जाती है। इस कारण उन पर बुरा प्रभाव पड़ता है और कुछ मृत भी हो जाती हैं। मिट्टी में प्लास्टिक दबने से उर्वरा शक्ति कम हो जाती है।

3. **उपयोग क्या करना चाहिए** – हमें मालूम है कि मनुष्य और प्लास्टिक में धनिष्ठ संबंध है, जिस कारण से प्लास्टिक को पूर्णत: समाप्त या बंद नही किया जा सकता, लेकिन इसके उपयोग में कमी लायी जा सकती हैं। जैसे प्लास्टिक पन्नी की जगह पर थैला तथा कैरी बैग, डिस्पोजल की जगह मिट्टी के कप और ये तभी संभव होगा, जब जनता जागरूक होगी। ये किसी एक के करने से नही होने वाला, इसमें सभी के हाथ बढ़ाना होगा, और भारत को प्लास्टिक मुक्त बनाना होगा।

अनमोल वचन

अमित कुमार नेताम
एम.ए. समाजशास्त्र, तृतीय सेमेस्टर

1. गंभीर समस्याओं का आधी रात में समाधान करने की कोशिश न करें। थोड़ा धैर्य से काम लें। - फिलिफ डिक
2. मौन एक ऐसा तर्क है, जिसका खंडन कर पाना बेहद दुष्कर है। - जॉश बिलिंग्स
3. अगर हम अपने सामर्थ्यानुसार कर्म करें, तो हम अपने आपको अंचभित कर डालेंगे। - थामस एडिसन
4. अपने उद्देश्य महान रखे, चाहें इसके लिए काँटो भरी डगर पर ही क्यों न चलना पड़े। - सुसैन लोंगएकर
5. महत्व इसका नहीं है कि आप कितने अच्छे है। महत्व इस बात का है कि आप कितना अच्छा बनना चाहते है।
   - पॉल आर्डेन
6. यकीन मानिए कि मानवता की दिशा में उठाया गया प्रत्येक कदम आपकी चिंताओं को कम करने में मील का पत्थर साबित होगा।
   - श्री सुदर्शनाचार्य जी
7. अंधिकांश सफल व्यक्ति वह है जो बोलते कम और सुनते ज्यादा है। - एम बारूच
8. प्रत्येक व्यक्ति के लिए यह याद रखना बेहतर होगा कि सभी सफल व्यवसाय नैतिकता और ईमानदारी की नींव पर आधारित होते हैं।
   - हैनरी वार्ड बीचर
9. यकीन मानिए कि हमारी अधिकतर बाधाएं पिघल जाएंगी, उनके सामने दुबकने के बजाए हम उनसे निडरता पूर्वक निपटने का मानस बनाएं।
   - स्वेट मार्डेन
10. जीवन में रूकावट का कारण बनती है बुरी आदतें। सफलता पाने के लिए जितना हो सके बुरी आदतों से बचें।
    - अज्ञात

महिला सशक्तिकरण

डॉ. श्रीमती माया यादव
सहा. प्राध्यापक - राजनीतिशास्त्र

मनुस्मृति में कहा गया है :- यत्र नार्यस्तु पूज्यंते रमंते तत्र देवता ।
यत्रेतास्तु न पूज्यंते सर्वास्तत्रापुला क्रिया।।

अर्थात् जहाँ महिलाओं की पूजा की जाती है वहाँ देवता निवास करते हैं, जहाँ महिलाओं का तिरस्कार होता है, वहाँ किये गये कार्यो का फल नहीं मिलता है।

मनुस्मृति लोक यह सिद्ध कर रहा है कि महिलाओं की स्थिति उस युग में भी अच्छी नहीं थी इसलिए यह कहने की आवश्यकता पड़ी।

आज विश्व महिला सशक्तिकरण का मुद्दा हार ओर छाया हुआ है। पिछले वर्शो में एवं वर्तमान में महिलाओं के साथ, बच्चियों के साथ बढ़ती दुर्घटनाओं ने इस विशय पर गंभीर चिन्तन हेतु प्रेरित किया है।

वास्तव में महिला सशक्तिकरण है, क्या, इसका वास्तविक अर्थ क्या है, क्या केवल महिलाओं को राजनीति में आरक्षरण देना या नौकरी में आरक्षण देना या रेलवे में कुछ डिब्बे महिलाओं को देना महिला सशक्तिकरण है? ये मात्र कुछ कदम मात्र है।

महिला तभी सशक्त माना जायेगी जब वह मानसिक, शारीरिक एवं आर्थिक रूप से मजबूत हो। क्योंकि कई बार यह देखा गया है कि उच्च शिक्षित महिला भी हिंसा व प्रताड़ना का शिकार होती है।

कहने वाले यह कह सकते है कि नायों की लंबी सूची है, जिन महिलाओं ने भारत ही नहीं अपितु पूरे विश्व में अपना परचम लहराया है जैसे- इंदिरा गांधी, इंदिरा नूयी, सायना नेहवाल, सानिया मिर्जा, पी.टी. उशा, चंदा कोचर, कल्पना चावला, आई.ए.एस. दुर्गा शक्ति नागपाल, आई.पी.एस. किरण बेदी इन नारियों ने भारत ही नहीं पूरे विश्व में इनके कार्यो को सराहा है। वैदिक युग में भी गार्गी मैत्रेयी, घोशा अपाला जैसी महिलाओं थी जो यज्ञ व शास्त्रार्थ में भाग लेती थी। मध्यकाल में रजिया सुल्तान को हम नारी शक्ति की प्रतिनिधि मान सकते हैं।

जिस तरह नदिया की धारा, आने वाले किसी भी रूकावट को उखाड़ते हुए अपनी राह बना लेती है, उसी तरह यदि महिला प्रतिभाशाली है, तो अपना स्थान बना ही लेती है। हर युग में प्रतिभाशाली महिलाओं ने अपने वजूद व अस्तित्व को मजबूती के समानांतर धाराओं की तरह कायम किया है।

क्या महिलाओं में आत्मबल की कमी है ? या हमारा परिवेश इतना स्वच्छ नहीं है, कि महिला आजादी से सांस ले सके ? या हमारा नैतिक पतन इस हद तक हो चुका है, कि स्त्री मांस का पुतला नजर आती ह, जो कि देह लिप्सा शांत करने का साधन मात्र है।

क्या कारण है, नैतिक पतन का ? पारिवारिक ढांचे में बिखराव भी एक समस्या ह, जो महिलाओं के सशक्त मजबूत होने में रूकावट पैदा करती है। संयुक्त परिवार की आवधारणा से सामालिकता का विकास होता है। महिलाओं की सोच मजबूत थी। आज एकल परिवार ने बच्चों को ''क्वालिटी टाईप'' की जगह वीडियो गेम, टी.व्ही. कम्प्यूटर के हवाले कर दिया गया है। ऐसे बच्चों से समाज व युवा वर्ग का किस तरह निर्माण होगा ?

एक हिंसक युवा, मशीनी सोच के साथ समाज में महिलाओं को सुरक्षा दे पायेगा ? हमारी संस्कृति, हमारी रूढ़ियां, परम्परायें आज भी लड़कियों के साथ बदस्तूर भेदभाव कर रही है। उनके मस्तिश्क में यह बात जन्म से बिठा दी जाती है, कि उसका स्वतंत्र वजूद नहीं है।

सबसे बड़ी चुनौती यह है कि आज महिला भयमुक्त नहीं है। महिलाओं को सशक्त करने के लिये भयमुक्त वाले, दहशत फैलाने वाले कचरे को अर्थात् असामाजिक तत्वों को खत्म करना होगा।

कानून कड़े करना, आरक्षण देना ठीक उसी तरह है, जैसे बीमारी में एंटीबायोटिक दवा। किन्तु जड़ से बीमारी दूर करने के लिये समाज में ही स्वच्छ वातावरण व स्वस्थ माहौल का निर्माण करना होगा।

आज आवश्यकता है कि नारी आर्थिक रूप से नहीं वरन् मानसिक रूप से मजबूत हो। शिक्षा व जागरूकता आज की महती आवश्यकता है। महिला सशक्तिकरण हेतु साझा ईमानदारी की आवश्यकता है।

एक कोशिश घर, परिवार, समाज से शुरू करें- अपनी सशक्त होगी, हम केवल कानून के द्वारा ही व्यवस्था नहीं बना सकते वरन् हम सबको संगठित होकर, साझा, ईमानदार प्रयास करना होगा तभी हम स्वर्ग को धरा पर ले आयेंगे।

''हे गरिमायी पावन शक्ति
अलौकिक, सौन्दर्यमयी सतरूपा
जीतना है मंजिल खुद को
उसके काबिल कर,
हिम्मत हौसला और बुलंदी,
साथ में अपने शामिल कर''।।

सुखी व्यक्ति परिस्थितियों के अनुसार ढला हुआ नही होता है बल्कि उसके जीवन जीने का दृष्टिकोण और नजरिया अलग होता है।

- ह्यूग डाउन्स

छात्रसंघ 2019–20

1.	अध्यक्ष –	(महिला हेतु आरक्षित)	कु. अल्का तिर्की	69.00%
2.	उपाध्यक्ष –		कु. सविता कैवर्त्य	67.44%
3.	सचिव –		संजय रात्रे	79.00%
4.	सह सचिव –		प्रखर शर्मा	77.00%
1.	बी.ए. भाग–एक		लक्ष्मीकांत	90.20%
2.	बी.ए. भाग–दो		चन्द्रमणी पटेल	68.83%
3.	बी.ए. भाग–तीन		फिरोज कुमार बंजारे	67.00%
4.	बी.कॉम. भाग–एक		आदित्य अग्रवाल	95.21%
5.	बी.कॉम. भाग– दो	(महिला हेतु आरक्षित)	कु. श्रद्धा शर्मा	68.83%
6.	बी.कॉम. भाग– तीन	(महिला हेतु आरक्षित)	मु. शिवानी करड़ा	74.00%
7.	बी.बी.ए. भाग– एक		आयश खान	94.00%
8.	बी.बी.ए. भाग– दो		कु. सोमा प्रधान	71.23%
9.	बी.बी.ए. भाग– तीन		कु. मेघा थवाईत	67.38%
10.	एम.कॉम. प्रथम सेम.		कु. अर्चना साहू	66.27%
11.	एम.कॉम. तृतीय सेम.		कु. प्रियंका रानी टोप्पो	68.90%
12.	एम.ए. समाजशास्त्र प्रथम सेम.	(महिला हेतु आरक्षित)	कु. सोनल पाण्डेय	65.50%
13.	एम.ए. समाजशास्त्र तृतीय सेम.	(महिला हेतु आरक्षित)	कु. रोशनी श्रीवास	66.75%
14.	एम.ए. अर्थशास्त्र प्रथम सेम.		कु. लक्ष्मीन	63.61%
15.	एम.ए. अर्थशास्त्र तृतीय सेम.		रामप्रकाश बरगाह	68.30%
16.	एम.ए. भूगोल प्रथम सेम.	(महिला हेतु आरक्षित)	कु. प्रीति	63.22%
17.	एम.ए. भूगोल तृतीय सेम.		अजय कुमार ध्रुव	65.90%
18.	एम.ए. राजनीतिशास्त्र प्रथम सेम.		प्रखर मरावी	65.66%
19.	एम.ए. राजनीतिशास्त्र तृतीय सेम.		नोहर प्रसाद	58.25%
20.	एम.ए. इतिहास प्रथम सेम.		खगेन्द्रनाथ श्रीवास	60.88%
21.	एम.ए. इतिहास तृतीय सेम.		डेरहू राम	70.12%
22.	एम.ए. हिन्दी साहित्य प्रथम सेम.	(महिला हेतु आरक्षित)	कु. प्रतिभा कौशिक	59.77%
23.	एम.ए. हिन्दी साहित्य तृतीय सेम.		गीतेश निर्मलकर	68.50%
24.	एम.ए. अंग्रेजी साहित्य प्रथम सेम.	(महिला हेतु आरक्षित)	कु. प्रियंका जंघेल	62.05%
25.	एम.ए. अंग्रेजी साहित्य तृतीय सेम.		कु. योगिता कश्यप	58.25%
26.	बी.एस–सी. भाग–एक (जीवविज्ञान)		कु. गरिमा चौहान	85.00%
27.	बी.एस–सी. भाग–दो (जीवविज्ञान)		कु. यामिनी विश्वकर्मा	69.50%
28.	बी.एस–सी. भाग–तीन (जीवविज्ञान)	(महिला हेतु आरक्षित)	कु. निधि दुबे	73.83%
29.	बी.एस–सी. भाग–एक (गणित)		संदीप कुमार	91.00%
30.	बी.एस–सी. भाग–दो (गणित)		अमित कुमार साहू	76.16%
31.	बी.एस–सी. भाग–तीन (गणित)	(महिला हेतु आरक्षित)	कु. कृतिका रजक	74.83%
32.	पी.जी.डी.सी.ए.	(महिला हेतु आरक्षित)	कु. किरण शर्मा	69.27%

महाविद्यालय प्रावीण्य सूची 2018-19

कु. यामिनी विश्वकर्मा
बी.एस.सी. भाग-1
(बायोलाजी) 69.50%

प्रखर शर्मा
बी.एस.सी. भाग-1
(गणित) 77%

संजय रात्रे
बी.एस.सी. भाग-2
(बायोलाजी) 79.00%

मनीष कुकरेजा
बी.एस.सी. भाग-2
(गणित) 75.66%

दीक्षा पाण्डेय
एम.ए. अंग्रेजी साहित्य
(द्वितीय सेमेस्टर) 67%

नितेश गढ़ेवाल
एम.ए. अंग्रेजी साहित्य
(चतुर्थ सेमेस्टर) 67.43%

रोशन कुमार
एम.ए. हिन्दी
(द्वितीय सेमेस्टर) 76.20%

नवीन कुमार
एम.ए. हिन्दी साहित्य
(चतुर्थ सेमेस्टर) 68.93%

डेरहू राम
एम.ए. इतिहास
(द्वितीय सेमेस्टर) 70.12%

मनमोहन कोसले
एम.ए. इतिहास
(चतुर्थ सेमेस्टर) 73.87%

नोहर प्रसाद
एम.ए. राजनीति विज्ञान
(द्वितीय सेमेस्टर) 58.20%

प्रवीण कुमार शर्मा
एम.ए. राजनीति विज्ञान
(चतुर्थ सेमेस्टर) 71%

नंदिनी गढ़ेवाल
एम.ए. अर्थशास्त्र
(द्वितीय सेमेस्टर) 72%

माधुरी परस्ते
एम.ए. अर्थशास्त्र
(चतुर्थ सेमेस्टर) 74%

कु. पूजा गायकवाड़
एम.ए. समाजशास्त्र
(द्वितीय सेमेस्टर) 71.25%

कु. ऋतु
एम.ए. समाजशास्त्र
(चतुर्थ सेमेस्टर) 64.37%

सुनील लोधी
एम.ए. भूगोल
(द्वितीय सेमेस्टर) 68.2%

अजय ध्रुव
एम.ए. भूगोल
(चतुर्थ सेमेस्टर) 68%

कु. प्रियंका टोप्पो
एम.काम.(द्वितीय सेमेस्टर)
75.6%

कु. माधुरी कुकरेजा
एम.काम.(चतुर्थ सेमेस्टर)
71.55%

कु. खुशबू कौशिक
पी.जी.डी.सी.ए.
74.37%

एन.एस.एस. गतिविधियाँ

दैनिक भास्कर बिलासपुर

कार्यक्रम • अटल यूनिवर्सिटी की रासेयो इकाई ने विश्व एड्स दिवस पर किया संगोष्ठी का आयोजन

नुक्कड़-नाटक से छात्रों ने किया जागरूक जेपी वर्मा ने हासिल किया प्रथम स्थान

नुक्कड़ नाटक से छात्रों ने रूढ़िवाद व नारी शोषण के विरुद्ध मांगी आजादी

बिलासपुर | अटल बिहारी वाजपेई विश्वविद्यालय बिलासपुर एवं यूनिसेफ के सयुंक्त तत्वावधान चल रहे तीन दिवसीय नुक्कड़ नाटक प्रशिक्षण व कार्यशाला के दूसरे दिन छात्रों ने नाटक का मंचन किया। छात्रों ने नाटक के मंचन के माध्यम से रूढ़िवाद, आडंबर और समाज में व्याप्त नारी शोषण के विरुद्ध आजादी मांगी। कार्यशाला में मुंबई के राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त रंगकर्मी मंजुल भारद्वाज के द्वारा प्रशिक्षण दिया जा रहा। प्रशिक्षण के दौरान छात्रों ने नाटक तैयार कर टैगोर चौक, विश्वविद्यालय परिसर के साथ ही अन्य जगहों पर प्रस्तुति दी। नाट्य प्रतिभागियों ने अपने अभिनय कौशल एवं नाट्य कला से उपस्थित लोगों को सामाजिक चिंतन के लिए बाध्य किया। प्रशिक्षण के दौरान विश्वविद्यालय के कार्यक्रम समन्वयक डॉ. मनोज सिन्हा, जिला संघटक डॉ. संजय कुमार तिवारी एवं नुक्कड नाटक के प्रभारी डॉ. केके सिन्हा उपस्थित रहे। प्रशिक्षण में आशीष कुमार, जतिन, योगेश चंद्र, गायत्री, हेमंत कुमार, किरण यादव, प्रियंका, काजल शर्मा, पारुल, मानसी, महेंद्र चंद्राकर, कविता, सुहानी शर्मा, मुस्कान, ज्योति, जितेंद्र, निशा यादव, अभिजीत, रवींद्र समसुद्दीन अंसारी, रिजु साहू, रबिन प्रधान, सभ्य श्रीवास आदि शामिल हैं।

छात्र–संघ पदाधिकारी सत्र 2019–20

अध्यक्ष
अल्का तिर्की

उपाध्यक्ष
सविता कैवर्त्य

सचिव
संजय रत्रे

सहसचिव
प्रखर शर्मा

शपथग्रहण समारोह

विविध गतिविधियाँ

महाविद्यालयीन गतिविधियॉ

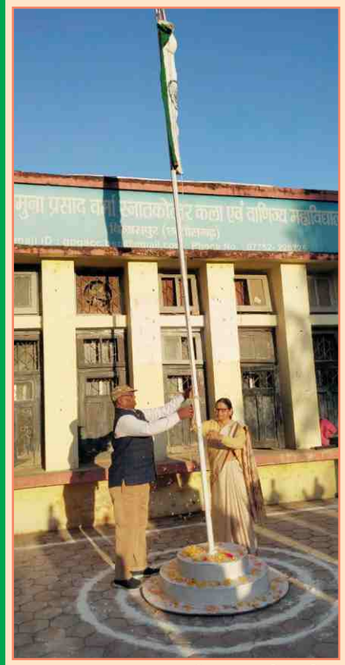

प्राचार्या डॉ. श्रीमती ज्योतिरानी सिंह द्वारा स्वाधीनता दिवस समारोह में ध्वजारोहण

आर.डी.सी. में चयनित राहुल नरूटी (राजपथ परेड नई दिल्ली)

विविध वेषभूषा प्रतियोगिता

यातायात जागरूकता कार्यक्रम

वाद-विवाद प्रतियोगिता

विभागीय गतिविधियाँ

शिक्षक अभिभावक सम्मेलन

स्वयं आनलाईन लर्निंग पोर्टल विषय पर कार्यशाला

अनुसंधान की पद्धतियाँ - एक दिवसीय कार्यशाला

सात दिवसीय विशेष शिविर - राष्ट्रीय सेवा योजना

क्रीड़ा विभाग

राजेश साहू
बी.ए. भाग-2
वि.वि. स्तरीय क्रिकेट

कु. वीणा मरावी
पीजीडीसीए
वि.वि. स्तर हैण्डबाल

अंकित सिंह
एम.काम.
वि.वि.स्तर हैण्डबाल

कु. हेमलता नेताम
एम.ए.
वि.वि. स्तरीय हैण्डबाल

कु. पुष्पा आर्मो
एम.ए.
वि.वि. स्तरीय हैण्डबाल

विभागीय गतिविधियाँ

भूगोल विभाग द्वारा प्रायोगिक कार्यशाला

राजनीति विज्ञान विभाग द्वारा परियोजना कार्य - मतदाता जागरूकता कार्यक्रम

Equal Opportunity Cell

राजनीति विज्ञान छात्र परिषद 2019-20 कास गठन

इतिहास विभाग द्वारा आयोजित सेमिनार

शिक्षक अभिभावक बैठक - विज्ञान संकाय

अर्थशास्त्र विभाग द्वारा औद्योगिक क्षेत्र का भ्रमण

Alumni Meet 14th December 2019